नादसृष्टि

नादसृष्टि

योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव
दिल्ली - 2012

श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर
'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,
अशोक विहार–III, दिल्ली–110 052 (भारत)

प्रकाशक :

श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार–III,

दिल्ली–110 052 (भारत) फोन : 011–2730 1327

द्वितीय संस्करण : 2012

प्रति : 1000

मूल्य : ₹ 100/–

टाईप सेटिंग :

अक्षरज्योति महिला केन्द्र

काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार–III,

दिल्ली–110 052 (भारत) फोन : 011–2730 5199

मुद्रक :

प्रीतिका प्रिंटर्स

A21/27, नारायण इण्डस्ट्रीयल एरिया

दिल्ली–110 028 (भारत)

प्रस्तावना

'नादसृष्टि' भजन संग्रह सर्वप्रथम 1997 में – प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती के सुअवसर पर प्रकाशित हुआ था।

प.पू. गुरुजी की हमेशा यही भावना रही है कि साधना मार्ग पर आसानी से चलने के लिए, प्रभु को प्रार्थना करने की करामात प्राप्त हो-जीव को बल मिले, ऐसे शब्द या पंक्तियाँ भजनों में होनी चाहिएँ...

हम सभी ने कई बार अनुभव भी किया होगा कि साधना पथ पर आंतरिक रुपांतर के दौरान आती अनेक उलझनों -भीतर के द्वद्वों को भजन की पंक्तियाँ शांत कर देती हैं और उनका समाधान भी करा देती हैं। भजन की पंक्तियाँ सुनते ही हम अपने आपको हल्का महसूस करने लगते हैं।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती एवं प.पू. गुरुजी के 75वें प्राकट्योत्सव यानि– **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** के उपलक्ष्य में कई नए भजनों का समावेश करके **'नादसृष्टि'** की **द्वितीय आवृत्ति** को प्रकाशित करते हुए भगवान श्री स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरुपों के चरणों में यही प्रार्थना कि इन भजनों के मर्म को समझते हुए हम प्रगट प्रभु से संबंध दृढ़ कर लें...

योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव की जय हो! जय हो! जय हो!
राकेश शाह के प्रणामपूर्वक जय स्वामिनारायण!
3 फरवरी 2012, शुक्रवार

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ संख्या
	आरती	xiii
	दण्डवत करते हुए बोलने के श्लोक	xiii
	स्तुति श्लोक	xiv
	प्रार्थना	xvi
	थाल	xvii-xx
अ	1. अविनाशी आतम प्राण, सुन ले हृदय की पुकार	1
	2. अहो काकाश्रीना प्यारा लाडीला मुकुंद	1
	3. अक्षरधाम से गुरुजी पधारे	2
	4. अक्षराधिपति पूर्ण पुरूषोत्तम	3
	5. अपनेपन के शहंशाह	4
	6. अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में	6
आ	1. आज प्रगटे पूरण ब्रह्म रे, स्वामी सुखकारी!	7
	2. आ गया, अब समय, तेरी भक्ति अदा करने का	8
	3. आपकी भक्ति से जीवन, खुशियों से है भर गया	9
	4. आपकी दयालुता प्रभु, आपके करम	9
	5. आज सुनहरी मौका है, फिर हाथ न कल	10
	6. आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी	12
	7. आजे सोळ सोळ वरसोना वाणा वही गया	13
	8. आए थे हम मंदिर में दर्शन करने	14
	9. आगाज़ अलौकिक ऐसा है, फिर कल से नज़ारा क्या होगा	15
इ	1. इसी जनम में, हम पर भगवन् ऐसा	16
उ	1. उगती प्रभा से, कार्य प्रारंभ में	17
ए	1. एहसास काकाजी का अपनी रीति...	18
	2. एक गुरु का साथ हमको तीन	19
ॐ	1. ॐ नमो स्वामिनाराणाय	21

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ संख्या
क 1.	कमाल है, कमाल है ताड़देव तीर्थ कमाल है	22
2.	कर दो अर्पण ये तन मन प्रभु के लिए	22
3.	करुणानिधि, हे काकाजी हमें	23
4.	करुणा बहुत करी है, मेरे घनश्याम	24
5.	काका! गुरुहरि प्यारे काका	25
6.	काकाजी तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम	26
7.	काकाजी तो अब भी हैं यहीं	27
8.	काकाजी हमारे मस्त-मस्त	28
9.	काकाजी महाराज ने हमको, गुरुजी दे दिए	29
10.	काकाजी तुम्हें प्रणाम, काकाजी तुम्हें प्रणाम	30
11.	काकाजी के हैं सेवक हम, तेरा नाम हम करें रोशन	30
12.	काकाजी का जंगम मंदिर बन गए हैं जो	31
13.	काकाजी अब भी प्रगट ही हैं	32
14.	काकाना हृदय वसनारा, तारी करुणानो कांई पार नथी	33
15.	काका तेरी कुर्बानी, शब्दों में ना समाए	34
16.	काका तुम जो मुझे मिल गए, मुझको जीवन	35
17.	काका, पप्पा, स्वामी, अन्तर्यामी	36
18.	काकाजी को साक्षात् प्रगटाया है	37
19.	किया था नहीं प्रयास प्रभु के लिए मैंने	38
20.	काका रे काका रे, आज मिला मौका	39
21.	काकाजी और पप्पाजी, गुणातीत समाज के सर्जक हैं	40
ग 1.	गुणातीत जैसी है छबि इनकी	42
2.	गुणातीत की परंपरा की, तुम हो अजोड़ मिसाल	43
3.	गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो	44
4.	गुणातीत समाज के सृष्टा	45
5.	गुणातीत सी छवि कमाल, हैं चंचल नैन	47
6.	गुरुजी तुम्हें प्रणाम, गुरुजी तुम्हें प्रणाम	48
7.	गुरुजी धरती पे आए	49

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ संख्या
8.	गुरुजी के रुप में प्रभु हमने पाए	50
9.	गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है, मुक्तों	51
10.	गुरुदेव, मेरे मन में ज्ञान ज्योति जगा दो	53
11.	गुरुभक्ति यज्ञ आया, दिलों में हर्ष है छाया	54
12.	गुरुभक्ति यज्ञ मनाएं हम, पराभक्ति में	55
13.	गुरुवर मेरे, प्रभुवर मेरे, तुमको नमन	55
14.	गुणातीत गुरु का आसरा पाकर	56
15.	गुरुमां श्री हरिनो वास, गुरु स्वयं अविनाश	58
घ 1.	घनश्यामाय, नीलकंठाय, सहजानंदाय धीमहि	60
च 1.	चलो काका का कर लें पूजन रे, चलो गीतों का	63
छ 1.	छोड़ के स्वभाव मूर्ति बसाना	66
2.	छपैयामां प्रगट्या, श्री घनश्याम	67
ज 1.	जहां-जहां मैं जाता, काका गीत तुम्हारे गाता	69
2.	जब से सद्गुरु ज्ञान तेरा पा गये	69
3.	जन्मों तक साधन से न मिलते	70
4.	जय जय जय स्वामिनारायण का जग में गूंजे नारा	71
5.	जय-जय काकाश्री महिमा तेरी	73
6.	जय परब्रह्म, जय अक्षरब्रह्म, जय अक्षरमुक्त...	75
7.	जय जय स्वामिश्रीजी, जय जय योगीजी	77
8.	जीवन में आप आए, प्रभु का प्रकाश बन के	78
9.	जीव को हितैषी मिल गया	79
10.	जिसके दिल में प्रगट का बसेरा नहीं	80
11.	जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!	81
12.	जय हो, जय हो, जय हो, कृपानिधि घनश्यामराज की जय हो	82
झ 1.	झूला लो भक्तों झूला, झूला प्यार का	84
त 1.	तप ध्यान योग से प्रभु मिलेंगे, ऐसा मैंने सोचा था	85
2.	तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा	85
3.	तेरा रखवाला भगवान, तू है बड़ा भाग्यवान	86
4.	तेरी मूर्ति हो जीवन	87

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ संख्या
	5. तुझसे रखें न कोई मन की चोरी, अंतरायरहित हो जाएँ	88
	6. तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी	89
थ	1. थोड़ा-सा भी गुरुजी को जाना	91
द	1. दर्शन करूं सभी में तेरा, नाम तेरा न भूलें कभी	92
	2. दर्शन से एक बार, हो अंतर पर अधिकार	92
	3. दिल और दिमाग़ का, समन्वय कमाल हो	93
	4. देखो आयो रे, आयो रे, देखो आयो रे	94
ध	1. धन्य-धन्य काकाजी, कृपा क्या बरसाई	96
	2. धन्य-धन्य शरद्पूनम का दिन	97
	3. धन्यवाद, धन्यवाद, योगीबापा तुम्हें धन्यवाद	97
न	1. नवयुग का प्रणेता निराला	99
	2. निश्चिंतता मिली उस दिन से हमें	100
	3. निजात्मानं ब्रह्मरूपम्, निजात्मानं ब्रह्मरूपम्	101
	4. ना व्रत-दान कीता ना भक्ति, ना थी जगत से कोई विरक्ति	102
प	1. पप्पाजी के रूप में पुरुषोत्तम का दास है	104
	2. पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं	105
	3. प्रगटे गुरुजी वो शुभ दिन आया	106
	4. प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हो हम	107
	5. प्रभु मैं आया तेरे द्वार	108
	6. प्रभु न आते हैं, प्रभु न जाते हैं	109
फ	1. फागुन में आप हो प्रगटे, रंग श्रीजी का लगाने	111
	2. फैला दो प्रभुता की सौरभ यूं मेरे जीवन में	112
ब	1. ब्रह्म संबंध मिला, दिव्य कुनबा मिला	114
	2. बुशर्ट टेनिस कॉलर की और पैंट भी क्रीम कलर की	115
	3. बोलो सब मिल के बोलो, बोलो सब दिल से बोलो	116
म	1. मन का करें अमन, हम अपने मन का करें अमन	118
	2. मन-बुद्धि, चित्त को साधु से है जोड़ना	119
	3. मन इत-उत डोले, भरमाए	120

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ संख्या
4.	मन से लेने लड़ाई, हो जाओ तैयार, जीत जाना है	120
5.	मानव दा चोला मिलयाए संत दा संग भगतां	121
6.	मांगो-मांगो भगतजी आज	122
7.	मानकर काकाजी का वचन लाड़ले	123
8.	मानव रूप में है सारथी समर्थ मिला	124
9.	मिल के ख़ुशियाँ मनाओ-मनाओ	126
10.	मूर्ति गुणातीत तेरी हे काकाजी	127
11.	मूर्ति का आनंद अंतर में समाए ना, दिल में	128
12.	मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी	130
13.	मुझे तुमने काका, बहुत कुछ दिया है	131
14.	मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय	132
15.	मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है	133
16.	मेरे गुरुदेव अपने दास पर, इतना करम कर दो	134
17.	मेरे मन को मंदिर बना दो गुरु	135
18.	मौज में मूर्ति लुटाए, संबंध देते हैं श्रीजी का	136
19.	मन बिछाए राह में, खोल हृदय के द्वार	137
य 1.	ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है	138
2.	ये मूर्ति निराली मूर्ति	139
3.	ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की महाकल्याणकारी है	140
4.	योगी बापा को करोड़ों धन्यवाद, काकाजी हमें	141
5.	योगीजी की आस गुरुजी, काकाजी के ख़्वाब हो	142
6.	योगीजी की जान के मर्जी, आपने कदम उठाया	143
र 1.	रंगीली छबि का कहना क्या, निर्गुण मूर्ति का	145
ल 1.	ले के निर्दोष-निर्व्याज प्यार, भर के आँखों	146
व 1.	विनती सुन लो काका हमारे	147
2.	वो पहली बार का आनंद, मुझे लौटा दो	148
श 1.	शताब्दी आई है, ओहो, शताब्दी आई है काका दी	150
2.	शांति अनुपम, अलौकिक मजा	151
3.	शूरवीर सहृदयी बनें, सुहृद्‌भाव बढ़ाना है	152

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ संख्या

श्र

1. श्रीजी के धारक साहेबजी, भागीदार योगी के जसुभाई, ------- 153

स

1. सत्संग से भागे फिरते हो ---------------------------------- 154
2. सत्संग जो मिल गया है न्यारा ----------------------------- 154
3. संत मेरा है परदेसी, मुक्तों की भावन मूर्ति ----------------- 156
4. संबंध संत का पाया, मुक्तों का संग पाया ------------------ 157
5. सबसे पहले योगीजी को पहचाना ------------------------- 158
6. साधु से संबंध बिना मुक्ति का ---------------------------- 160
7. साधुता प्रगटा दो, मैत्री दृढ़ करा दो ----------------------- 161
8. सुख अक्षरधाम का यहीं पे पाइए ------------------------ 162
9. सुहृद् सभी का बनना है ---------------------------------- 162
10. स्वामिनारायण मंत्र है जीवंत------------------------------ 163
11. स्वामिनारायण भज हर घड़ी------------------------------ 164
12. स्वामिनारायण भज मन प्यारे --------------------------- 165
13. स्वामिनारायण जो भी सच्चे दिल से बोले ------------------ 166
14. स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण ... ------------ 167
15. स्वामिनारायण जो ध्यावे -------------------------------- 169
16. स्वर्गों से शानदार है, ताड़देव आपका--------------------- 170
17. स्वर्णजयंती, स्वर्णजयंती, स्वर्णजयंती---------------------- 171
18. साक्षात्कार की, हीरक जयंती, गुरुजी के अमृतपर्व ---------- 173
19. स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा------- 174
20. सबसे परे सर्वोपरि स्वामिनारायण का धाम है --------------- 175

ह

1. हमको चरणों में शरण दी, मेहरबानी आपकी --------------- 177
2. हम है बड़े किस्मत वाले, हमको मिले जो ------------------ 177
3. हर तरफ, हर जगह, हर मुक्त में है हाँ प्रभु का नूर --------- 178
4. हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे ------------------------ 179
5. हांभळो रे डोहा रे हांभळो जवानिया ----------------------- 180
6. हे भजनिक सुहृद् गुणातीत, तेरी मूर्ति धार के जीएं ---------- 181

क्र.सं.	भजन	पृष्ठ संख्या
7.	हे प्यारे गुरुवर, हे प्यारे काका	182
8.	हे भीगा रे, भीगा रे, भीगा रे, भीगा	183
9.	हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें	185
10.	हो आज मेरी आतम खुशियों में गावत भगवन्	186
11.	हो योगीजी की कृपा से, सोणे काकाजी का साथ है	187

प.पू. दीदी के भजन

1. उद्यम तेरा जीव में मेरे, प्रभु प्रगटाना है ---------------------------- 189
2. उत्तर की बहनों के लिए, काकाजी ने चुन लिया -------------------- 189
3. काकाजी के नाम, ला... ला... गुरुजी के नाम -------------------- 190
4. काकाजी की अनुपम रचना हो तुम --------------------------- 191
5. काकाजी की तो तू है पसंद ------------------------------- 192
6. जैसा तुमने जीवन जिया है --------------------------------- 193
7. तेरे तेजस्वी मुख पर, झलके मूर्ति की आभा---------------------- 194
8. दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी ---------------------------- 195
9. दिया काकाजी ने ये मानव का चोला ------------------------- 196
10. दीदी तुमने छोड़ा ज़माना -------------------------------- 197
11. दीदी से जिसका भी संबंध हुआ ---------------------------- 198
12. निःस्वार्थ तेरा प्यार ------------------------------------ 199
13. माँ की तरह हमें तू, रखे सीने से लगाए ---------------------- 200
14. सरल स्वभाव है जिनका ---------------------------------- 200
15. सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति -------------------------------- 201

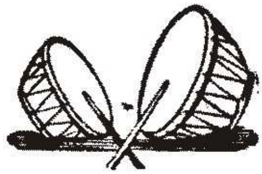

आरती

जय सद्‌गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,
सहजानंद दयालु ...(2), जय अक्षरधामी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

चरणसरोज तुम्हारे, वंदूँ कर जोरी, प्रभु वंदूँ कर जोरी...
चरन में शीश धरन से...(2), मिटती दुःख-होरी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

नारायण नरभ्राता, द्विजकुल तनधारी, प्रभु द्विजकुल तनधारी...
पामर पतित उबारे...(2), अगणित नर-नारी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

नित्य नित्य नौतम लीला, करते अविनाशी, प्रभु प्यारे अविनाशी...
अड़सठ तीरथ चरन में...(2), कोटि गया काशी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

पुरुषोत्तम प्रगट के, दर्शन जो भी करे, प्रभु दर्शन जो भी करे...
काल-करम से छूटे ...(2), कुटुंब सहित वो तरे...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

करुणानिधि ये तेरी करुणा रंग लाई, प्रभु करुणा रंग लाई...
मुक्तानंद न संशय ...(2), मुक्ति सुगम पाई ...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी...

जय सद्‌गुरु स्वामी, प्रभु! जय अंतर्यामी,
सहजानंद दयालु ...(2), जय अक्षरधामी...
जय जय सद्‌गुरु स्वामी... जय जय...

* * *

दंडवत् करते हुए बोलने के श्लोक

कृपा करो मुज पर प्रभु, सुखनिधि सहजानंद।
कीर्तन नित तेरा करुँ, बुद्धि देहु भगवंत।।1।।

अक्षर पुरुषोत्तम प्रगट भए, लिया मनुज अवतार।
अनेक जीव उद्धार हित, जन-जन के करतार।।2।।

स्तुति श्लोक

प्रकटे कौशल देश वेश बटु धर, तीर्थों में घूमे अनंत,
रामानंद मिले स्वधर्म स्थापा, यज्ञादि कीन्हे महंत।
भव्य धाम रचे, रहे गढ़पुरे, दो देश गद्दी करी,
अंतर्धान हुए नहीं प्रगट हैं, 'गुणातीत' से **'हरि'**।। 1।।

जो उत्पत्ति एवं स्थिति लय करे, वेदों स्तुति उच्चरे,
जाके रोमसुच्छिद्र में अणुसम, ब्रह्मांड कोटि फिरें।
माया काल रवि शशि सुरगण, आज्ञा न लोपे क्षण,
ऐसे अक्षरधाम के अधिपति, **'श्री स्वामिनारायण'**।। 2।।

आए अक्षरधाम से अवनि पे, ऐश्वर्य-मुक्तों सही,
सोहे अक्षर साथ सुंदर छबि, लावण्य तेजोमयी।
कर्ता दिव्य सदा रहे प्रकट जो, साकार सर्वोपरि,
'सहजानंद'! कृपालु को नित नमूं, सर्वावतारी हरि।। 3।।

जो हैं अक्षरधाम दिव्य हरि का, जामे बसे मुक्त हैं,
माया पार करें अनंत जीव को, जो मोक्ष का द्वार हैं।
ब्रह्मांड अणुतुल्य रोम दिसते, सेवे 'परब्रह्म' को,
ऐसे अक्षरब्रह्म को नित नमूं, **'गुणातीतानंद'** जो।। 4।।

महिमारुपी ध्यान का जिन्हें, अखंड साक्षात्कार है,
परम एकांतिकी स्थिति, आनंद 'परम' का सहज है।
श्रीहरि की महिमाचर्चा, का ही जिन्हें व्यसन है,
शिरोमणि परमहंसों में, **गुणातीत** को कोटि नमन है।। 5।।

साधा अष्टांगयोग, प्रगट हरि की, प्रीति हेतु प्रयत्ने,
शोधे वेदांततत्त्व, सकल ग्रह लिए, सिंधु से जैसे रत्न।
आधि-व्याधि-उपाधि, प्रणत जन की, टाल ले ली समाधि,
'गोपालानंदस्वामी', सकल गुण निधि, वंदु माया अबाधि।। 6।।

श्रीमन्निर्गुणमूर्ति सुंदर वपु, ज्ञानोपदेशे भरे,
आश्रय हैं सकल साधु गुण के, सर्वज्ञ माया परे।
समर्थ सुपूर्ण भक्त निज के, हैं दोषहंता प्रभु,
ऐसे **'प्रागजी' ब्रह्मरुप** गुरु को वंदन करूँ, हे विभू।। 7।।

इति गुणनिधिवंता, '**भक्त जागा**' धिमंता,
भूमि पर एहि संता, पंच दोषादिहंता।
श्रितहित अनुसरता, मूल अज्ञान हरता,
धन सम सुख करता, जनोपदेशे विचरता।। 8।।

श्री राजदुर्ग नगरे विमले बसे जो,
श्रीजी स्वरूप महिमा हृदये धरे जो।
देते प्रकाश मूल अक्षर का प्रतापी,
त्वां '**कृष्णजी**' गुरुवरं शरणं प्रपद्ये।। 9।।

जाके नाम रटन से, मलिन वे संकल्प निर्मूल हुए,
जाके आश्रय से समूल सबके, संसार-फेरे टले।
जाकी कीर्ति दिग्-दिगंत बिखरी, गाएं सभी चाव से,
ऐसे '**यज्ञपुरुषदास**' चरणे, वंदूं सदा भाव से।।10।।

वाणी अमृत ज्यौं भरी शहद-सी, संजीवनी सृष्टि की,
दृष्टि में भरी दिव्यता निरखते, सुदिव्य भक्तों सभी।
दिल में प्रेम भरा मीठा जननी-सा, शोभे सदा हास से,
ऐसे '**ज्ञानजी योगीराज**' गुरु को, वंदूं सदा भाव से।।11।।

जाकी अमृतवाणी तो बही सदा, साक्षात् महिमा रूपे,
ब्राह्मीस्थिति ने अहो! लीन किए, सुभव्य अक्षर पदे।
शरणागत निज अल्प जीव सब के, श्रेयार्थ तत्पर रहे,
'**काका**' स्नेहलसिंधु दिव्य विभु को, हृदय तो वंदन करे।।12।।

जाकी वाणी में सदा ही बही, सुरावली ब्रह्म की,
किन्तु हो अज्ञात अल्प समीपे, रसबस सभी में रहें।
जिएं जो अलमस्त स्वामिश्रीजी में, हैं मोक्षदाता अपि,
'**पप्पा**' योगीस्वरूप विभु चरणे, झुके रहें भाव से।।13।।

सोहे सद्गुणपूर्ण जो सरल व, जक्ते अनासक्त हैं,
शास्त्रीजी गुरु योगीजी उभय की, कृपा के जो पात्र हैं।
धारी धर्मधुरा समुद्र-सम हैं, गंभीर जो ज्ञान से,
'**नारायणस्वरूपदास**' गुणी को, वंदूँ अहो! भाव से।।14।।

दीक्षा अर्पी अहो गुणातीत-सी, जाको गुरु 'योगी' ने,
काकाजी और आप दिव्य द्वय का, अद्वैत अनूठा ही है।
भेदे साक्षी अनंत के, स्वरूप ये शास्त्री महाराज का,
ऐसे '**स्वामी हरिप्रसाद**' चरणे, वंदन सदा हम करें।।15।।

निष्ठा तो परिपूर्ण अद्‌भुत अहो! जाकी 'प्रगट' में दिसे,
मूर्ति सिद्धदशा अनादि की खरी, व धैर्य साक्षात् बसे।
प्रासादे निज धाम चैतन्य में, स्वामी बिराजी गए,
'स्वामी अक्षर के विहारी' चरणे, वंदे सभी भाव से।।16।।

जो साक्षात् महिमा सभर स्वरूप हैं, भागी अहो! योगी के,
तेजस्वी शूरवीर नित्य हंसते, पक्ष में रहें भक्तों के।
सर्वाधार सदैव साधकों के, नेता युवाओं के रहे,
ऐसे गौरवपूर्ण और सुहृद् जो, **'साहेब'** को वंदन करें।।17।।

जो ध्यान धरे श्रीजी का हर पल, चर्चा ब्रह्म भाव की,
मूर्ति में रह कर जो गाएं महिमा, श्रीजी के स्वरूप की।
दृष्टि जिनकी काकाजी सम, अनुग्रह अनूठा करें,
'दिनकर' दिव्य स्वरूप के, चरणों में सर्वदा हम रहें।।18।।

✵✵✵

प्रार्थना

निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चय तव घनश्याम।
माहात्म्यज्ञानयुक्त भक्ति तव, एकांतिक सुखधाम॥ 01॥

मोहि में तव भक्तपनो, तामें कोई प्रकार।
दोष न रहे कोई जातको, सुनियो धर्मकुमार॥ 02॥

तुमारो तव हरि भक्तको, द्रोह कबु नहिं होय।
एकांतिक तव दासको, दीजे समागम मोय॥ 03॥

नाथ निरंतर दर्श तव, तव दासनको दास।
एहि मांगु करी विनय हरि, सदा राखियो पास॥ 04॥

हे कृपालु ! हे भक्तपते ! भक्तवत्सल सुनो बात।
दयासिन्धो स्तवन करी, मागुं वस्तु सात॥ 05॥

सहजानंद महाराज के, सब सत्संगी सुजाण।
ताकुं होय दृढ़ वर्तनो, शिक्षापत्री प्रमाण॥ 06॥

सो पत्री में अति बड़े, नियम एकादश जोय।
ताकी विक्ति करत हुं, सुनियो सब चित्त प्रोय॥ 07॥

हिंसा न करनी जन्तु की, परस्त्रियासंग को त्याग।
माँस न खावत मद्यकुं, पीवत नहिं बड भाग्य॥ 08॥

विधवाकुं स्पर्शत नहि, करत न आत्मघात।
चोरी न करनी काहुं की, कलंक न कोईकुं लगात॥ 09॥

निंदत नहि कोय देवकुं, बिन खपतो नहि खात।
विमुख जीव के वदन से, कथा सुनी नहि जात॥ 10॥

एही धर्म के नियम में, वरतो सब हरिदास।
भजो श्री सहजानंदपद, छोड़ी और सब आस॥ 11॥

रही एकादश नियम में, करो श्रीहरिपद प्रीत।
प्रेमानंद कहे धाम में, जाओ निःशंक जगजीत॥ 12॥

***

थाल - 1

वस्यो छे छोगलावाळो, मारे मन वस्यो छे छोगलावाळो।
छेल छबीलो ने अजब रंगीलो, ऐनो चपळ छे नेणनो चाळो।। मारे 01।।

जरकसी जामो ने पाघ कसुंबी, कमर कस्यो छे कटारो।
काने कुंडळ कंठे मोतीडांनी माळा, ऐना सुरवाळनो झबकारो।। मारे 02।।

कपुरनी माळा कंठे बिराजे, हेम कडां बे हारो।
जमणी आंगळीये वेढवीटी विराजे, ऐनो तोरो कुसुमथी न्यारो।। मारे 03।।

हैडा ऊपर हेमचंद्र बिराजे, पाय पावडी घुघरीनो घमकारो।
अटक मटक एनी चाल चटक, ब्रह्मचारी जेरामनो प्यारो।। मारे 04।।

***

थाल - 2

ग्वाल बाल लाल जमे मदन गोपाल
लाल सोने का थाळ उसमें जमे श्री महाराज... ग्वालबालजी...

हरिके... आगे आये भक्ति मात, सखियां लई आये साथ।
करती आये उसमें बात, उसकी आयर की जात।
चंपा मोगरी का तेल, और कस्तूरी धूपेल।
मर्दन करे गोपी गोवाल, जमे मदन गोपाल।। 01।।

हरिके... जल जमुना हुं लाई, तांबा कुंडी में ठलवाई।
बाजोठ पर बेसाई, देखो लाल की सफाई।
एक गोपी लाई टोपी, हीरा सांकडी अबोटी।
ओढ़े कसुंबल शाल, जमे मदन गोपाल।। 02।।

हरिके... प्रथम मेवा लीये सार, पपनस बड़े-बड़े दो चार।
सेतुर जंबु है गुलदार, केळा सफरजन अनार।
लंबे बोर, चणी बोर, नारी लाई है अखोर।
इसकी लाल है छाल, जमे मदन गोपाल।। 03।।

हरिके... धरे मक्खन का समोसा, वड़ा सांभर इडली डोसा।
मीठा पेठा ताजा पत्तीसा, सैंडवीच ढोकला बरगर पीज़ा।
बिस्कुट दालमूठ और मठिया, आलूपौआ साथ में भुजिया।
आलू चाट मसालेदार, जमे मदन गोपाल।। 04।।

हरिके... साफ करके बादाम, खारेक मीठी है तमाम।
पुस्ता हलवा है घनश्याम, अमृत आफुसी है आम।
नारंगी मोसंबी भोय की, लंबी-चंबी खट्टी-मीठी।
ठंडी है द्राक्ष, जमे मदन गोपाल।। 05।।

हरिके... जमे पत्तरवेलियां, मेथी के गोटे सूरती ऊंधिया।
रायता खीरे का बनाया, परांठा गोभी का लगाया।
चटपटे गोलगप्पे और भेल, आइसक्रीम कुल्फी की रेलमछेल।
शाही टोस्ट रसीले लाल, जमे मदन गोपाल।। 06।।

हरिके... लड्डू मगदळ का है सारा, हलवा खुरमा खुबी वाडा।
आटा जलेबी का न्यारा, बुंदी छूटी ल्यो है प्यारा।
ले ले खाजे पेड़े ताजे, गुनगुन आप आप में गाजे।
मठो मोरब्बो रसाल, जमे मदन गोपाल।। 07।।

हरिके... राजभोग और रबड़ी, गांठियाँ वेफर्स भाखरवड़ी।
काजूरोल और सूतरफेनी, बेकडीश, नूडल्स और मैकरोनी।
ब्रेड पकौड़े, ब्रेड के रोल, रसगुल्ले मोटे और गोल।
हाँडवा काजू से मालामाल, जमे मदन गोपाल।। 08।।

हरिके... शीरो पूरी ने दूधपाक, बादाम चारोळी है द्राक्ष।
ऊपर शक्कर बूरा साफ, लाल ले तूं उसमें चाख।
सुंदर जावंत्री जायफल, और कस्तूरी केसर।
शिखंड, बासुंदी का है थाल, जमे मदन गोपाल।। 09।।

हरिके... संतरा ज्यूस है ताजा, तीखी सेव उपमा और खाजा।
वेजीटेबल सूप पिलाए, समोसे जापानी बनवाए।
भरवां केले बैंगन भरता, गोभी मटर मलाई कोफ्ता।
खट्टे मीठे कई अचार, जमे मदन गोपाल।। 10।।

हरिके... लड्डू चुरमें का खूब, बनाई बिरंज हुबाहुब।
लाई बरजंती मेसुब, बाटी घी में डूबाडूब।
रखे मावे के गुलगुले, ठोर रुडे मालपूड़े।
बड़े-बड़े फाफड़े आगळ तळेली है दाल, जमे मदन गोपाल।। 11।।

हरिके... गरम पाव और भाजी, ठंडा कस्टर्ड, फ्रुटक्रीम ताजी।
खांडवी, खमण और दही बड़े, साग सरसों का, नान और पूड़े।
जैली, फ्रूट सलाड और केक, वानगी पनीर की है अनेक।
बाटी के संग तड़का दाल, जमे मदन गोपाल।। 12।।

हरिके... भोजन भात-भात के भाणे, इसमें रखे एलची दाणे।
बरफी खाये गिरधर शाणे, मेसुब वड़ा वटाणे।
लड्डू सेवैया मोतैया, घेवर साकर कदैया।
गुंदरपाक है रसाल, जमे मदन गोपाल।। 13।।

हरिके... रोटी जरसाई भात, सुंदर तरकारी है जात।
भींडा वालोळ वंताक, सुंदर घीळोडा के शाक।
कढी वडी है झाझी, लाई भाजी करके ताजी।
मूळा गलकारी कारेली, भजीया वटाणा ने वाल जमे मदन गोपाल।। 14।।

हरिके... चटनी आमली की बनाई, कोथ फीदी से मिलवाई।
लीले मिरचे की तिखाई, आरस पत्थर से कुटवाई।
लीले मिरचे दाने, भारे भात भात के अथाणे।
अंदर मीठे जीरे डाळे, जमे मदन गोपाल।। 15।।

हरिके... केरी लींबु आदे सारे, गुंदर केले के असारे।
लीले मिरचे तीखे भारे, स्वाद गरमर का है न्यारा।
दही छाछ है मोळी, माखण और है कचौरी।
मोळे साटे पूरणपोळी, दूध घी कढ़ी दाळ जमे मदन गोपाल।। 16।।

हरिके... भर सोने की झारी, पाणी पीजे गिरधारी।
पान लविंग सोपारी, अंदर ऐलची है न्यारी।
काथा चूना है पूरण, भारे भात भात चूरण।
मुखड़ा हो जायेगा लाल, जमे मदन गोपाल।। 17।।

हरिके... थाल प्रेमानंद गाये, उसको पार कोई ना पावे।
प्रसादी के करेल हाश, लाल रख ले तेरे पास।
लेजो स्वामिश्रीजी नाम, जाणे पहोंच्या अक्षरधाम।
मुक्तानंदजी का थाल, जमे मदन गोपाल।। 18।।

***

थाल - 3

मारे घेर आविया छोगलाधारी, मारे घेर आविया धामना धामी
लाडू जलेबी ने सेव सुंवाळी, हुं तो भावे करी लावी छुं भारी... ।। मारे 01।।

सुरण-पूरण ने भाजी कारेला, पापड़ वड़ी वघारी,
वंताक वालोळना शाक कर्या, में तो चोळाफळी छमकारी... ।। मारे 02।।

काजु कमोदना भात कर्या, में तो दाळ करी बहु सारी,
लींबू काकड़ीना लेजो अथाणां, कढ़ी करी छे काठियावाड़ी... ।। मारे 03।।

वघारेला भातमां नाख्या वटाणा, सूकी करी बटेटानी भाजी
पोचा-पोचा थेपला प्रेमथी बनाव्या, भाजी करी तार्जंळिया नी ताजी... ।। मारे 04।।

मेंथीनी भाजीना मुठिया बनाव्या, में तो दीधा वालोळमां वघारी,
नानी-नानी रोटलीना फुलका बनाव्या, प्रेमे जमवा पधारो मारा स्वामी...।। मारे 05।।
ध्यान...
जळ रे घेलानी में तो झारी रे भरावी, तमे आचमन करोने मारा स्वामी
हळवे हळवे जळ पीओने, प्रभु अवतार ना अवतारी... ।। मारे 06।।

लविंग सोपारी ने पानबीड़ी वाळी, तज एलची जावंत्री सारी,
निशदिन आवो तो भावे करी भेटुं, एम मांगे जेराम ब्रह्मचारी...।। मारे 07।।

***

थाल - 4

लेता जाओ रे साँवरिया! बीड़ी पानन की
पानन की, बीड़ी पानन की-2
लेता जाओ रे साँवरिया! बीड़ी पानन की...

काथो चूनो वणी लविंग सोपारी-2
ऐलची मंगावु मुल्तानन की-2 लेता जाओ रे ...

एक एक बीड़ी मोरे सासु नणंद की-2
दूसरी बीड़ी मोरे लालन की-2 लेता जाओ रे ...

आवो हरिकृष्ण पाटे बेसारुं-2
भाजी खेलावुं सारी रेनन की-2 लेता जाओ रे ...

प्रेमानंद कहे आपो प्रसादी-2
एटली अरज तोरे दासन की-2 लेता जाओ रे ...

***

भजन - 1

(राग–देखा है पहली बार, साजन की आँखों...)

अविनाशी आतम प्राण, सुन ले हृदय की पुकार-2
प्रगट हो सर्वत्र आप, प्रत्यक्ष करूं बार-बार...
सर्वोपरि सुख आधार, कर ले आरत का स्वीकार
प्रगट हो सर्वत्र आप, प्रत्यक्ष करूं बार-बार...
अविनाशी आतम..., प्रगट हो सर्वत्र आप...

तेरा सूचन है, मुझे उसकी फ़िकर है
करूं जीवन में ऐसा, तेरी रुचि वही है }-2
दो साधु दो साथी, उनसे करूं दोस्ती
मैं बिताऊं जीवन, एक बालक की भांति
अविनाशी आतम..., प्रगट हो सर्वत्र आप...

तेरा वचन है, मुझे उसकी लगन है
करूं पूजन मैं उनका, तेरी मूर्ति वही है }-2
जो मेरी प्रकृति से, भिन्न हो वो मेरे
साथी जीवन के, मिट जाऊं मैं वहीं पे,
अविनाशी आतम..., प्रगट हो सर्वत्र आप...

तेरी आशिष है, मुझे उस पर श्रद्धा है
करूं भजन मैं उसका, तेरी खुशी वही है }-2
जो हुई है प्राप्ति, वो कभी न मिटेगी
करो नाम रटन, जादू होते रहेंगे
अविनाशी आतम...-2 प्रगट हो सर्वत्र...
सर्वोपरि सुख आधार... प्रगट हो सर्वत्र आप...
अविनाशी आतम...

***

भजन - 2

(राग–मौसम आए, मौसम जाए गाते जाना तुम)

हुं... हुं... हुं... अहो काकाश्रीना प्यारा लाडीला मुकुंद
संबंध बांधी स्वरूपों संग, बन्यो तुं साचो संत-2

बुद्धि प्रतिभा अहो शुं तारी, शुं करूं वर्णन
निर्दोषबुद्धि अनूप न्यारी, कर्या करूं दर्शन

अति चंचळ मन अने अति कोमळ तन
गुरु वचने गुरुचरणे कर्या तें अर्पण
काकाश्रीने राजी करी रीझव्या भगवन्   संबंध बांधी...
मपनि सानि, पनि सारेसा...
पमग मगरे, गरेसा रेसानि, मगरे गरेसा रेसानि सानिप...
आ... आ...
साचुं हेत ने अतिशय विश्वास, जो होय संत संग
वळी एमांय कपट रहितनो थाये जो संबंध
गुणातीतानंदस्वामी कहे एवो जीव
कोटि जन्मनी कसर टाळी बनी जाय शिव
ए अक्षरवचन मूर्तिमंत एज तारुं जीवन   संबंध साथी...
ज्ञानयज्ञनुं सपनुं अने काकाश्रीनो अणसार
स्वामी श्रीजी दर्शनीया दे दिल्ही दरबार
सर्वोपरि निमित्त सेवक बन्या ऐवा आप
गुरुहरिए कृपा वहावी सहज अनराधार
रचंता स्थावर मंदिर तुं तो बनी गयो जंगम   संबंध साथी...
अहो काकाश्रीना प्यारा लाडीला मुकुंद
लाखो-लाखो वंदन करुं स्वीकारो आराधन-2
घणुं-घणुं-घणुं जीवो योगीजीना जंगम-2

✷✷✷

भजन - 3

(राग–सातिया पुरावो आजे, दिवड़ा प्रगटावो आज...)

अक्षरधाम से गुरुजी पधारे
अक्षरधाम से गुरुजी पधारे, काकाजी इन्हें लाए साथ,
पुष्पों से स्वागत करते हैं, हृदय बिराजो हमरे नाथ।
जय गुरुहरि काकाजी की जय, जय जय गुरुजी प्यारे।
अनुग्रह से काकाजी के, गुरुजी का संबंध पाया है,
हाँ गुरुजी का संबंध पाया है,
मोतियों की बरसात हो रही, समय ऐसा आया है,
वाह, वाह समय ऐसा आया है,
प्रागट्य दिन गुरुजी का आज, -2

मिलजुल आनंद करते आज,
आपके दर्शन से होता है, श्रीजी का दर्शन साक्षात्,
जय गुरुहरि काकाजी की जय, जय जय गुरुजी प्यारे।।

इनके दर्शन मात्र से आँखों के सब पाप हैं जलते
आँखों के सब पाप हैं जलते
वाणी सुन कर इनकी, कान हमारे पवित्र होते
कान हमारे पवित्र होते
स्मरण से जलते मन के पाप -2
धरा पर मोक्ष के दाता आप,
आपके पूजन से होता, श्रीजी का पूजन साक्षात्,
जय गुरुहरि काकाजी की जय, जय जय गुरुजी प्यारे।।

अक्षरधाम से गुरुजी पधारे, काकाजी इन्हें लाए साथ,
पुष्पों से स्वागत करते हैं, हृदय बिराजो हमरे नाथ।
जय गुरुहरि काकाजी की जय, जय जय गुरुजी प्यारे -3

***

भजन - 4

अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम, श्रीजी महाराज ने दिया मंत्र जीवंत,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण। -2

मानव देह में स्वयं, हुए प्रगट परब्रह्म,
साथ लाए अक्षरब्रह्म, स्वामी गुणातीतानंद,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

सेवा से कर दिया, गुणातीतस्वामी को प्रसन्न,
भगतजी महाराज, अदाश्री, जागास्वामी को नमन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

शुद्ध युगल उपासना, का किया प्रर्वतन,
शास्त्री महाराज को कोटि-कोटि नमन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

मूर्ति साधुता की, सेवा-भक्ति का व्यसन,
योगीबापा तुम्हें, कोटि-कोटि वंदन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

योगीजी के स्वरूप का, किया जिसने उद्घोष,
सुहृद् सम्राट काकाजी के चरणों में झुकाएं शीश,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

योगी के संबंध में, 'स्व' का किया विसर्जन,
पप्पाजी महाराज को अंतर से हैं नमन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

आत्मीयता का फहराया, देश-विदेश में परचम,
हरिप्रसादस्वामिजी को हैं हमारे वंदन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

योगी महाराज को, सौंप दिया जिसने मन,
अक्षरविहारीस्वामिजी को करें हम सभी नमन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

ठहरावरहित गुरुमुखी, माहात्म्य सम्राट तुम,
युवा नेता साहेब को भावभरे हैं वंदन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

माणावदर में रह कर फैलाया सत्संग,
हरिभाई साहेबजी को अंतर से हैं नमन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

सुदूर रह कर भी जो, बने काकाजी का दिल,
दिनकरभाई तुम्हें हैं हमारे वंदन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

संकल्प ज्ञानयज्ञ का, काकाजी का वचन,
दिल्ली में पधरा दिए श्री अक्षरपुरूषोत्तम,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण।

करूणा कर हमें दिया, गुरुजी का संबंध,
कोटि-कोटि नमन, काकाजी को नमन,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण -6

***

भजन - 5

(राग– अज़ीमोशान शहंशाह...)

अपनेपन के शहंशाह -2
हमारे जीवनप्राण
हमेशा तुम्हारी सेरेछाया रहे
तेरा संबंध मिल गया, मोक्ष का द्वार खुल गया -2
हमको मिला, वो... हमको मिला -2

अपनेपन के शहंशाह, हमारे जीवनप्राण
हमेशा तुम्हारी सेरेछाया रहे
तेरा संबंध मिल गया, मोक्ष का द्वार खुल गया -2
हमको मिला, वो... हमको मिला -2
धीतो ... तन... तन... रहनुमा गुरुजी...
काकाधारक, प्रभुस्वरूप हैं,
रहते बन के, पर सखारूप हैं
तारा दे रे... तारा दे रे...
काकाजी के, पैगंबर हैं
हम मुक्तों का तू राहबर है
जय गुरुदेव तुम्हारी जय जय... जय...
हमको मिला, वो... हमको मिला -2
अपनेपन के शहंशाह, हमारे जीवनप्राण
देता है हर दिल यही गवाही
पाया हमने समर्थ सारथी
नूर मूर्ति का मुख पर छाए
दर्श से ही दिल सुकून पाए...
जय गुरुदेव तुम्हारी जय जय... जय...
हमको मिला, वो... हमको मिला -2
अपनेपन के शहंशाह...
तेरा मज़हब, मुक्तों की महोब्बत,
कई दिलों पर तेरी हुकूमत,
आ... आ...आ...
कुटुंबभावना, तेरी रग रग में,
सर्वदेशीयता, है वर्तन में
जय गुरुदेव तुम्हारी जय जय... जय...
हमको मिला, वो... हमको मिला -2
अपनेपन के शहंशाह,
अपनेपन के शहंशाह, हमारे जीवनप्राण
हमेशा तुम्हारी सेरेछाया रहे
तेरा संबंध मिल गया, मोक्ष का द्वार खुल गया -2
हमको मिला, वो... हमको मिला -2
धीतो ... तन... तन... रहनुमा गुरुजी...

***

भजन - 6

अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में, - 2
होकर लीन प्रभु में प्यारे -2, रहना है व्यापक में
अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में...

पंजाब में गुरुबक्ष के यहाँ दे दिया था मैंने इशारा,
मुझको मिलने आना दिल्ली, आऊंगा ना यहाँ दोबारा,
मुझको ही महसूस करोगे-2, जब भी गुरुजी होंगे संग में,
अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में... - 2

मंजुला बहन को काकाजी ने रहस्यमय संकेत दिया
रह कर अतंर्धान दिल्ली में साथ रहने का वादा किया
सबके बीच रहूँगा मैं -२, पर तुमको अब पहचानना होगा
अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में... - 2

कोट निकाल के पहनाया और कहा ये ही हैं गुरु आपके
मुझ में हैं जो वही विराजे गुरुजी में भी सदा आपके
काकाजी ने इस चरित्र से -२, दिव्य ऐक्य सबको समझाया,
अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में... - 2

नभ का सूरज, मैं भी सूरज, और तुम्हारे हृदय सूर्य जो,
जाओ तीनों एक आज से, काका से आशिष मिले जो,
शक्तिपात कर दिया गुरु ने -२, निर्बंध और स्वाधीन बनाया,
अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में... - 2

मूर्ति का सुख दे के सभी को, युगकार्य सब पूर्ण किए, - 2
काकाजी गए स्वधाम को, - 2
पर ज्योतिर्धर समर्थ दिए, - 2
अब तो रहना है मुझे आत्मन्, मुक्तों के अंतर में... - 2

हुआ स्वरूप में स्वरूप लीन, आत्म से आत्म हुआ तल्लीन
गुरुजी में किया प्रवेश अद्भुत, पप्पाजी ने दिया सबूत।
अब स्वयं काकाजी हाज़िर हैं, गुरुजी के दिव्य रूप में।
गुरुजी के दिव्य रूप में।

भजन - 1

(राग–आज प्रगटे पूरण ब्रह्म रे...)

पद-1

आज प्रगटे पूरण ब्रह्म रे, स्वामी सुखकारी!
साथ आए स्वयं परब्रह्म रे, स्वामी सुखकारी!

अनेक जीवों का किया काज रे, स्वामी सुखकारी!
छूटे भव के फेरे आज रे, स्वामी सुखकारी!

इस बेला आए अलबेल रे, स्वामी सुखकारी!
मुड़ गया वृत्तियों का बहाव रे, स्वामी सुखकारी!

आज आनंद अंग ना समाए रे, स्वामी सुखकारी!
मुनि अखंडानंद सदा गाए रे, स्वामी सुखकारी!

पद-2

हो रही है जय जयकार रे, स्वामी पाने से
रहा और ना किसी का प्रभाव रे... स्वामी सुखकारी!

एक स्वामिनारायण गाऊं रे... स्वामी सुखकारी!
बिना उसके नहीं कुछ चाहुँ रे... स्वामी सुखकारी!

हुई आज जगत में जीत रे... स्वामी सुखकारी!
रही कमी नहीं कोई रीत की रे... स्वामी सुखकारी!

आज उमंग अंग ना समाए रे... स्वामी सुखकारी!
नित्य अखंडानंद गुण गाए रे... स्वामी सुखकारी!

पद-3

आओ-आओ चलें जूनागढ़ रे, स्वामी प्रगटे हैं,
दर्शन करके धन्य हो जाएं रे, स्वामी प्रगटे हैं,
मूल अक्षर पूरण काम रे... स्वामी सुखकारी!
जिनका गुणातीतानंद नाम रे, स्वामी सुखकारी!
हरिभक्तों का रोज लगे तांता रे, स्वामी सुखकारी!
हो रहा है ब्रह्म किल्लोल रे, स्वामी सुखकारी!
रहे गुणातीतानंद साथ रे... स्वामी सुखकारी!
हुए आज सभी हम सनाथ रे... स्वामी सुखकारी!

पद-4

चलो जाएं जूनागढ़ आज रे... सत्संग करने को,
बड़े-बड़े आए मुनिराज रे... सत्संग करने को,
नित्य ब्रह्मनिरूपण होवे रे... सत्संग करने को,

हरिजन सभी इकट्ठे होते रे... सत्संग करने को,
बना अवसर आज अनमोल रे... सत्संग करने को,
फिर ना मिले ऐसा मौका रे... सत्संग करने को,
आज आनंद उत्सव होय रे... स्वामी सुखकारी!
मुनि अखंडानंद नित्य गाए रे... स्वामी सुखकारी!

***

भजन - 2

(राग–तुम मिले दिल खिले...)

आ... आ... आ... आ... SSSS
आ गया, अब समय, तेरी भक्ति अदा करने का-2
गुरुभक्ति यज्ञ में आहुति मन-बुद्धि की देकर-2
तेरी मर्जी में रहकर मनाएं विजय दिन
आ गया...-2

काकाजी के प्रति... हो... स्वामी सेवकभाव तुम रखते
ले के सिद्धान्त... हो... काकाजी के, पथ पर तुम चलते
काका राजी हों, यही निशान-2
बन के बंसी सुनाते, तुम उनकी ही सरगम
आ गया अब समय...-2

कारण बिना... हो... दृष्टि में लिया, होके तुमने फिदा
कैसा भी था... हो... तुम्हारे संकल्प से ही पात्र बना
अनुग्रह से है, संबंध मिला-2
दिव्यानंद का अनुभव कराते तुम हर पल
आ गया अब समय...-2

आ... आ... आ... आ... SSSS
ओ! माई लॉर्ड... ब्लेस मी,
धॅट यॉर नेम बी इन्ट्वाईन्ड वीथ माई ब्रेथ,
देट आई लिव ओनली इन यॉर कोन्शियसनेस
एज़ यॉर हम्बल सर्वेन्ट, फॉर एवर... एण्ड एवर... एण्ड एवर...

मेरा ये मन... हो... नापातोली करता रहता है
जन्मों की... हो... छूटे नहीं, कैसी, ये जड़ता है
तोड़ के मन के, बंधन सब-2
इस जन्म में ही पूर्णाहुति कर लें हम

आ गया अब समय...-2 गुरुभक्ति यज्ञ...
आ... आ... आ... आ... SSSS

✸✸✸

भजन - 3

(राग–देख ली तेरी खुदाई, अब मेरा दिल भर गया)

आपकी भक्ति से जीवन, खुशियों से है भर गया-2
आपसे संबंध हुआ तो-2, इस जन्म ही तर गया॥
आपकी भक्ति से...

पहले भी जीवन जिया पर, वृत्तियों में झूलकर-2
आपने चेतन जगाया-2, और स्वतः मन हट गया
आपकी भक्ति से...

मंत्र जीवंत स्वामिनारायण का, सबको दे दिया-2
धीरे-धीरे ये सभी के-2, दिल पे जादू कर गया।
आपकी भक्ति से...

आपका स्वरूप काकाजी, जिसने भी पहचाना हो-2
काल-माया और करम का-2, उसके दिल से डर गया।
आपकी भक्ति से...

आपकी कृपा से पाया, दिव्य जीवन का आनंद-2
कैसा जीवन अब हुआ मैं-2, कैसी प्राप्ति कर गया।
आपकी भक्ति से...(2)   आपसे संबंध...(2)

✸✸✸

भजन - 4

(राग–आपकी ईनायतें आपके करम...)

आपकी दयालुता प्रभु, आपके करम }-2
काकाजी बताओ कैसे भूलेंगे हम-2

अनगिनत विकारों वाला, था जो मन मेरा }-2
आपकी कृपा से अब कुछ ऐसा हो गया
जितना तुम्हें याद करें यह उतना लगे कम   काकाजी बताओ...

पग-पग, पल-पल में ऐसी, प्रतीति हो गई }-2
आपके श्री चरणों में मुझे प्रीति हो गई
सुख का अनुभव करा दिया प्रभु दूर किए गम   काकाजी बताओ...

आपके अल्प संबंध में प्रभु, जो भी आ गया } -2
आपकी दया से अक्षरधाम पा गया
जब-जब ऐसा सोचूं आंखें हो जाती हैं नम   काकाजी बताओ...

प्रार्थना यही है मेरी, हाथ जोड़कर } -2
संत के संबंध में रहूं जगत छोड़कर
संत जैसा चाहे वैसा वर्तन हो हरदम   काकाजी बताओ...

✷✷✷

भजन - 5

(राग-चढ़ता सूरज धीरे-धीरे ढलता है...)

दोहा– दिये योगी बापा ने स्वरूप कैसे-कैसे।
काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामी जैसे॥

आज सुनहरी मौका है, फिर हाथ न कल ये आएगा;-3
हरिस्वामी को पहचान बंदे, अक्षररूप हो जायेगा।-2
हो जायेगा... हो जाएगा...॥

गुणातीत सी दीक्षा दे श्रीफल एक दिया था,
इंजन एक और **योगी बापा ने जोड़ा था;-2**
अद्‌भुत आशिष योगी बापा ने बरसाए
जाओ माया तुमको **परेशान न कर पाएगी;-2**
संतों के सरताज हो तुम योगीजी का सर्जन हो,
बहनों, युवकों, अंबरीषों **के दिलों की धड़कन हो;-2**
समर्थ इतने हो कि जिस पे रहमों करम कर दो,
कसर उसकी टल जाए, **माया से पर कर दो;-2**
हरिधाम का सौदागर **सौदा मुफ़्त देता है-2**
सुख प्रभु का दे करके, **दुःख से मुक्त करता है-2**
भक्ति उनकी कर ले...-2 अक्षरधाम का सुख यहीं पाएगा,
ध्याके उन्हें स्वामिनारायण भज ले, साधन काम ये आएगा।
हरिस्वामी को पहचान बंदे...-2   हो जाएगा... हो जाएगा...
मुक्तों को जो खींचती तेरी अदा निराली है,
जोशीली वाणी तेरी, **चाल भी मतवाली है;-2**
आपके आसन का भी जो दर्शन कर जाएगा,

उसका अपना आसन भी **स्थिर हो जाएगा;-2**
है स्वयं प्रचार आपका अनुपम आचरण,
मुक्तों पर कृपा करने, **करते आप हो विचरण;-2**
तेरे परिश्रम ने गुणातीत अस्मिता प्रगटाई,
देश और विदेशों में **आत्मीयता फैलाई;-2**
एकता अटूट तुमने **'काका' से बनाई है-2**
अंतर में अखंड मूर्ति **'बापा' की बसाई है-2**
कहना उनका कर ले...2, प्रसन्नता जो तू पा जाएगा,
काल करम माया के चक्कर से, फिर तू बच जाएगा।
हरिस्वामी को पहचान बंदे...-2 हो जायेगा... हो जाएगा...

दर्शनमात्र से ही शांति हृदय में भर देते हो,
सेवकभाव अल्प संबंधी **के लिए भी रखते हो;-2**
भक्तों की संसार की विडंबनाओं में तुमने,
उनके स्तर पर आकर **सहारा दिया तुमने;-2**
अद्‌भुत सामर्थ्य तुम्हारा, अलौकिक आकर्षण,
युवकों की है प्रेरणा बना, **ये आपका जीवन;-2**

गुणातीत समाज आज भी सनाथ तुमसे है, **हाँ सनाथ तुमसे है-2**
प्रगट श्री सहजानंद महाराज आज तुमसे है, **प्रगट आज तुमसे है-2**
जन्मों के साधन से...-2, ये स्वरूप नहीं मिल पाएगा,
होगा अनुग्रह तो ही, इनसे संबंध तू कर पाएगा।
हरिस्वामी को पहचान बंदे...

स्थान-भेद, काल-भेद, गुण-भेद भुला करके,
जाति-भेद, व्यक्ति-भेद, **स्वरूप-भेद मिटा करके;-2**
बृहद् गुणातीत समाज का आत्मीय बनना है,
आत्मीय सब हैं, मुझे ही आत्मीय बनना है;
आत्मीय महोत्सव तभी **सार्थक हो जाएगा-2**
ले के ये पैगाम 'गर मैं **आत्मीय बन जाऊंगा-2**
आपके आशिष से...-2, जब मैं आत्मीय बन जाऊंगा...
'बापा' ने जो जंग खेला वो, कामयाब हो जाएगा।-5
'बापा' ने जो जंग खेला...

✷✷✷

भजन - 6

(राग – थोड़ा सा प्यार हुआ है...)

हु...SSS...
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...-2
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...-2
तेरी कृपा से टले... *हो ओ ओ ओ ओ*
तेरी कृपा से टले, जन्मों की कसर हमारी।
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...2॥

जूनागढ़ के जोगी के, श्रीजी ज्यों जमानती हैं,
आपके लिए वैसे ही, आज भी काका खड़े हैं।
वाणी और वर्तन तेरा, काकाजी को प्रगटा दे,
संकल्प आपका तो, जीव को जगदीश बना दे।
हर एक पल जीवन की...*हो ओ ओ ओ ओ*
हर एक धड़कन दिल की, तेरे लिए हो हमारी॥
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...2

गुरुजी का संबंध जो काकाजी ने दिया है,
मोती के मेह बरसे, ऐसा मौका बख़्शा है।
मोती का चारा अब तो, राजहंस बनकर चुग लें,
तेरे मुक्तों में अब तो 'स्व' का विसर्जन कर दें।
पराभक्ति के लिए...*हो ओ ओ ओ ओ*
तुझको राजी करने, हर क्रिया हो हमारी॥
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...2

गुण दोष हम न देखें, भागवती तनु बना दो,
अंतर के संग्रामों का, हे प्रभु अंत ला दो।
रख दिया दिव्य समाज में, दिव्यता में खो जाएं,
जहां हो तेरा संबंधी, वहां हम झुक ही जाएं।
मन से लड़ने के लिए...*हो ओ ओ ओ ओ*
मर के जीने के लिए, रहे हर पल तैयारी...॥
आधार है जीवन का, मूर्ति तुम्हारी...3

✷✷✷

भजन - 7

(राग – आजे सौ–सौ वरसोना वाणा वही गया...)

आजे सोळ सोळ वरसोना वाणा वही गया
आजे सोळ सोळ वरसोना वाणा वही गया

हे... गूंजे हजी पण कानमां मारा आपनो केसरी नाद हे काका,
गुरुजी जोतांने काका दीसे रे,
दिनकरभाई जोतांने काका दीसे रे,
एवा भरतभाई जोतांने काका दीसे रे,

अमारे माटे वेठयो भीडो अपार रे,
अमारे माटे वेठयो भीडो अपार रे
हे... तन, मन, आत्मानी हजी पण राखो छो संभाण रे काका,
गुरुजी थकी तमो अम साथ रे,
दिनकरभाई थकी अमारी सामे रे,
भरतभाई थकी अमारी सामे रे,

हंसता रमता करावे हेत रे,
हंसता रमता करावे हेत रे,
हे...मळवु होय तो आवजो दिल्ली आप्या पंजाबमां कॉल ते काका,
गुरुजी थकी तमो अम साथ रे,
गुरुजी थकी अमारे प्रगट रे,
गुरुजी थकी अमारे प्रगट रे,

आप अखंड साथे छो अेवुं वर्ताय रे,
आप अखंड साथे छो अेवुं वर्ताय रे,
हे... रहीश तमारी वच्चे दिल्हीमां आप्या एवा कॉल ते काका,
गुरुजी थकी तमो अम साथ रे... गुरुजी थकी अमारे प्रगट रे;
गुरुजी थकी तमो अम साथ रे... गुरुजी थकी अमारे प्रगट रे;
गुरुजी थकी तमो अम साथ रे... गुरुजी थकी अमारे प्रगट रे;
गुरुजी थकी तमो अम साथ रे... गुरुजी थकी अमारे प्रगट रे;

✸✸✸

भजन - 8

(राग–आए थे हम इक रोज मेहमान बन कर...)

आए थे हम मंदिर में दर्शन करने,
खबर क्या थी प्रगट प्रभु, हमको पकड़ लेंगे यूं।
जगत के झूठे रिश्ते निभाए जो हमने,
सत्संगिओं से ही फिर, नाते सच्चे वो जुड़ जाएंगे।
और हम क्या कहें आपसे बस,
करने को आए हैं इकरार,
काकाजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार!
कड़ाके की सर्दिओं में भी, खुली जीप में आप आते,
कड़ी धूप में रिक्शाओं में, मिलने हमें आप आते,
देखते-देखते इस मिलन में, बढ़ता गया आपका प्यार,
काकाजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार!
ले लिए गम सब हमारे, हमारे लिए मुस्कुराए,
थी आपको जो उम्मीदें, हम वैसे तो जी न पाए
आज तक का सब माफ यूं कहकर,
माफ करते गए आप हर बार,
काकाजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार!

दुःख दर्द जो, बाँट ले एक दूसरे के,
मुक्तों का साथ हमको, आपने ऐसा दिया,
गाज गिरी, आँखें भले हो गईं नम,
सबने मगर एक भजन, का ही सहारा लिया,
आत्मबुद्धि, प्रीति ने तुम्हारी,
प्रगटाया है आपस का ये प्यार,
काकाजी के आशिष से है रचा,
गुरुजी ने नूतन गुणातीत, दिव्य परिवार!
प्रगट प्रभु साथ हैं ऐसी, प्रतीति तुम्हीं ने कराई,
तन, मन, धन न्यौछावर जो कर दे, ऐसे भक्तों की महिमा समझाई,

पात्रता कोई देखी नहीं बस, अपनाया जो भी आया एक बार,
गुरुजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार!
नया जन्म तुमने दिया जो, पुराना सभी हम भुला दें,
दिव्य ब्रह्मसमाज मिला है, उसकी सेवा में सर्वस्व लुटा दें,
गरज रख के, रांक हम बन कर, जीएं ले के तेरा ही आधार,
गुरुजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार!
दिव्य परिवार...योगी परिवार...

✸✸✸

भजन - 9

(राग– ये दिल की लगी कम क्या होगी...)

आगाज़ अलौकिक ऐसा है, फिर कल से नज़ारा क्या होगा,
सुहृद्भाव का कलश चढ़ाएँ हम,
सुहृद्भाव का कलश चढ़ाएँ हम, काकाजी का संकल्प साकार होगा,
स्वरूपों का संकल्प साकार होगा...
आ... आ...
हीरक जयंती और अमृत पर्व के, हैं आप सभी को अभिनंदन,
हैं आप सभी को अभिनंदन,
है हरा-भरा सत्संग जिनसे, स्वरूपों के चरणों में वंदन,
स्वरूपों के चरणों में वंदन,
संबंध मिला सर्वोपरि का, वर्तन से हमारे बयां होगा -२
सुहृद्भाव का कलश चढ़ाएँ हम, काकाजी का संकल्प साकार होगा,
स्वरूपों का संकल्प साकार होगा...
आ... आ...
काका, पप्पा ने जिनकी खातिर, अपमान-उपेक्षा हँस के सही,
अपमान-उपेक्षा हँस के सही,
गुणातीतभावना प्रगटाने, वीरांगनाएँ माया से लड़ी,
वीरांगनाएँ माया से लड़ी,
काका, पप्पा की आर्ष दृष्टि का और, इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा!
अभिप्राय की भक्ति का और, इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा!

सुहृद्भाव का कलश चढ़ाएँ हम, काकाजी का संकल्प साकार होगा,
स्वरूपों का संकल्प साकार होगा...
आ... आ...
काकाजी ने आशिष बरसाए, अनोखा सेंटर दिल्ली होगा,
अनोखा सेन्टर दिल्ली होगा,
कल उसी मंदिर के शिखर पर, गुणातीत समाज का ध्वज होगा
गुणातीत समाज का ध्वज होगा,
काकाजी ने स्वयं तराशा जिसे, वो हीरा कैसा अनमोल होगा! -२
सुहृद्भाव का कलश चढ़ाएँ हम, काकाजी का संकल्प साकार होगा,
स्वरूपों का संकल्प साकार होगा...

✸✸✸

इ

भजन - 1

(राग – जन, गण, मन...)

इसी जनम में, हम पर भगवन्, ऐसा अनुग्रह कर दो।
भाग्य से जन्म मिला भारत में, सार्थक इसको कर दो।
छोटे-बड़े क्रियायोग सारे, मूर्ति में ही रह कर हों,
भूतकाल अब तो भूलें
चिन्ता भविष्य की छोड़ें
कल आएगी नहीं
वर्तमान में स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव से वर्तें,
जीएं काकाजी की छावनी के हम सैनिक बन के।
मुक्तों को दिव्य मानें
तुम्हें कर्ता-हर्ता जानें
प्राप्ति की मस्ती हो
उद्यम यही आपका रहता, ब्रह्मरूप हो हम वर्तें।
धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद!
हे चैतन्यशिल्पी तुम्हें...

✸✸✸

भजन -1

(राग – वो चांद खिला, वो तारे हंसे...)

उगती प्रभा से, कार्य प्रारंभ में
सहाय करो ऐसी याचना है, }-2
सर्वकार्य में एक ही हेतु, **राजी होवे-2**, एक ही तू
उलझन, विक्षेप, अभाव-अवगुण को
कायम की विदाई दे दूं
संप-सुहृद्‌भाव ऐक्य के हेतु
सहना हो-2, वह सह सकूँ
स्वामिनारायण-3, विनती करूँ...2

घट-घट में, स्थल-स्थल में
आबाल-वृद्ध सभी मुक्तों में
छोटे या बड़े प्रसंग पर
देखना मैं, देखना तुझको भूलूँ ना
दिव्यता-दिव्यता, अखंड रहे ऐसा याचुं मैं
निर्दोषबुद्धि के अमृतपान को
जीवन में-2, पचाऊँ मैं
स्वामिनारायण-3, विनती करूँ...2

निमित्त बनी, कार्य करी
फिर मूर्तिरूपी घोंसले में
मान-अपमान और यश-अपयश को
छोड़ूँ मैं... छोड़ूँ तेरे चरणों में
अखंड अंतर में रहकर
हमारी रक्षा करना तू
दिव्य जीवन के दिव्य आनंद में
मस्त बनी-2, तेरे गुण गाऊँ
स्वामिनारायण-3, विनती करूँ...2

***

भजन - 1

(राग – चेहरे पे खुशी छा जाती है...)

एहसास काकाजी का अपनी रीति, नीति से देते हो; -2
मुक्तों को मूर्ति में खींच के तुम, दिल में उनके बस जाते हो
एहसास काकाजी का अपनी...
काकाजी का परिचय दें कैसे, नहीं इसके सिवा कोई चाह तुझे;-2
मुक्तों को राजी करने की, नित नई रीति-उमंग तुझे;
नित नई रीति-उमंग तुझे
बस मौज में जीव को दे के संबंध, श्रेय करने फिर आप बंध जाते हो-2
मुक्तों को मूर्ति में खींच के तुम, दिल में उनके बस जाते हो
एहसास काकाजी का अपनी...

(राग – प्यार हुआ, इकरार हुआ है...)

साधुता की शान गुरुजी, गुरुनिष्ठ निखालस तुम -2
स्मृतियों की दौलत हो लुटाते, शाश्वत् सुख के राशि तुम -2
साधुता की शान गुरुजी, गुरुनिष्ठ निखालस तुम
स्मृतियों की दौलत हो लुटाते, शाश्वत् सुख के राशि तुम
साधुता की शान गुरुजी, गुरुनिष्ठ निखालस तुम।।

(राग – ओ... मुझे किसी से प्यार हो गया...)

ओ... जीव को हितैषी मिल गया -2
हितैषी मिल गया, परम सुहृद् मिल गया, मुक्तिदाता मिल गया;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...-2
हँसी खेल में जो जीवभाव टाले, प्रभु प्रगटा कर माया तिमिर काटे,
हँसी खेल में जो जीवभाव टाले,
प्रभु प्रगटा कर माया तिमिर काटे,
बन के सच्चा गुलाम, काका का दे पैगाम, किया श्रीजी का काम;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...- 4

(राग – जवां है मोहब्बत हसीं है ज़माना...)

निराला कारीगर, अनिर्देश से है आया;
करूणा करके जिसने, हमें गोद बिठाया -2
चैतन्यों की पल-पल, जिसने परवरिश करी है
जिसने परवरिश करी है

सुख-दुःख का साथी बन के, कुटुंबभाव जगाया, कुटुंबभाव जगाया,
निराला कारीगर, अनिर्देश से है आया;
करूणा करके जिसने, हमें गोद बिठाया।

(राग – एक परदेसी मेरा दिल...)

गुरुजी का हमें तो संबंध मिल गया,
संतरूप में प्रभु स्वयं मिल गया -2
हाँ... साकार ब्रह्म का संबंध मिल गया,
धाम, धामी, मुक्तों का परिवार मिल गया -2

तेरा जन्म, कर्म दिव्य मान के गाएं
जुड़ अभिप्राय में पूर्णता पाएं।
टालने कसर जो तू रास रचाए,
भक्तिरूपी डांडिया हम उसमें लगाएं,
मूर्ति मुक्तों की लूट लें हम, उनको राजी करके तुम्हें वश करें हम
हाँ... गुरुजी का हमें तो संबंध मिल गया,
संतरूप में प्रभु स्वयं मिल गया...
साकार ब्रह्म का संबंध मिल गया,
धाम, धामी, मुक्तों का परिवार मिल गया,
धाम, धामी, मुक्तों का परिवार मिल गया - 3

***

भजन - 2

(राग – एक तेरा साथ हमको दो जहाँ से प्यारा है...)

एक गुरु का साथ,
एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है,
एक गुरु का साथ
एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है,
गुरु है तो हर सहारा है,
ना मिले माया,
ना मिले माया, गुरु का साया हमारे साथ है,
ना मिले माया,
ना मिले माया, गुरु का साया हमारे साथ है,

गुरु है तो हर सहारा है,
एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है,
एक गुरु का साथ

हम जहाँ में थे, ममता के बंधन में, नहीं था ज्ञान गुरु का,
गुरु जो मिल गए, कट गए ये बंधन, मिला जब लक्ष्य पथ का,
आज गुरु का साथ, आज गुरु का साथ हमको जान से भी प्यारा है,
गुरु है तो हर सहारा है,
एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है,
एक गुरु का साथ...

विषय विकारों में डूबे ही रहते थे, नहीं था ज्ञान गुरु का,
जगत के धंधों में उलझे ही रहते थे, नहीं था ज्ञान गुरु का,
अब गुरु की याद, अब गुरु की याद में हर पल हमारी गुजरती है,
गुरु है तो हर सहारा है,
एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है ,
एक गुरु का साथ...

सत्संग जब मिला ईश्वर की कृपा से, भक्ति का फूल खिल गया,
संत फिर मिले गुरु महिमा को जाना, भरम का जाल टूट गया,
गुरु की कृपा ने, गुरु की कृपा ने हमें इस लक्ष्य को बताया है,
गुरु है तो हर सहारा है,
एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है ,
एक गुरु का साथ...

सतगुरु क्या मिले भगवान मिल गए, जीवन का ढंग बदला,
हृदय में आ गए, चुपचाप वो ऐसे कि मन का रंग बदला,
अब तो ये जीवन, अब तो ये जीवन गुरु के चरणों में ही बिताना है,
गुरु है तो हर सहारा है,
एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है ,
एक गुरु का साथ...

***

भजन - 1

(राग- जिन राहों की मैंने चाह न की थी)

ॐ नमो स्वामिनाराणाय-2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो } -3
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो
पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंद, मूलअक्षर श्री गुणातीतानंद
पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंद, मूलअक्षर श्री गुणातीतानंद
पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंद, मूलअक्षर श्री गुणातीतानंद
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो
ॐ नमो स्वामिनाराणाय-2
जय स्वामिनारायण, जपो जय अक्षरपुरुषोत्तम जपो
जय स्वामिनारायण, जपो जय अक्षरपुरुषोत्तम जपो
जय स्वामिनारायण, जय अक्षरपुरुषोत्तम जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो-4
स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो
स्वामिनारायण स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो

***

भजन-1

कमाल है, कमाल है ताड़देव तीर्थ कमाल है-2
अक्षरधाम के दिव्य तख्त पर-2, काकाजी विराजमान हैं।
कमाल है...
कहते हैं जिसे अक्षरधाम, धरती पर बेमिसाल है।
कमाल है...
एक बार जो भी आता है, नैमिषारण्य वो पाता है,
मुक्ति का मार्ग मिल गया, अनुभव सबको बताता है,
पहली नज़र में अपना बनाते-2, गुणातीत की ये पहचान है।
कमाल है...
जात-कुजात ना देखते तुम, प्यार ही प्यार बहाते सदा,
निष्ठा दृढ़ करवा के तुम, प्रभु की मूर्ति लुटाते सदा,
कोस्मोपोलिटन साधु आप-2, काकाजी महाराज हैं।
कमाल है...
दिल्ली सॅन्टर के लिए, किए परिश्रम तुमने तमाम,
अखूट धैर्य रख कर तुमने, बापा का किया संकल्प साकार,
गुणातीत समाज के सर्जक हो तुम-2, ये किसको नहीं ख्याल है।
कमाल है...
वेद-ग्रंथ सब कहते हैं, गुरु की महिमा अपार है,
पूर्ण पुरुषोत्तम भेंट दिए, आपका ये उपकार है,
मर्जी में तेरी मिट जाएं, दिल का यही अरमान है।
जुड़ जाएं तेरे अभिप्राय में,समझें जो तेरा निशान है।
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सबकी यही एक तान है।
कमाल है...
अक्षरधाम के दिव्य...

***

भजन-2

(राग – छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए)

कर दो अर्पण ये तन मन प्रभु के लिए
जिसने जीवन दिया भक्ति ही के लिए।
हर कर्म से जरूरी, प्रभु नाम है

कर्म सब कुछ नहीं, जिन्दगी के लिए।
कर दो...

काकाजी मिल गए, गुरु की सेवा मिली
जिन्दगी को नया रास्ता मिल गया -2
जब से संबंध तुम्हारा हुआ है, प्रभु
मेरे जीवन में सुंदर चमन खिल गया -2
तेरे दर्शन से वो, रोशनी मिल गयी
मैं भटकता था, जिस रोशनी के लिए। कर दो...

मेरा सौभाग्य, मुझको जो तुम मिल गए,
मुक्त मुझको किया, गोद में ले लिया -2
हे दयालु, ये कैसी दया है तेरी,
अल्प संबंध में सब कुछ मुझे दे दिया -2
मेरे मन का जगत भी, छुड़ा दो प्रभु
कर दूं याहोम जीवन मैं तेरे लिए। कर दो...

प्रभु कर्ता भी तुम और हर्ता भी तुम
अपने भक्तों के जीवन के आधार तुम -2
'मैं' मिटाकर, मुझे दे दो भक्ति प्रभु
मुझ पे इतना-सा कर दो ये उपकार तुम -2
छोड़ दे संग, मन और बुद्धि का हम
दास बन कर रहें, मुक्ति के लिए।
कर दो...

✸✸✸

भजन - 3

(राग – तेरी पनाह में हमें रखना...)

करुणानिधि, हे काकाजी हमें
निर्दोष, निर्मल, निष्ठावान बनाना।
महिमा तेरी समझ सकें काका,
ऐसा आत्मीय सेवक बनाना।

गुरुभक्ति में मगन रहें हम } -2
सेवा में तेरी लगा रहे मन। }

अक्षरधाम के मालिक हो तुम, -2
हमको भी अक्षररूप बनाना। हो...
करुणानिधि...-2

संप, सुहृद्‌भाव और एकता
का बल ऐसा दे दो काका! } -2
धन्य-धन्य हो काकाजी तुम, -2
सच्चा मुझको सेवक बनाना। हो...
करुणानिधि...-2

क्षमावान कोई तुझसा नहीं,
और मुझसा नहीं कोई अपराधी। } -2
पुण्य की नगरी में भी मैंने, -2
पापों की गठरी ही बांधी। हो...
'गर हो सके मुझे माफ करना,
निर्दोष निर्मल निष्ठावान बनाना!
करुणानिधि...-2

✷✷✷

भजन - 4

(राग – मेरी सांसों में बसा है...)

करुणा बहुत करी है, मेरे घनश्याम
बेमोल दे दिया अक्षरधाम-2
करुणा बहुत करी है, मेरे घनश्याम
बेमोल दे दिया अक्षरधाम-2
दिव्य विभूति पाई है, गुरुजी के रूप में
टालने कसर हमारी ही ये करते श्रम तमाम
बेमोल दे दिया...-2
करुणा बहुत... बेमोल दे दिया...

योगी का संकल्प तुम्हीं हो, काका का परिचय भी तुम्हीं हो,
भक्तों के सरताज़ भी तुम हो, पराभक्ति का स्वरूप तुम्हीं हो, } -2
सामर्थ्य तेरा पहचान के, अनुवृत्ति जान के,
प्रभु नाम का नमक डाल के, कर्ता-हर्ता मान के,
मूर्ति में ही रह कर करने अब तो सारे काम

बेमोल दे दिया...-2
करुणा बहुत... बेमोल दे दिया...

संगी साथी ऐसे को बनाएं, तुमसे जो संबंध बढ़ाए }-2
देह जुदा पर दिल एक हो जाए, भगवदी से ऐसे जुड़ जाएं,

मुक्तों की महिमा जान के, स्वरूप ही मान के,
लीला तेरी है मान के, सर्वोपरि जान के,
सुहृद्भाव बढ़ाना ही बस अपना हो निशान!

बेमोल दे दिया...-2
करुणा बहुत... बेमोल दे दिया...

प्रत्यक्ष की निष्ठा हम दृढ़ कर पाएं, महिमा तेरी हम हर पल गाएं, }-2
प्राप्ति में ही अब खोकर खुद को, परछाईं तेरी बन जाएं,

आसक्तियां सारी छोड़ के, सब तुझ में ही जोड़ के,
तेरा प्रकाश बन कर जीएं, तुम्हें सर्वस्व सौंप के,
जीवन ऐसा जीएं कि उज्ज्वल होवे तेरा नाम।
बेमोल दे दिया...
करुणा बहुत करी है...
बेमोल दे दिया...-2
दिव्य विभूति पाई है...
टालने कसर हमारी ही...

***

भजन - 5

(राग – सोजा राजकुमारी सोजा...)

काका! काका!
काका! गुरुहरि प्यारे काका!-2
मुक्तों के प्राण-आधारे काका!
काका! गुरुहरि प्यारे काका!

जो एक बार आप तक आया }-2
करी कृपा उसको अपनाया
उठा धूल से गोद बिठाया-2
मैले थे कई जन्मों के हम-2
निर्मल हमें बनाया काका
निर्मल हमें बनाया काका... काका गुरुहरि...2

हे युगपुरुष परम कल्याणी }-2
तेरी पावन अमृत वाणी
अंतर सुन्दर स्वच्छ बनाए-2
मुक्ति की राह दिखलाए-2
प्रगट ब्रह्मस्वरुप मिले तुम
जागे भाग हमारे काका... काका गुरुहरि...2

गुणातीत समाज बनाकर }-2
अक्षरधाम धरा पर लाए
हैं उपकार तुम्हारे इतने-2
हैं आकाश पे तारे जितने-2
हैं उपकार तुम्हारे उतने
धन्यवाद प्रभु प्यारे काका...
काका! गुरुहरि प्यारे काका!-2
मुक्तों के प्राण-आधारे काका!
काका! गुरुहरि प्यारे काका!

***

भजन - 6

(राग – अजब तेरी कारीगरी रे करतार...)

काकाजी तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम-2
भवसागर से पार उतारे-2
बस तेरा एक नाम।
काकाजी तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम-2

जीवभाव से युक्त हूँ काका, इसे मिटाए रखना-2
मेरे मन में अपनी भक्ति की, ज्योति जगाए रखना-2
तुम दाताओं के दाता, डूबी नैया पार लगाता
तुम्हें कृष्ण कहूं या राम।
काकाजी तुम्हें... ओ... ओ...

तुम करुणा के सागर दाता, करुणा ही बरसाते-2
तुम ऐसे शिल्पी हो काका, जीव को ब्रह्म बनाते-2
तुम सच्चा सौदा करते, दुःख लेकर सुख दे देते
अरे वाह रे पूरन काम!
काकाजी तुम्हें...

हे कैवल्यमूर्ति, तुमको हम पहचान पायें-2
तेरे अभिप्राय में काका, तन-मन से जुट जायें-2
अभिप्राय की भक्ति सफल हो, बस तेरा ही एक बल हो
हम पाएं तेरा धाम। काकाजी तुम्हें... -2

***

भजन - 7

(राग – दिल है कि मानता नहीं...)

काकाजी तो अब भी हैं यहीं-2
स्वभावों में उलझा, मन ये हमारा, पहचानता ही नहीं } -2
ओ... काकाजी तो...-2

भूलें हमारी, हँस के वो सहते, फिर भी हम सीखे नहीं,
रागों से लिपटे, विषयों में डूबे, समय क्यों गवाएं यूं ही,
मौका सुनहरा ये, फिर न मिलेगा, खाली न जाए कहीं...
काकाजी तो...2

संबंध में उनके, एक बार आए, पात्रता काफी यही
तैयार बैठे वो, सब कुछ लुटाने, हम मगर लेते नहीं,
एक पग बढ़े हम, वो सौ पग बढ़ेंगे, कर लो ये दिल से यकीं...
काकाजी तो...2

आगे बढ़ें हम, उनका परिश्रम, सफल हो मैत्री रूप में,
मुक्तों में रहकर बोले, पर हम न समझें, देखें उन्हें मानवरूप में,
स्नेह जता के, प्रसंग बना के, रस्ता दिखाते सही...
काकाजी तो...2

योगी बापा का कार्य जो करते, प्रभु को हैं जो धारे हुए
गुणातीत ज्ञान की ज्योत जला के, जिन्होंने हैं उजाले किए,
जहां भक्त ऐसे, जहां संत ऐसे, बसते काकाजी वहीं...
काकाजी तो....2 स्वभावों में...
ओ... काकाजी तो...–2

***

भजन - 8

(राग – तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त...)

काकाजी हमारे मस्त-मस्त-2
विषयों से मुक्ति के दाता-2
तू अखंड आनंद बरसाता।
चैतन्य मंदिर के-2 निर्माता
हाजिर अखंड हर वक्त-वक्त।
काकाजी हमारे मस्त-मस्त-4
} -2

हाथ जोड़ के और दिल को खोले, कर ले वो ही जो साधु बोले-2
ये सूत्र दिया है बार-बार-2
मन और बुद्धि के पार-पार, **सत्संग का ये ही-2** सार-सार,
पर भेजा हमारा सख़्त-सख़्त।
काकाजी हमारे...-4

सब आत्मीय हैं, बस ऐसा गिनना, आत्मीय तो मुझको है बनना-2
मत देख किसी का दोष-दोष-2
बस इतना रखना होश-होश, **प्रकटेगी-2** आत्मज्योत-ज्योत,
अफसोस ना कर हो मस्त-मस्त।
काकाजी हमारे...-4

सच्चे साधु से संबंध बना ले, सब कुछ खोकर साधु को पा लें-2
मौका मिलता है कभी-कभी-2
तू छोड़ के बातें सभी-सभी, **मन जोड़ संत से-2** अभी-अभी,
फिर कभी न आये वक्त-वक्त।
काकाजी हमारे...-4

भगवदी के संग तू प्रीति कर ले, सेवा भक्तों की महिमा से कर ले-2
काटे बंधन का जाल-जाल-2
है इसमें ही सब माल-माल, **तेरी विषय वासना-2** टाल-टाल
बख़्शे अक्षर का तख़्त मुफ्त।
काकाजी हमारे... विषयों से मुक्ति... काकाजी हमारे...

✷✷✷

भजन - 9

(राग – मामा मियाँ छड दे यारी...)

काकाजी महाराज ने हमको, गुरुजी दे दिए पारसमणि-3
काकाजी की जय जय बोलो, योगीजी की जय जय बोलो-3

काकाजी महाराज तेरे जलवे निराले हैं,
मुफ्त में दे दिए गुरुजी हम सब किस्मत वाले हैं।
गुरुजी तुमको लग जाए, हम सब की उमरिया,
जियो हजारों बरसों मेरे प्यारे सांवरिया।
काकाजी के राजा हो तुम, सब के दिल पर राज करो अब
सब के दिल पर राज करो अब।
काकाजी की जय जय बोलो, योगीजी की जय जय बोलो-3

इन्द्रियां-अंतःकरण अब हमको आड़े न आ पाएं,
नात जात और वासना को अब हम तो ठुकराएं।
प्रीति और विश्वास की डोर पकड़ जीत जाएं,
भूत और भावि भूल, प्रभु तुझमें खो जाएं।
साधन करे बिना कोई भी दोष कृपा से टल जाएंगे,
दोष कृपा से टल जाएंगे।
काकाजी की जय जय बोलो, योगीजी की जय जय बोलो-3

संबंध साधु से करना जरूरी होता है,
दास का दास बन जाना जरूरी होता है।
प्रकृति प्रारब्ध टलेंगे, तब ही मुक्तों,
तंत्र बनेगा दिव्य अपना, तब ही मुक्तों।
सुहृद्भाव रख कार्य करें, तो साधु राजी हो जाएगा,
साधु राजी हो जाएगा।
काकाजी की जय जय बोलो...
काकाजी महाराज ने हमको, गुरुजी दे दिए
काकाजी की जय जय बोलो

***

भजन - 10

(राग – जीवन चलने का नाम...)

काकाजी तुम्हें प्रणाम, काकाजी तुम्हें प्रणाम-2
रचयिता सुहृद् समाज के जो, प्रगट हुए आज धरा पर वो,
गंगोत्री आत्मीयता की है जो, करे कल्याण संबंध से ही वो; }-2
काकाजी तुम्हें प्रणाम... ॥-3

कामना कोई भी लेकर जो आपके दर पे आया
उसके मनोरथ पूर्ण किये, प्रभु से संबंध कराया }-2
प्रगट से जोड़ दिया उसको, प्रारब्ध से मुक्त किया उसको
आधार प्रभु का देकर के, कर दिया निश्चिंत फिर उसको
काकाजी तुम्हें प्रणाम... ॥-2

हो... प्रगट आज भी हो काकाजी, अनुभव आप कराते
भूल करें या प्रसंग बने कोई, रक्षा आप ही करते }-2
छोड़ दें हम मन-बुद्धि को, मूर्ति में स्थिर करके मन को
सर्वोपरि सत्ता मान तेरी, करें वही तुम्हें पसंद है जो
काकाजी तुम्हें प्रणाम... ॥-2

प्रगट हुए जो आप, तभी माया के बंधन टूटे,
संबंध से किया सनाथ, जगत के रिश्ते-नाते छूटे। }-2
भूले नहीं तेरे परिश्रम को, करना है राजी बस तुमको
समर्पण सब करके अपना, बने प्यादा तेरा अब तो
काकाजी तुम्हें प्रणाम...
रचयिता सुहृद् समाज के जो...
गंगोत्री आत्मीयता की है जो...
काकाजी तुम्हें प्रणाम...

***

भजन - 11

(राग – ऐ मालिक तेरे बंदे हम...)

काकाजी के हैं सेवक हम, तेरा नाम हम करें रोशन
सुहृद्भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें, तुमको जो सदा है पसंद।
काकाजी के हैं...

रोम-रोम में शास्त्री महाराज, श्वासोश्वास हैं योगी महाराज,
गुरुभक्ति अनूठी जो तुमने करी, देगी युगों-युगों तक प्रकाश,
झेला योगी का तुमने वचन, और देखे असली नारायण।
सुहृद्‌भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें...
काकाजी के हैं...

करके 'स्व' का विसर्जन बने, अखंड बापा के धारक तुम,
करके 'स्व' का विसर्जन बने, श्रीजी के रहने का धाम तुम,
अद्‌भुत सामर्थ्य के स्वामी होकर के भी, बने भक्तों के गुलाम तुम,
ऐसे गुणातीत कबीले के हम, ये ही याद रखें हरदम।
सुहृद्‌भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें...
काकाजी के हैं...

नई सदी में ये संकल्प करें, बस तेरे ही होकर रहें,
मनभेद छोड़ें, मतभेदों में झुकें, अब मिलजुल के जीवन जीयें,
मान कर सत्य तेरे वचन, करें नए युग का अब तो आरंभ,
सुहृद्‌भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें...

***

भजन - 12

(राग – हर घड़ी बदल रही है रूप जिंदगी...)

काकाजी का जंगम मंदिर बन गए हैं जो, } -2
Abott के Goodman, काकाजी ने गायब किया एक '0'
Godman बने, Goodman से वो,
अनुरूप स्वरूप, काकाजी के वो,
पहचान लें, दिनकरभाई को...।

बरसों पहले काकाजी, नाम अपना 'दिनकर' लिखते,
आर्ष दृष्टा काकाजी का, इशारा हम आज तो समझें,
कोसों दूर पर, दिल के पास वो,
दिल की धड़कन, काकाजी की वो,
अनुरूप स्वरूप, काकाजी के वो,
पहचान लें, दिनकरभाई को...।

ब्रह्मविद्या जो सिखाए, गुणातीत अस्मिता प्रगटाए,
सौम्य, सरल सेवक-सा, धैर्य सभी को छू जाए,

संबंध में इनके, आता है जो,
झुकने को हो जाए, मजबूर वो...
काकाजी का जंगम मंदिर बन गए हैं जो,
Abott के Goodman, काकाजी ने गायब किया एक ‘0’
Godman बने, Goodman से वो,
अनुरूप स्वरूप, काकाजी के वो,
पहचान लें, दिनकरभाई को...।

(राग – तुम तो ठहरे परदेसी...)

भले ठहरे परदेसी, भले ठहरे परदेसी,
सदा साथ निभाते हो...
भले ठहरे परदेसी, दिल में बसे हुए हो,
हमारे बुलाने पर, -2
पहली फ्लाइट से आ जाते हो...

✸✸✸

भजन - 13

(राग – रिश्तों के भी रूप बदलते हैं...)

काकाजी अब भी प्रगट ही हैं,
रक्षा हमारी पल पल करते हैं;
जब भी पुकारा है, वे दौड़े आए हैं,
अनुभव है सबका यही,
क्योंकि काकाजी के रूप स्वयं श्रीजी-2
हाँ उनके द्वारा रहें प्रगट श्रीजी

(राग – जब मन में उठी, उमंगों की धुन...)

हमार जीवन में आए गुणातीत संत,
हमार अंतर के कुरुक्षेत्र का हुआ अंत,
काकाजी रूप में प्रगटे हैं स्वयं - शगुन, प्रभु
अब तक का सब माफ़ किया उन्होंने,
भुक्ति, मुक्ति, स्थिति बख़्शिश दी उन्होंने,
हरे अनुग्रह से, प्रगटाओ ब्रह्मानंद...
प्रभु, शगुन... काकाजी, मेरे प्रभु।

(राग – रिश्तों की पूजा जहां हो...)

गुणातीत संत जहां हैं, प्रभु प्रगट ही वहां हैं;
कर लें उनसे दृढ़ संबंध, हो जाए धन्य ये जीवन,
भक्तों में खोना है, मर्जी में रहना है
'स्व' को मिटाना है, हमें तो बनना है...
परिचय प्रत्यक्ष का, प्यादा प्रत्यक्ष का-2

(राग – एक दूजे में है तेरी-मेरी जान...)

मिले प्रगट प्रभु हमें आज
उन्हीं के गुण गाएं हम, उन्हें पहचानें हम।
उनका माहात्म्य ये भक्त समाज,
उसी में खो जाएं हम, उनकी सेवा कर लें हम।
हो... देह मानव का पाया, प्रभु संबंध भी पाया
अब और सभी छड के, मूर्ति को पा लें हम,
मूर्ति को पा लें हम
मिले प्रगट प्रभु हमें आज
उन्हीं के गुण गाएं हम, उन्हें पहचानें हम।
हो... देह मानव का पाया, प्रभु संबंध भी पाया
अब और सभी छड के, मूर्ति को पा लें हम,
मूर्ति को पा लें हम...

✸✸✸

भजन - 14

(राग – हे करुणाना करनारा...)

काकाना हृदय वसनारा, तारी करुणानो कांई पार नथी }-2
प्रभुने अखंड धरनारा, तारी करुणानो कांई पार नथी

बौद्धिक गणत्रीओ अमारी, जीवलक्षी क्रियाओ तमारी-2
जीवनुं मंगळ करनारा, तारी करुणानो कांई पार नथी काकाना हृदय...

चेतनाना डाघ ओळखतो, अेने काढवा मांही भळतो-2
चैतन्यशुद्धि करनारा, तारी करुणानो कांई पार नथी काकाना हृदय...

जुदा-जुदा हता अमे फूलो, तारा हेते माळामां गुंथाया-2
सुहृद् समाज गढनारा, तारी करुणानो कांई पार नथी काकाना हृदय...

✸✸✸

भजन - 15

(राग – गंगा तेरा पानी अमृत...)

काका तेरी कुर्बानी, शब्दों में न समाए
इतिहास गुणातीत समाज का, तुम बिन लिखा न जाए
काका तेरी कुर्बानी... आ... आ... आ...

जंग खेल कर बापा ने एक योजना नई गढ़ी थी,
जिसमें निज सर्वस्व की आहुति काका तुमने दी,
अपनों से तुम्हें मिली उपेक्षा, फिर भी तुम मुस्काए।
काका तेरी कुर्बानी... आ... आ... आ...

देश-विदेश में आज जो सत्संग दिखता हरा-भरा है,
शून्य में से इसका सर्जन काका तुमने ही करा है,
वृक्ष बड़ा फलदार भले ही, जड़ में आप समाए।
काका तेरी कुर्बानी...

शास्त्रीजी का संकल्प झेला, जानी योगी की मर्जी,
उत्तर के मुक्तों का उद्धार करने, दिल्ली भेजे गुरुजी,
अक्षरपुरुषोत्तम महाराज को यमुना तट पधराए।
काका तेरी कुर्बानी...

दोहा– स्वामिनारायण धर्म को जो, उत्तर भारत में लाए।
ऐसे गुरुजी की भेंट दी, ऋण कैसे तेरा चुकाएं।।

गुरुजी-गुरुजी आप जैसा कोई नहीं।
गुरुजी-गुरुजी आप जैसा कोई नहीं।।
आप जो हमको मिले भाग्यशाली हमसा नहीं।-2
आप जो हमको मिले भाग्यशाली हमसा नहीं।।
गुरुजी-गुरुजी आप जैसा कोई नहीं-3

(राग – होंठों पे सच्चाई रहती है...)

साक्षात् गुणातीत साधु हो
अखंड प्रभु के धारक हो
काकाजी का परिचय बन के-2
मूर्ति ही लुटाने आए हो... } -2

एक साल नहीं दस साल तलक, दिल्ली में विकास न हो पाया,-2
अखूट धीरज रख कर तुमने, समाज नया यहां रचाया-2
जीव में से तुम शिव करने को, गरजू हरदम ही बनते हो,
काकाजी का परिचय बन के-2
मूर्ति ही लूटाने आए हो...

चाहे जैसा कोई तेरे साथ बरते, साधुता नहीं छोड़ी तूने,-2
समझते हुए बुद्धू भी बने,
काकाजी की रीत ना छोड़ी तूने-हाँ उनकी रीत ना छोड़ी तूने,
सुहृद्भाव और सर्वदेशीयता, वर्तन से ही पैगाम देते हो,
काकाजी का परिचय बन के-2
मूर्ति ही लूटाने आए हो...-3

समग्रभाव और संयुक्तरूप से जीता दिव्य समाज हो,
वैभव के पीछे अंधे होकर शामिल होड़ में न हों,
योगी बापा का निशान वो हम कहीं चूक न जाएं।
काका तेरी कुर्बानी शब्दों में न समाए
इतिहास गुणातीत समाज का तुम बिन लिखा ना जाए
काका तेरी कुर्बानी...-3

***

भजन - 16

(राग – जिन्दगी प्यार का गीत है)

काका तुम जो मुझे मिल गए, मुझको जीवन दोबारा मिला है-2
बस गई फिर से दुनिया मेरी, जब से संग तुम्हारा मिला है...

जब से तेरा सहारा मिला, जिंदगी से न कोई गिला-2
मेरी आशा के सागर हो तुम, क्यों न हमको किनारा मिलेगा
काका तुम जो...

मेरे जीवन में इतने थे गम, ऐसा लगता था होंगे न कम-2
जब से मूरत तेरी देख ली, दिल ये दीवाना गाने लगा है
काका तुम जो...

अपनापन जो जगत से मिला, स्वार्थ था वो, अपेक्षा भरा-2
प्रेम निरपेक्ष पाकर तेरा, जग ये फ़ीका-सा लगने लगा है
काका तुम जो...

इतना विश्वास तो हमको है, तुम सदा ही हमारे रहोगे-2
गल्तियाँ, 'गर जो हमसे हुई, हँस के तुम माफ़ करते रहोगे
काका तुम जो...

तेरे द्वारे पर जो आएगा, अक्षरधाम वही पाएगा-2
ऐसा मौका न फिर आएगा, काका ने खुद ही मौका दिया है
काका तुम जो... बस गई...

***

भजन - 17

(राग – जब तक मैंने समझा जीवन क्या है, जीवन बीत गया...)

काका, पप्पा, स्वामी, अंतर्यामी, **प्रभु धर के धरती पे आए -2**
भक्तों के दुःख को हरने, सुख से भरने, **दिल में आन समाए-2**

जब से प्रीत लगाई है तुमने, जग भी अपना न लागे
ये ही निशानी है भगवत्स्वरूप की, सबको वो अपना ही लागे
अब मन की कोई चाह नहीं है काकाजी तुम को पा के
स्वामिजी तुमको पा के
कर दो पार ये नैया काका मेरे, कर दी है तेरे हवाले
जैसे भी चाहे बहा ले
काका, पप्पा, स्वामी...

भक्तों का भक्तों से संबंध बना के, जीवन को अमृत बनाया
संकल्प पूरे किए उन सभी के, जो भी संबंध में आया
रीति गुणातीत बताई सभी को, **हृदय में आन समाए -2**
भाग्य से पाया है तुमको, प्रभु हमें **अपना बना कर ही रखना-2**
काका, पप्पा, स्वामी...

आपका बन के जीऊं जहाँ में, रीति तू वो ही बताना
जिसमें भी राजी तुम हो काकाजी, वैसी ही भक्ति कराना
दोष न देखूं प्रभु मैं किसी का, **निर्दोषबुद्धि तू देना-2**
इतना बल देना मुझको मेरे काका, **ऋण तेरा भूल न पाऊं-2**
काका, पप्पा, स्वामी...

साक्षात् सरलता की मूर्ति तो तुम हो, हमको भी सरल बनाना
मैत्री भाव है प्राण तुम्हारा, मेरे हृदय में जगाना

तेरा स्वरूप वो मैं पहचान पाऊं, **इतनी कृपा तू करना-2**
अक्षरधाम के मालिक तुम हो काका, **अक्षररूप बनाना-2**
काका, पप्पा, स्वामी...
भक्तों के दुःख को हरने... }-2

✸✸✸

भजन - 18

(राग – दुल्हे का सेहरा सुहाना लगता है...)

गुरुआज्ञा ही बस बना तेरा जीवन, काकाजी से संबंध वो दौलत तेरी है,
जहां में हो रोशन काकाजी की शोहरत, भक्तों की भक्ति इबादत तेरी है...

काकाजी को साक्षात् प्रगटाया है,
अमर काकाजी को तुमने तो किया है, }-2
नूर तूने तो गुणातीत का पाया है,
कोहिनूर अनमोल काकाजी का है तू ,-2
उनका ही पैग़ाम तूने फैलाया है।
काकाजी को...-2

साधुता का चिदाकाश तू परम भागवत संत,
चेतना के दाग़ मिटाने, कला करे तू अनंत, }-2
गुरु अभिप्राय का चिंतन, गुरुमूर्ति का ही मनन,
अनोखी तेरी गुरुभक्ति को कोटि - कोटि वंदन,
वंदन-वंदन, कोटि वंदन, -2
वंदन... तुम्हें वंदन... वंदन... कोटि वंदन... -2
वंदन... वंदन... वंदन... वंदन...
वंदन, वंदन, वंदन, वंदन
वंदन, तुम्हें वंदन... कोटि वंदन
ब्रह्मानंद और ब्रह्मज्ञान ही लुटाया है,-2
एकांतिक हमें करने धरा पर आया है,
कोहिनूर अनमोल काकाजी का है तू,
उनका ही पैग़ाम तूने फैलाया है
काकाजी को...

जीवों को, सुखी करना ही, तेरा एकमात्र उद्यम,
भक्तों की रक्षा, हेतु बदले, प्रकृति के भी नियम, }-2

एक हो, हमारा विचार, वाणी और वर्तन,
निराकार कर दो हमको हे साकार भगवन् ,
मुक्तों...

मुक्तों में जो तुमको निहार पाया है,
उसके लिए परम सुखदायी माया है,
कोहिनूर अनमोल काकाजी का है तू,
उनका ही पैग़ाम तूने फैलाया है...
काकाजी को साक्षात्...-4

✷✷✷

भजन - 19

(राग – मारी ए कल्पना हती तू विसरी मने...)

दोहा- तीर्थों में, मंदिरों में जिसे ढूंढते हैं लोग,
साधन से वो मिलेगा यहीं, मानते हैं लोग।
मानव स्वरूप में वही, मौजूद है यहां,
प्रभु प्रगट हैं, पर नहीं पहचानते हैं लोग।

हुं... हुं... हुं... हुं...
किया था नहीं प्रयास प्रभु के लिए मैंने-2
माँ बन के फिर भी गोद में उठा लिया तुमने,
पल-पल मेरे चैतन्य का जतन किया तुमने,
कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में!!

उद्वेग चिंता की जगह आनंद भर दिया -2
आश्रय में ले के आपने निश्चिंत कर दिया,
करी नज़रअंदाज़ गल्तियां मेरी तुमने,
प्रायश्चित् उनका भी आपने अपने सिर लिया,
विष ले के जीवन का मेरे अमृत दिया तुमने,
अवतारों को दुर्लभ वो जोग दे दिया तुमने,
पल-पल मेरे चैतन्य का...-2
कमाल है गुरुजी आए...

संबंध तेरा पाया तो जग छू नहीं पाया,
कृपा से जीवन में मेरे प्रभु को बसाया।

(राग–जोतो ज रहयो बस...)

दर्शन जो तुम्हारा पाया तो,
दर्शन जो तुम्हारा पाया तो, प्रभु का अहसास हुआ मुझको } -2
मन की गति पूर्णविराम हुई, नैमिषारण्य मिला मुझको।

जन्मों की मेरी प्यास बुझी, ब्रह्मरस से भरी बड़ी आंखों से -2
नेति-नेति वेदों ने कहा,
नेति-नेति वेदों ने कहा, साकार वो तत्त्व मिला मुझको।

अंतर्द्वंद्व मेरे शांत हुए कथावार्ता दर्शन से तेरे -2
कुरुक्षेत्र का मेरे अंत करे,
कुरुक्षेत्र का मेरे अंत करे, वो सारथी कृष्ण मिला मुझको।

सागर हो तुम, मैं लहरी हूँ, तुम सूर्य मैं किरण,
अनुग्रह है करुणामय तेरा, किया मुझको जो ग्रहण।

शब्दों में ना बयान हो इतना दिया तुमने, -2
रखूं अखंड याद, कितना कुछ किया तुमने,
पल-पल मेरे चैतन्य का जतन...
कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में...-4

***

भजन - 20

(राग– कांची रे कांची रे...)

हे... हो...
काका रे काका रे, आज मिला मौका
नज़राना तुम्हें देने का,
हो... हो...   काका रे काका रे, आज मिला मौका
नज़राना तुम्हें देने का,
हो... हो... नज़राना तुम्हें देने का,

आप मिले मुफ़्त में हमें यहीं, सो हम माहात्म्य तेरा समझे नहीं,
हो... आप मिले मुफ़्त में हमें यहीं, सो हम माहात्म्य तेरा समझे नहीं,
अब तो समझाना, पहचान तेरी कराना,
अब तो समझाना, पहचान तेरी कराना,
इसे तू भेंट मान लेना रे,

काका रे काका रे, आज मिला मौका
नज़राना तुम्हें देने का,
हो... हो... नज़राना तुम्हें देने का,

अल्पसंबंधी जो तेरा होवे, उसके संग मैत्री खरी होवे -2
ओतप्रोत हो पाएं, प्रार्थना कर पाएँ -2
इसे तू भेंट मान लेना रे,
काका रे काका रे, आज मिला मौका
नज़राना तुम्हें देने का,
हो... हो... नज़राना तुम्हें देने का,

व्यापक में दर्शन बस तेरा करें, मूर्ति से अलग न हमें कोई करे
व्यापक में दर्शन बस तेरा करें, मूर्ति से अलग न हमें कोई करे
सारा संभालेंगे, हमें संभाल तू,
सारा संभालेंगे, हमें संभाल तू,
इसे तू भेंट मान लेना रे,
काका रे काका रे, आज मिला मौका
नज़राना तुम्हें देने का,
हो... हो... नज़राना तुम्हें देने का...
काका रे काका रे, आज मिला मौका
नज़राना तुम्हें देने का,
हो... हो... नज़राना तुम्हें देने का...
हो... नज़राना तुम्हें देने का...
हो... नज़राना तुम्हें देने का...

***

भजन - 21

काकाजी और पप्पाजी, गुणातीत समाज के सर्जक हैं,
रीत भिन्न पर, ध्येय एक ही, दोनों ब्रह्मस्वरूप हैं।
दोनों ने गुणातीत वृक्ष का किया लहू से सिंचन है,
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...

काकाजी और पप्पाजी ने जुगलबंदी कुछ ऐसी रचाई
दिव्य रास को उनका देखन ब्रह्मसृष्टि है द्वार पे आई
हे मुक्तों के प्रतिपालक आप स्नेह का सावन हैं
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...
दोनों ने गुणातीत वृक्ष का किया लहू से सिंचन है,
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...

पप्पाजी ने काकाजी की मूर्ति संग फोटो खिंचवाई
दिल्ली मंदिर में वहीं पप्पाजी की मूर्ति पधराई
उनके ध्येय और आदर्शों को भूलें तो हम कृतघ्न हैं
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...
दोनों ने गुणातीत वृक्ष का किया लहू से सिंचन है,
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...

सुहृद्भाव है नींव हमारी, आत्मबुद्धि और प्रीति हो,
लौकिक गिनती रहे कहीं ना, सेवा-भक्ति की रीति हो,
अपनापन है सत्संग सच्चा, काकाजी का पैग़ाम है,
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...
दोनों ने गुणातीत वृक्ष का किया लहू से सिंचन है,
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...
काकाजी और पप्पाजी, गुणातीत समाज के सर्जक हैं,
रीत भिन्न पर, ध्येय एक ही, दोनों ब्रह्मस्वरूप हैं।
दोनों ने गुणातीत वृक्ष का किया लहू से सिंचन है,
आद्य सर्जक मंगल मूरत युगलबंधु को वंदन है...
विभूतिजन को वंदन है...   युगलबंधु को वंदन है...

✷✷✷

भजन-1

(राग – धीरे-धीरे प्यार को बढ़ाना...)

गुणातीत जैसी है छबि इनकी
मानस पुत्र काकाजी के }-2
अल्प संबंधी में भी करते हैं
दर्शन ये काकाजी के
गुणातीत जैसी है...

वचन पे काकाजी के, दिल्ली में चले आए
बाधाओं-विपदाओं से, डिगे नहीं कभी;
बनवा कर ताड़देव, काकाजी का दिव्य स्वप्न
आपने साकार किया है, यहाँ अभी
धन्य है आपकी गुरुभक्ति
सेवक हो सच्चे काकाजी के
गुणातीत जैसी...

जिसका भाव जैसा है, वैसे रूप में ही आप
बने पथ प्रदर्शक, हर जीव के लिए
भक्तों में रसबस होकर, उनके दुःख स्वयं लेते
सहने को तैयार कुछ भी, मुक्तों के लिए
ऐसे गुरुजी हमको भेंट दिए
ऋणी हम सब हैं काकाजी के
गुणातीत जैसी...

हँसते-खेलते हुए ही, अपना बना लेते हैं
अंतर में भर दें, आनंद ही आनंद
प्रकृति प्रारब्ध को तो, सहज टाल देते हैं
रख देते मन में मूर्ति प्रभु की सुखकंद
सामर्थ्य अपना छुपाकर रखते,
निर्मानी शिष्य काकाजी के
गुणातीत जैसी...

आपकी रुचि में रहें, ये बात करते हैं लेकिन
भागते रहते हम मन की दिशाओं में

मायिक दृष्टि से हम, माहात्म्य ना समझ पाएं
हित न देखें, आपकी सारी क्रियाओं में
पहचानें आपको, ये दिलवाओ
आशीर्वाद काकाजी के
गुणातीत जैसी... ओ लाड़ले ये काकाजी...3

✵✵✵

भजन - 2

(राग - देख तेरे संसार की हालत...)

गुणातीत की परंपरा की, तुम हो अजोड़ मिसाल -2
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2
काकाजी की शान बढ़ाना यही है तेरा निशान।
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2
काकाजी के राजदुलारे, सोनाबा के तुम हो प्यारे,
पप्पा स्वामी भी हैं कहते, हो काका को अखंड धारे,
सभी स्वरूपों के मन भाये, तुम वो पात्र महान।
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2
गुणातीत की परंपरा...
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

अपना स्वरूप सबसे छिपाकर, हम जैसा ही जीवन जीते,
केवल अपने संकल्प से, दिव्य दृष्टि से सबको सेते,
भूलेंगे हम कैसे गुरुजी, ये तेरा उपकार।
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2
गुणातीत की परंपरा...
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

महिमा तेरे रोम-रोम में, महिमा की ही राह दिखाते,
करुणा ही करुणा बरसाते, दोष हमारे कभी ना गिनते,
तेरा प्रत्यक्ष वर्तन ही, देता हमको ये पैगाम।
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2
गुणातीत की परंपरा...
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

संबंध में तेरे जो भी आया, निर्दोष तुमने उसे बनाया,

कभी अपेक्षा कोई ना रखी, निर्मल प्रेम सदा बरसाया,
देकर तेरा संबंध गुरुजी, किया है हमको निहाल।
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम - 2
गुणातीत की परंपरा...
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

दर्शन तेरा जो भी करता, जगत उसी पल फीका बनता,
मनबुद्धि दिव्यता को पाती, जीवन भी है दिशा बदलता
ब्रह्मरसभरी बड़ी ये आंखें, करती हैं कमाल!
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2
गुणातीत की परंपरा...
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

बुद्धिशाली होकर भी तुम, सेवकभाव की रीत से जीते,
बनो पनौते पुत्र प्रभु के, संदेश यही हम सबको देते,
तेरी मर्जी में कर दें अब, खुद को हम कुर्बान!
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2
गुणातीत की परंपरा...
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

कितना शुभ अवसर ये आया, धन्य तुम्हीं ने हमें बनाया,
खो जायें अभिप्राय में तेरे, रहे ना कुछ भी प्रिय हमारा,
पहचानें स्वरूप को तेरे, यही है एक अरमान!
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

गुणातीत की परंपरा की, तुम हो अजोड़ मिसाल
गुरुजी तुमको कोटि प्रणाम-2

***

भजन - 3

(राग - तुम इतना जो मुस्कुरा...)

गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो
गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो
मूर्ति काका की लुटा रहे हो
मूर्ति काका की लुटा रहे हो। गुणातीत अस्मिता...

संबंध से ही ब्रह्मरूप मानें -2
हुन्नर साधु का सिखा रहे हो -2
मूर्ति काका की लुटा रहे हो। गुणातीत अस्मिता...

व्यापक में तुम, प्रेरक भी तुम्हीं हो -2
मुक्तों को तुम ही नचा रहे हो -2
मूर्ति काका की लुटा रहे हो। गुणातीत अस्मिता...

परब्रह्म के धारक तुम गुरुजी -2
ये तन्त्र दिव्य बना रहे हो -2
मूर्ति काका की लुटा रहे हो। गुणातीत अस्मिता...

रीति, नीति, स्थिति काका जैसी -2
वर्तन से जीना सिखा रहे हो -2
मूर्ति काका की लुटा रहे हो
गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो। मूर्ति काका की लुटा रहे हो...

✸✸✸

भजन - 4

(राग- ऐ मेरे वतन के लोगों...)

साखीः श्री...श्री...श्री...मद् भागवत् में कहीं भी जैसे, SSS
राधाजी का नाम न आए;
सच प्रगट हो ही जाता है, चाहे जितना भी कोई दबाए, SSS
माया के प्रपंच में फँस कर, इतिहास न हम दोहराएं,
काकाजी के एहसानों को, काकाजी के एहसानों को, SSS
हम भूल से भी न मिटाएं, हम भूल से भी न मिटाएं।।

गुणातीत समाज के सृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी,
दृष्टाओं के तुम दृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी,
गुणातीत तू चैतन्यदर्शी, शास्त्रीजी योगी का अनुरागी;
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी।

स्वरूपनिष्ठा दृढ़ कराई, स्वरूपयोग तूने ही सिखाया,
बापा के संबंध वालों की

बापा के संबंध वालों की, परवरिश में जीवन लुटाया,
बन कर बापा का झमूरा, वश किए तुमने तो श्रीजी,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी।

ज्ञान अहम् का तिमिर मिटाने, अक्षरपति धरा पर आए,
सुख धाम का यहीं पाने की
सुख धाम का यहीं पाने की, चाबियाँ अनेक बता दीं,
संबंध से सनाथ करके, ब्रह्मज्ञान का धोध बहाया,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी।

मान्यताओं के बंधन तोड़ें, - 2
अंतर के कुसंग को छोड़ें, - 2
प्रार्थना से आपको पहुँचें, - 2
संबंध प्रगट प्रभु से कर लें,
देहभाव को अपने भुला कर, जीते माया से बाजी,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी।

तेरे ताल से ताल रहे अब, सच्ची साधुता हम पाएं,
तेरे दास का दास बनें हम, सुहृद् बन कर जी पाएं,
ये सूर्य जो प्रगट दिया तो,-2 सूरजमुखी बन जाएं,
ब्रह्मरूप हो के हम अब, -2 परब्रह्म में जुड़ जाएं, -2
हमें देख के हर कोई सोचे, कैसे होंगे काकाजी !
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी।

गुणातीत समाज के सृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी,
दृष्टाओं के तुम दृष्टा, आत्मीयता की गंगोत्री,
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी,
गुणातीत तू चैतन्यदर्शी, शास्त्रीजी योगी का अनुरागी;
निर्दोषबुद्धि के क्षितिज, शूरवीर, सहृद्यी काकाजी।
जय हो, जय जय काकाजी...
जय हो, जय जय पप्पाजी...
जय हो, जय जय स्वामिजी...।।

***

भजन - 5

(राग – सिर पर टोपी लाल, हाथ में रेशम का रूमाल...)

गुणातीत सी छवि कमाल, हैं चंचल नैन तुम्हारे विशाल, मूर्ति का क्या कहना... 2
जादूगरी नज़र का वार, छेड़ दे चैतन्यों के तार, मूर्ति का क्या कहना... 2
ओ... बालक-सी मुस्कान है, निर्दोषता भरी सबका दिल चुरा तू ले,
ओ... दरियादिली तेरी, अपनापन लुटा के तू, मूर्ति प्रभु की भर दे, 2
उमड़े प्रेम अपार, ओ बालम जियो हज़ारों साल, आपका क्या कहना।-3

(राग – यूँ तो हमने लाख हसीं देखे हैं...)

तुमसे जो भी मिला उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -2

काकाजी को ज्यों योगी ही योगी, आपको वैसे ही काकाजी,
'स्व' का कोई भी भाव नहीं, श्रेय लेने का चाव नहीं,
औरों को ही सदा आगे रखा,
तुमसे जो भी मिला उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -2

चुंबकीय खिंचाव से भरी निर्गुण प्रतिभा तेरी,
स्पष्टवक्ता निडर भी, दृष्टि में संबंध ही,
निजी कुछ नहीं, सभी सांझा रखा,
तुमसे जो भी मिला उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -2

रात और दिन, देखा ही नहीं, भक्तों के लिए फ़ारिग़ रहें
ट्रांसपेरन्सी जीवन में, सर्वदेशीयता वर्तन में,
अडिग और अचल कर्तव्यनिष्ठा,
तुमसे जो भी मिला उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -2

संघ में सबके साथ ही, जीना जिन्हें रास आता है,
ज्ञानगोष्ठि लगातार है, धुन-भजन का ही आधार है,
कुटुंबभाव का तूने मर्म पकड़ा,
तुमसे जो भी मिला उसे ये ही लगा कि काकाजी को देखा -2
उमड़े प्रेम अपार, ओ बालम जियो हज़ारों साल, आपका क्या कहना।

***

भजन - 6

(राग – ऐसे हैं मेरे राम...)

गुरुजी तुम्हें प्रणाम, गुरुजी तुम्हें प्रणाम
लड़ाने लाड़ भक्तों को, आए छोड़ अक्षरधाम
गुरुजी तुम्हें प्रणाम...

अतिशय है तेज हृदय तेरे,
अखंड दर्शन, मूर्ति का करे,
भला जीव का, करने को हठात्, चरित्र तेरे तमाम...
गुरुजी तुम्हें प्रणाम...

तुमसा ना मित्र, ना तुमसा हितैषी,
प्रेमी ना तुमसा, नहीं तुमसी माता,
जिस भक्त को जैसा रुप सुहाता,
तुमने निभाया उसी से वो नाता,
रसबस रहते, पर फिर भी हो तुम,
निर्गुण, निःस्पृही, निष्काम...
गुरुजी तुम्हें प्रणाम...

हम जैसा बनकर के जीते हो आप,
जीकर स्वयं राह दिखाते हो आप,
कभी प्यार से तो कभी डाँट कर,
चैतन्य की प्रगति कराते हो आप,
बिना भेदभाव के सब मुक्तों में,
दर्शन काकाजी का करते हो आप,
कहें पप्पाजी काकारुप हो आप,
उन्होंने कहा ब्रह्मस्वरुप हो आप,
मानकर सत्य उनके वचन अब जीएं,
आशिष ये दे दो आप...
गुरुजी तम्हें प्रणाम...

***

भजन - 7

(राग–मेरे ख्वाबों में जो आए...)

गुरुजी धरती पे आए
सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए... } -2
गुरुजी धरती पे आए...SS...
सुख ये मूर्ति का लुटाएं
गुरुजी धरती पे आए...SS...

अनहद् प्रीति काकाजी से तुम्हारी -2
अभिप्राय उनका ज़िन्दगी है तुम्हारी।
काकाजी का दिव्य सर्जन हो तुम,
अखंड प्रभु के धारक साधु हो तुम।
काका को रखते आगे,
पल-पल तुम ऐसा जीते,
काकाजी की अनुभूति कराएँ...
गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...
गुरुजी धरती पे आए...SSS

काकाजी को अखंड धारे हुए हैं-2
भक्तों के दिल में जो समाए हुए हैं।
हमारे *'लेवल'* पर आ जाते हैं वो,
सामर्थ्य अपना छूपाते हैं वो।
महिमा हम जान लें,
स्वरुप पहचान लें,
सार्थक हम जन्म अब अपना बनाएं...
गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...
गुरुजी धरती पे आए...

लाई सत्संग में हमें कामनाएं सारी -2
प्रभु की मूर्ति ना थी माँग हमारी।

फिर भी अनुभव प्रभु का करवा के,
निरंतर उद्यम तुमने ही करके।
गरजु भी खुद बनके, भजन भी कर-करके,
प्रभु पाने की चाह तू ही प्रगटाए...
गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...

संप, सुहृद्भाव दिल में बसा के-2
सरल बनें और मैत्रीभाव बढ़ा के।
गुरुभक्ति यज्ञ को सार्थक कर लें,
हठ, मान, ईर्ष्या की आहुति दे दें।
मन-बुद्धि छोड़ के, अहंता तोड़ के,
सपना तेरा साकार कर पाएं...
गुरुजी धरती पे आए, सुख ये मूर्ति का लुटाएं
काकाजी को रोम-रोम में बसाए...
ला ला ला ला ...

***

भजन - 8

(राग–तुम पास आए, यूं मुस्कुराए...)

गुरुजी के रुप में... प्रभु हमने पाए } -2
गुरुजी के रुप में प्रभु हमने पाए }
जन्मों जनम के बधंन जिसने छुड़ाए
जाग्रत रह कर यही अब करना है
प्रभु मेरे, मैं हूँ उनका, यही याद रखना है -2

प्राप्ति की मस्ती में ही डूब जाएं,
मन के भँवर में फंस कर समय ना गवाएं
जाग्रत रह कर यही अब करना है
प्रभु मेरे, मैं हूं उनका, यही याद रखना है -2

अंतर्यामी साधु को जान लें, सर्वज्ञ-निर्दोष ’गर मान लें
कल्याणकारी गुण साधु के हम, पा जाएंगे

मुक्तों में उनका ही, दर्शन करना है
प्रभु मेरे, मैं हूँ उनका, यही याद रखना है -2

स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव दृढ़ करें, इक-दूजे के हम पूरक बनें
दिल्ली अनोखा सेन्टर, इक दिन तो, होना ही है
काका के संकल्प में, निमित्त हमें बनना है
प्रभु मेरे, मैं हूँ उनका, यही याद रखना है -2
गुरुजी के रूप में प्रभु हमने पाए
जन्मों जन्म के बंधन जिसने छुड़ाए
प्राप्ति की मस्ती में ही डूब जाएं,
मन के भंवर में फंस कर समय ना गवाएं
जाग्रत रह कर यही अब करना है
प्रभु मेरे, मैं हूँ उनका, यही याद रखना है -4

अपनाओ चाहे रीति कोई, शस्त्र बीमारी का लेना नहीं
24 दिसंबर हम ना भूलें कभी, याद रहे
गुरुजी की मर्जी में ही जीना और मरना है
काकाजी की धरोहर को संभाल के रखना है
काकाजी की धरोहर को संभाल के रखना है
काकाजी की धरोहर को संभाल के रखना है।

***

भजन - 9

(राग – जिंदगी मौत ना बन जाए...)

गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है, मुक्तों -2
कोटि-कोटि वंदन होSS, कोटि-कोटि वंदन आ-आ
काकाजी को वंदन हो, काकाजी को वंदन। } -2
मूर्ति इनकी अपने दिल में बसा लो, मुक्तों,
गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है, मुक्तों -2

महिमा काकाजी की ही, जीव में समाई है,
साधुता गुणातीत-सी गुणाती SSSS...त

साधुता गुणातीत-सी काकाजी से पाई है,
मोक्ष का द्वार हैं ये, भक्तों का सहारा हैं,
जीवभाव छुड़ा दे साधु ये निराला है,
इनके दर्शन से ही हम, प्रभु का दर्श पाएंगे,
इनको पहचानेंगे तो काकाजी को पाएंगे, पाएंगे, पाएंगे।
कोटि-कोटि वंदन होSS, कोटि-कोटि वंदन आ-आ
काकाजी को वंदन हो, काकाजी को वंदन।
मूर्ति इनकी अपने दिल में बसा लो, मुक्तों, मुक्तों, मुक्तों
गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है, मुक्तों -2

गुणातीतभाव वाले हम सभी साधु बनें,
हम सभी साधु बनें, हम सभी साधु बनें
हम सभी साधुSS बनें, हम सभी साधु बनें
'स्व' का समर्पण करके मिल के हम काम करें
करके समर्पण मिलजुल कर सब काम करें, हम काम करें
मिलजुल कर सब काम करें, मिलजुल कर सब काम करें,
प्रभु प्रगट ही हैं,प्रत्यक्ष रखें अब तो, अब तो
लय-लीन इसमें सदा, रहा करें हम अब तो, अब तो
दिव्य बन जाएंगे हम, इनको अखंड दिव्य मानें
साकार ब्रह्म मिले तत्त्व से पहचानें SSSSS
कोटि जन्मों की कसर टाले वो समर्थ मिले,
देह को छोड़ जिन्हें पाना ये वो हैं, मुक्तों,
मूर्ति इनकी अपने दिल में बसा लो, मुक्तों, मुक्तों, मुक्तों-3
गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है, मुक्तों -2
कोटि-कोटि वंदन होSS, कोटि-कोटि वंदन आ-आ
काकाजी को वंदन हो, काकाजी को वंदन।
मूर्ति इनकी अपने दिल में बसा लो, मुक्तों
गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है, मुक्तों -3
आ... आ... आ... आ...

***

भजन - 10

(राग – तू हिन्दु बनेगा न मुसलमान बनेगा...)

गुरुदेव, मेरे मन में ज्ञान ज्योति जगा दो }-2
तुम ब्रह्मस्वरूप हो, मुझे भी ब्रह्म बना दो

हर पल तुम्हारी मूर्ति का चिंतन किया करूं, }-2
तेरा हर एक प्रसंग याद कर जिया करूं,
मैं-मैं न रहूं बस प्रभु एक तू ही तू रहे,
मिट जाए प्यास तेरा वचनामृत पिया करूं,
प्रभु मिल गए हो आप, कृपा से ये करा दो।
तुम ब्रह्मस्वरूप हो...

गुरुदेव, मेरे मन में ज्ञान ज्योति जगा दो }-2
तुम ब्रह्मस्वरूप हो, मुझे भी ब्रह्म बना दो

तेरा अल्प संबंधी भी 'सर' का ताज हो मेरा,
अंतःकरण में बस अखंड राज हो तेरा,
तीनों अवस्थाओं में तेरा नाम रटन हो,
भाये मेरे मन को जो भी अंदाज हो तेरा,
इस लक्ष्य पे पहुंचाये जो, वो राह दिखा दो।
तुम ब्रह्मस्वरूप हो...

गुरुदेव, मेरे मन में ज्ञान ज्योति जगा दो }-2
तुम ब्रह्मस्वरूप हो, मुझे भी ब्रह्म बना दो

महिमा माहात्म्य जैसा है वैसा ही जान लूं
मूर्ति हो अक्षरधाम की दृढ़ता से मान लूं
तुझ में तेरी क्रियाओं में अभाव ना आए,
काका स्वरूप प्रगट हो तुमको पहचान लूं ,
गफ़लत में न रहूं मुझे वो सूझ बता दो।
तुम ब्रह्मस्वरूप हो..., गुरुदेव मेरे मन...

***

भजन - 11

(राग – नहीं ये हो नहीं सकता...)

गुरुभक्ति यज्ञ आया, दिलों में हर्ष है छाया
अहोहो धन्य हो गए हम, गुरुजी का संबंध पाया
याहोम जीवन कर दें, अनमोल समय आया-2
अनमोल समय आया SS...(2)
गुरुभक्ति यज्ञ आया...(2)
} -2

काकाजी के ही संकल्प से, बना दिल्ली का ये समाज।
निमित्त तुझको बना करके, चलाया रेती में जहाज।
महिमा सभी की तू गाता सदा, तू... गाता सदा...
सर्वदेशीयता को रख, स्वरूपों का बना प्यारा
अहोहो धन्य हो गए हम, गुरुजी का संबंध पाया।
याहोम...-2
अनमोल समय आया SS...(2)
गुरुभक्ति यज्ञ आया...(2)

तेरा निरपेक्ष दिव्य प्रेम, जाल माया के काटता।
रंग में अपने रंग के तू, दिव्यता में भिगो देता।
वृत्तियां पिघलाए ये तेरी नज़र, तेरी... रहमो नज़र...
गुणातीत साधुता ऐसी, संबंध से ब्रह्म प्रगटाया।
अहोहो धन्य हो गए...
याहोम जीवन ...-2
अनमोल समय आया SS...(2)
गुरुभक्ति यज्ञ आया...(2)

प्रार्थना है यही मेरी, अखंड मूर्ति रहे तेरी।
गुरुभक्ति अदा करके, प्रसन्नता लूट लें तेरी।
भक्तों में तुझको निहारें सदा, हम... निहारें सदा...
प्रभुमय होके सफल कर दें, श्रम जो तूने है उठाया।
अहोहो धन्य हो गए...
याहोम जीवन ...-2

अनमोल समय आया SS...(2) गुरुभक्ति यज्ञ आया...(2)
गुरुभक्ति यज्ञ आया, दिलों में हर्ष है छाया
अहोहो धन्य हो गए हम, गुरुजी का संबंध पाया
याहोम जीवन कर दें, अनमोल समय आया-2

✵✵✵

भजन - 12

(राग – ये देश है वीर जवानों का...)

हो... हो...
गुरुभक्ति यज्ञ मनाएं हम, पराभक्ति में खो जाएं हम
गुरुजी के स्वरूप को -जय हो, गुरुजी के स्वरूप को पहचानें
अभिप्राय में इनके जुड़ जाएं...

ओ... ओ... ओ
ये सत्संग है शूरवीरों का, जांबाजों का, मरजीवों का
सत्संग का मुक्तों-जय हो, सत्संग का, मुक्तों, क्या कहना
मिले प्रगट प्रभु अब क्या डरना!

ओ... ओ... ओ
नहीं तप करना, नहीं योग कोई; नहीं गुण-अवगुण का भार कोई।
संबंध साधु से-जय हो, संबंध साधु से करना है
उसकी रुचि में ही जीना है।

ओ... ओ... ओ
रिद्धि-सिद्धि का प्रभाव ना हो, ना हो राग-द्वेष, भेदभाव ना हो
गुरुजी को राजी-जय हो, गुरुजी को राजी कर पाएं
उसमें ही फनां हम हो जाएं-3

✵✵✵

भजन - 13

(राग – मेरे हमसफ़र, मेरे हमसफ़र, मेरे पास...)

गुरुवर मेरे, प्रभुवर मेरे, तुमको नमन शत्-शत् नमन-2
तेरे हो के रहना है हर जनम, तुमको नमन शत्-शत् नमन-2
शत्-शत् नमन...
गुरुवर मेरे प्रभुवर मेरे, तुमको नमन शत्-शत् नमन।

ये संबंध मिला है जो आपसे, मुझे मुश्किलों से भी क्या है डर
आ... आ... आ...
ये संबंध मिला है जो आपसे, मुझे मुश्किलों से भी क्या है डर।
है सुहाना अब जीवन सफ़र, तू ही रहनुमां, तू ही राहबर
तेरे हो के रहना है हर जनम, तुमको नमन शत्-शत् नमन
शत्-शत् नमन...
गुरुवर मेरे प्रभुवर मेरे, तुमको नमन शत्-शत् नमन।

इस संबंध से है हमें मिला, एक अनोखा प्रेम आत्मीयता
आ... आ... आ...
इस संबंध से है हमें मिला, एक अनोखा प्रेम आत्मीयता।
आ... आ... आ...
तेरे रूप में हैं प्रभु मिले, मेरे दिल को अपना बना लो घर
तेरे हो के रहना है हर जनम, तुमको नमन शत्-शत् नमन
शत्-शत् नमन...
गुरुवर मेरे प्रभुवर मेरे, तुमको नमन शत्-शत् नमन।

है चिराग तुमने जला दिए...
है चिराग तुमने जला दिए, अब चल पड़ें ले के तेरा बल-2
आ... आ... आ...
मेरी जिंदगी जाएगी बदल, कर दो जनम मेरा सफल।
आ... आ... आ...
तेरे हो के रहना है हर जनम, तुमको नमन शत्-शत् नमन
शत्-शत् नमन...
गुरुवर मेरे प्रभुवर मेरे, तुमको नमन शत्-शत् नमन।

✷✷✷

भजन - 14

(राग–मन की आँखों से मैं देखूँ...)

शुद्ध गुरु परंपरा अखंडित, रख दी श्रीजी ने बेमिसाल।
भेंट गुणातीत गुरु की देकर, किया मुक्तों को निहाल।।

गुणातीत गुरु का आसरा पाकर, हुए हम सभी सनाथ हैं
हुए हम सभी निहाल हैं
जन्म मरण के रोग से मुक्त कराना, जिनका निशान है,
गुणातीत गुरु का आसरा पाकर, हुए हम सभी सनाथ हैं
हुए हम सभी निहाल हैं...

पात्र को गढ़ने वाले गुरु हैं, ब्रह्म रस भी वही भरते -2
शिष्य सवाया बने उनसे, निरंतर श्रम करते, ओ...
परिश्रम गुरु ही करते,
गुरु का वचन ही ब्रह्म की वाणी, सब वेदों का सार है
सब वेदों का सार है
गुणातीत गुरु का आसरा पाकर, हुए हम सभी सनाथ हैं
हुए हम सभी निहाल हैं...

लख चौरासी से छुड़वाकर, आत्यांतिकी मुक्ति देते -2
प्रकृति, प्रारब्ध, काल, कर्म और माया पर सेरे लगाते, ओ...
गुरु ही सेरे लगाते
गुरु ही रूप प्रभु का, गुरु की महिमा अपरंपार है
महिमा उनकी अपार है,
गुणातीत गुरु का आसरा पाकर, हुए हम सभी सनाथ हैं
हुए हम सभी निहाल हैं...

माँग, इच्छा, हठाग्रह अपने अब तो सारे छोड़ें
ठाने हुए सत्य हमारे, स्वभाव अपने छोड़ें
सच्चा पूजन वही है कि हम गुरु का वचन न छोड़ें
मन और देह बने एक मंदिर, हृदय प्रभु का धाम
प्रत्यक्ष गुरु के रूप हमें तो, प्रगट मिले महाराज।
प्रगट मिले महाराज...
प्रगट मिले महाराज...
प्रगट मिले महाराज।।

✵✵✵

भजन - 15

गरबा (गुजराती)

गुरुमां श्री हरिनो वास, गुरु स्वयं अविनाश,
गुरुनो मने रंग लाग्यो... -2

साखी : हे... अनिर्देशना श्रीहरि आजे
गुरुतनमां समाया छे
गुणातीतना भावधारी ए
भक्तवृंदने भाया रे...
हेजी रे... हे... गुरुहरिने मानीए तेवा
मोजमां ए बनावी दे
पाय लागीने याची लईए
हर पळ दिव्य मनावी दे
तुं दिव्य एवुं मनावी दे, हर पळ दिव्य मनावी दे।

गुरुमां श्री हरिनो वास, गुरु स्वयं अविनाश,
गुरुनो मने रंग लाग्यो...
हेजी... गुरुमां श्री हरिनो वास, गुरु स्वयं अविनाश,
गुरुनो मने रंग लाग्यो...
हे...ई मळतां थई गई हाश, जोऊं एने आसपास
गुरुनो मने रंग लाग्यो...
हेजी... मळतां थई गई हाश, जोऊं ऐने आसपास
गुरुनो मने रंग लाग्यो...

हे हे... हो हो...
धार्या छे परमेश, वधार्या संबंध हंमेश
पधार्या हरि गुरुवेशमां...
हो हो... पधार्या हरि गुरुवेशमां...
हो... शीश स्हेजे नमतां, कोशिश न करतां
आशिष मळे उपदेशमां...
हो... आशिष मळे उपदेशमां...

हैयुं हरखातुं घणुं, सुख वहे अणु अणु
गुरु गोविंदने पामी आज... जीवनमां
मळतां थई गई हाश, गुरु स्वयं अविनाश
गुरुनो मने रंग लाग्यो...
हेजी रंग लाग्यो रे...

अंतर अंतर टळे, निरंतर संग रहे
तोय तन मन रे आतुरिया...
हो... तोय तन मन रे आतुरिया...
हो... प्रेमनो बांधी दोर, करे कोराधाकोर
कोरीने करे बांसुरीया...
हो... कोरीने करे बांसुरीया...
छेडे सरगम, कोई रहे नहीं गम,
सुगम थई जाय भक्तिनी वाट... जीवनमां...
गुरुमां श्री हरिनो वास, गुरु स्वयं अविनाश,
गुरुनो मने रंग लाग्यो...
हे...ई मळतां थई गई हाश, जोऊं ऐने आसपास
गुरुनो मने रंग लाग्यो...
हेजी रंग लाग्यो रे...

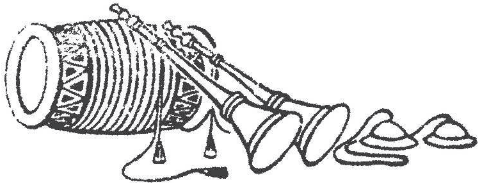

भजन - 11

जो उत्पत्ति एवं स्थिति लय करे, वेदों स्तुति उच्चरे,
जाके रोमसुच्छिद्र में अणुसम, ब्रह्मांड कोटि फिरें।
माया काल रवि शशि सुरगण, आज्ञा न लोपे क्षण,
*ऐसे अक्षरधाम के अधिपति, **'श्री स्वामिनारायण'**।।*

(राग– श्री गजानन प्रसन्न)

घनश्यामाय, नीलकंठाय, सहजानंदाय धीमहि।
योगेश्वराय, नरनारायणाय, पुरुषोत्तमाय धीमहि।
गुणातीताय, गुणाधीशाय, गुणप्रविष्टाय धीमहि।
भक्तिनंदाय, धर्मपुत्राय, पूर्णकामाय धीमहि।
हरिकृष्णाय, अपराजिताय, श्री निस्पृहाय धीमहि।।
भक्तिनंदाय, धर्मपुत्राय, पूर्णकामाय धीमहि।
हरिकृष्णाय, अपराजिताय, श्री निस्पृहाय धीमहि।।

नियामकाय, कलितारकाय, जीतेन्द्रीयायने।
तपःप्रियाय, मरूसुतप्रियाय, नमः श्री वाग्मीने।
सदो निंद्राय, ध्याननिष्ठाय, अतिधैर्यवते।
साधुशीलाय, क्षमाविंधयाय, योगकलाप्रवृत्तये।
पाखंडोच्छेदनपटवे, नैष्टिकव्रतपोषकाय।
स्वस्वरुपाचल स्थितये, श्री स्वामिनारायणाय।
काली भैरवाय, सिद्धेश्वराय, अतिपावनाय धीमहि।
श्री स्वतंत्राय, जीताः हाराय, प्रकाशरूपाय धीमहि।
गुणातीताय गुणाधीशाय गुणप्रविष्टाय धीमहि।
भक्तिनंदाय, धर्मपुत्राय, पूर्णकामाय धीमहि।
हरिकृष्णाय, अपराजिताय, श्री निस्पृहाय धीमहि।।
भक्तिनंदाय, धर्मपुत्राय, पूर्णकामाय धीमहि।
हरिकृष्णाय, अपराजिताय, श्री निस्पृहाय धीमहि।।

परमहँसाय, तीव्रवैराग्याय, श्री सत्यवादीने।
दीर्घदर्शनाय, महापुरुषाय, श्री गुणग्राहीने।
धार्मिकाय, निर्मत्सराय, प्रशान्तमूर्तये।
सदाचारप्रियाय, महाव्रताय, उपशमस्थितये।
ब्रह्मविद्याप्रवर्तकाय, साध्वीधर्म प्रवर्तकाय।
ब्रह्मधाम दर्शकाय, श्री अक्षरपुरुषोत्तमाय।

हे प्रगल्भाय, भक्तवत्सलाय, सत्यप्रतिज्ञाय धीमहि।
बृहदव्रतधराय, वासुदेवाय, अतिउदाराय धीमहि।
गुणातीताय गुणाधीशाय गुणप्रविष्टाय धीमहि।
भक्तिनंदाय, धर्मपुत्राय, पूर्णकामाय धीमहि।
हरिकृष्णाय, अपराजिताय, श्री निस्पृहाय धीमहि।।
भक्तिनंदाय, धर्मपुत्राय, पूर्णकामाय धीमहि।
हरिकृष्णाय, अपराजिताय, श्री निस्पृहाय धीमहि।।

माई री मैंने हो... हो...-2
माई री मैंने पुरुषोत्तम वर पायो-3
सर्वातीत अलौकिक मूर्ति-2
मिलत भयो - मन भायो -2
माई री मैंने...
माई री मैंने पुरुषोत्तम वर पायो
शारद शेष पार नहीं पावत-2
निगम नेति करी गायो
मुक्तानंद के नाथ रसीलो
नाथ रसीलो -3
करुणा करी घर आयो -2
माई री मैंने पुरुषोत्तम वर पायो -3

(राग– सावन लाग्यो भादवो जी...)

स्वर्ग धरती पर लाना है हमें,
योजना जो गढ़ी थी बचपन में,
धाम का सुख जीतेजी दिलाया,
जिन्होंने,
काकाजी को हमारे नमन, पप्पाजी को हमारे नमन... -2

आत्मबुद्धि प्रीति मुक्तों से करके,
कुटुंबभाव का सत्संग करके,
नींव में मिट के गुणातीत समाज की,
रचना की,
काकाजी को करें वंदन, पप्पाजी को करें वंदन... -2

वचन बापा का झेल के जी,
हमें प्रभु भजने का मौका दे के,
गुणातीतभाव प्रगटाया जिन्होंने,

बहनों में,
काकाजी को हैं अभिनंदन, पप्पाजी को हैं अभिनंदन... -2

(राग– कहुँ राजा रणछोड़नी वार्ता...)

सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता
सुनो बापा के मकंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता
हम में रसबस हो के जो रहता, संबंध प्रभु से हमारा कराता-2
सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता
सुनो बापा के मकंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता

झेल काका का वचन, करी दिल्ली पावन,
अपनेपन से करा, सबके दिल पे शासन,
बड़ी आँखों का जादू अंतर भेदता, वर्तन से है काकाजी का शोभाड़ता,
सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता
सुनो बापा के मकंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता

अपनाई काकाजी की रीत, बने संत गुणातीत,
सर्वदेशीयता से, सबका दिल लिया जीत,
मुक्तों को जो सदा आनंद कराता, उनके दुःख-दर्द में है शामिल हो जाता,
सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता
सुनो बापा के मकंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता

देख कर बस संबंध, कर ले आँखें वो बंद -2,
सब में काकाजी को ही है निहारता, संबंध की महिमा में है खो जाता,
सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता
सुनो बापा के मकंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता
सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता

(राग– मैया जसोदा लाल...)

हो... पा के सोनाबा से प्यार, करके भरोसा अपार, काकाजी से जो जुड़ गया रे
हो... दिलीफ़ को बनाया बापा ने मकंद, आज गुरुजी बन गया रे
हो... बापा का मकंद, आज सब मुक्तों का, प्राणाधार है बन गया रे

हो... भक्ति अभिप्राय की, करके बापा-काका की, जंगम तीर्थ बन गया रे
हो... बापा का मकंद, आज सब मुक्तों का, प्राणाधार है बन गया रे
हो... दिलीफ़ को बनाया बापा ने मकंद, आज गुरुजी बन गया रे
हो... बापा का मकंद, आज सब मुक्तों का, प्राणाधार है बन गया रे
जय मुकुंदस्वामी, गुरुजी नमामि।। - 4

***

भजन - 1

ओ... ओ... चलो काका का कर लें पूजन रे, चलो गीतों का कर लें गूंजन रे।-2
आहा... आहा...

(राग– एक वृंदावनो शामळो...)

एक योगीजी का लाड़ला, सुंदर, मनोहर, रंगीला
जीव में बैठ जाए रे फटाफट् ओहो...
एक योगीजी का लाड़ला, सुंदर, मनोहर, रंगीला
जीव में बैठ जाए रे फटाफट् ओहो...

(राग– सुन लो सुनाता हूँ...)

समझें, बता दूँ, कर लूँ, तुमसे ख़ानगी,
जीव में बैठे तब फिर, मन की बढ़े माँदगी,
समझें, बता दूँ, कर लूँ, तुमसे ख़ानगी,
जीव में बैठे तब फिर, मन की बढ़े माँदगी,
रे भाइयों, रे बहनों, रे मुक्तों रे...
दी हुई बीमारी में हँसते रहना रे...
रे भाइयों, रे बहनों, रे मुक्तों रे...
दी हुई बीमारी में हँसते रहना रे...
काका को भाती नहीं तन-मन बीमारी,
उनके बल से अंतर में रखना खुमारी,
काका को भाती नहीं तन-मन बीमारी,
उनके बल से अंतर में रखना खुमारी,
रे भाइयों, रे बहनों जोश से बोलो रे,
रे काका, रे काका, बल देना रे...
रे भाइयों, रे बहनों जोश से बोलो रे,
रे काका, रे काका, बल देना रे...

(राग–ठेर ठेर टहुकार...)

कहें हम छू के पाँव तुम्हारे, कहें हम छू के पाँव रे... -2
मस्त गुलाबी मिज़ाज़ में है शूरवीरता अपार,

ये स्वामी हैं भगवान ऐसा किया तूने ललकार,
कूद पड़े खुद सबसे पहले, वश किए भगवान रे,
कहें हम छू के पाँव तुम्हारे, कहें हम छू के पाँव रे...

चकाचौंध हुए तेज में तेरे, बांधे प्रेमपाश में,
ओतप्रोत हुए हम जैसे बन, रहे अखंड प्रभु में,
खोज-खोज के टाले तुमने, दोष हमारे अपार रे...
कहें हम छू के पाँव तुम्हारे, कहें हम छू के पाँव रे...

हमारा सब कुछ उधार ही है, तेरे बही खाते में,
नहीं जताया ज़रा भी, सिर्फ संबंध देखा तुमने,
उल्टे पासे सीधे मान के, रहते किए प्रभु मांही रे...
कहें हम छू के पाँव तुम्हारे, कहें हम छू के पाँव रे...
मुफ़्त में पाने के चस्के वाले कहते हैं तुमसे आज,
नहीं खुशामद, सच है यही कि तुम बादशाह बेताज,
हम पर हुकूमत करने तू तो, कृपा करना अपार रे...
कहें हम छू के पाँव तुम्हारे, कहें हम छू के पाँव रे...
कहें हम छू के पाँव तुम्हारे, कहें हम छू के पाँव रे...
जय काका दादुराय रे...-4

(राग– गरबे घुमे गुजरातण...)

कहे हम और क्या बोल-बोल के,
दिल को बताएँ क्या, खोल-खोल के...
कहे हम और क्या बोल-बोल के,
दिल को बताएँ क्या, खोल-खोल के...

हँस के तुमने प्रेम से रंगा अपने रंग में,
जीते और जीताया तुमने **दिव्यता की जंग में**, -2
खुश हो के कहें हम झुक-झुक के,
भव भव की मन्नत पूरी हुई रे...
खुश हो के कहें हम झुक-झुक के,
भव भव की मन्नत पूरी हुई रे...

बात करें ज्यादा, क्या बोल-बोल के,
अंतर बताएँ क्या खोल खोल के...
बात करें ज्यादा, क्या बोल-बोल के,
अंतर बताएँ क्या खोल खोल के...

लग पड़ें सत्संग का कार्य हम करने,
भूले तुम्हें फिर भी तू रहना अंतर में, रहना अंतर में,
रोके, टोके मुक्तों में आ-आ के,
मगन रहें, तुझे देखते-देखते
रोके, टोके मुक्तों में आ-आ के,
मगन रहें, तुझे देखते-देखते
कहे हम और क्या बोल-बोल के,
दिल को बताएँ क्या, खोल-खोल के...
कहे हम और क्या बोल-बोल के,
दिल को बताएँ क्या, खोल-खोल के...

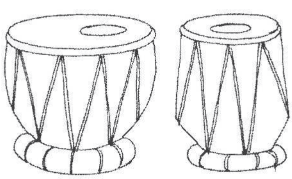

भजन - 1

(राग – दीदी तेरा देवर दीवाना...)

लल... ला... लई...
छोड़ के स्वभाव मूर्ति बसाना-2
सत्संग का यही है फल पाना-2
वृत्ति-स्वभाव मेरे छुड़ाना-2
हाय श्याम! नामुमकिन मिटाना-2

लल ... ला... लई...
बहुत ज्ञान की बातें सुन ली हैं अब तक
उतारी नहीं अपने जीवन में अब तक
तेरा हर वचन मैं सहज झेल पाऊँ
मनमानी न करके, गुरुमुखी हो जाऊँ
मन से बाजी है जीत जाना - 2
देकर बल तू मुझको जिताना -2
ओय होय... छोड़ के स्वभाव...

लल ... ला... लई...
गरजु बन के तुमने संबंध बनाया
है अब तक केवल तुमने हमको निभाया
स्वभाव छुड़ाने जब प्रसंग बनाए
अनुभव सारे भूला, कदम डगमगाए...
जीवदशा ये मेरी छुड़ाना-2
अपनी पहचान तत्त्व से कराना-2
ओ काका! छोड़ के स्वभाव...

स्थूल रूप से काकाजी का जाना!
'ग्रेस' की 'थ्योरी' का गुज़रा ज़माना-2
अब तो जिसको है प्रभु पाना-2
रख सुरुचि पड़ेगा ख़ुद चलना-2
रप पा... तू...
संबंध से तुम्हारे, ब्रह्मरूप ख़ुद को मानूं
हृदय में हमेशा हाज़िर तुमको जानूं
क्रियायोग हर एक आरंभ करूं मैं
तेरे नाम का अब नमक डालकर मैं

हे प्रभु, इतना मुझसे कराना-2
उंगली थाम के मुझको चलाना–4

✸✸✸

भजन - 2

(गुजराती) छपैयामां प्रगट्या -2, श्री घनश्याम,
छपैयामां प्रगट्या -2, श्री घनश्याम,
जोड़े लाव्या दिव्य मुक्तो ने अक्षरधाम -2
छपैयामां प्रगट्या -2, श्री घनश्याम,
जोड़े लाव्या दिव्य मुक्तो ने अक्षरधाम -2
हे... हे...

मुक्तोना उद्धार काजे श्रीजी, उत्तरमां प्रगटी पश्चिमे आव्या,
उत्तरमां मुक्तो प्रगट्या छे जाणी, काकाजीऐ पश्चिमथी गुरुजीने मोकल्या,
काकाजीऐ पश्चिमथी गुरुजीने मोकल्या,
मुक्तोना काजे गुरुजी दिल्ली पधार्या,
गुरुजी रूपे मळया-2, परम सुखधाम,
जीवना साचा मावतरने प्रणाम,
काकाजीना मळेलाने प्रणाम... -2

(मराठी) सर्वस्वरुपांची ओळख दिली,
सर्वस्वरुपांची ओळख दिली, गुरुजी तुमालाकरु धन्यवाद
सर्वदेशीयता, तुमचा सारखी, तुमी प्रगटावा आमुच्यात् -2
सर्वस्वरुपांची ओळख दिली, गुरुजी तुमालाकरु धन्यवाद
सर्वदेशीयता, तुमचा सारखी, तुमी प्रगटावा आमुच्यात् -2

हरिभक्तांची करु मी भक्ति, द्या मजला अशी शक्ति -2
त्यांच्या सेवेनी राजी करूनी, गुरुजी राजी होईल -2
सेवेचे फळ देवताना ना लाभो, -2, द्या मजला हे आशीर्वाद
सर्वदेशीयता, तुमचा सारखी, तुमी प्रगटावा आमुच्यात् -3

(English) We are aspirant,
Regularly must chant,
Being conscious of living master in our heart,
Kakaji taught us
Guruji practices
Master key for
All the locks &
All the riddles,

Lord's protection...
Feel it!
God is in our favour
Believe it!
When in problem oh... oh...
Fall back on, oh... oh...
Swaminarayan, Swaminarayan
This is Living Mantra !
Swaminarayan eh... eh
Swaminarayan eh... eh
Swaminarayan, Swaminarayan
Supreme Living Mantra !!
} -2

(हिन्दी) हर मुक्त को सरताज जाना, कुटुंबी अपना तुमने माना -2,
सबको ही निरपेक्ष प्रेम दिया, जिससे तू सबको लगे अपना।
हर मुक्त को सरताज जाना, कुटुंबी अपना तुमने माना -2
मूर्ति तेरी शाश्वत् सुख राशि -2
मूर्ति तेरी रसघन सुख राशि -2
स्मृतियाँ तेरी टाले चौरासी -2
चौदह लोक तुम बिराजना।
हर मुक्त को सरताज जाना, कुटुंबी अपना तुमने माना -3

(पंजाबी) रिश्ता गुरुजी नाल जदो जुड़या, -2
लो जी जग छुट्या, -2
रिश्ता गुरुजी नाल जदो जुड़या,
लो जी जग छुट्या -2
साधु मिलेने कोस्मोपॉलिटन, उन्हां विच होन्दे काकाजी दे दर्शन,
सारे लोका विच सानु - 2, ही जो चुण्या
शावाँनी भाग खुल्या -2
रिश्ता गुरुजी नाल जदो जुड़या, लो जी जग छुट्या -2

काकाजी नाल जुड़ गए गुरुजी, गुण उन्हाँ दे पाए,
तुवाडे नाल गुरुजी हुण असी एंज ही जुड़ जाए,
लोहा लकड़ी नाल जिवें जुड़या, डूबन वाला वी तरया,
गोद गुरुजी दी बै के -2, रब लब्या,
लो जी जग छुट्या -2
गोद गुरुजी दी बै के, रब लब्या,
लो जी जग छुट्या **-3**

✸✸✸

भजन - 1

(राग – जहां–जहां मैं जाता साईं...)

जहां-जहां मैं जाता काका, गीत तुम्हारे गाता...
मैं गीत तुम्हारे गाता...

मेरे मन मंदिर में काका, तुमने ज्योत जलाई-2
बीच भंवर में अटकी नैया, तुमने पार लगाई
इस दुनिया के दुखियारों से, जोड़ा तुमने नाता
मैं गीत तुम्हारे गाता-2 जहां-जहां...

तुम न मुझको मिलते काका, देता कौन-सहारा-2
दुनिया की इस डगर-डगर पर, फिरता मारा-मारा
किस्मत जिसको ठुकरा दे, तू उसके भाग्य जगाता
मैं गीत तुम्हारे गाता-2 जहां-जहां...

मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारे में, काका तुम ही समाए-2
भटक रहे थे हम तो काका, तुमने गले लगाए
तुमसे जुड़कर मैंने काका, जोड़ा प्रभु से नाता
मैं गीत तुम्हारे गाता-2 जहां-जहां...

✸✸✸

भजन - 2

(राग – दिल के अरमां आसूंओं में बह गए...)

जब से सद्‌गुरु ज्ञान तेरा पा गए -2
छोड़कर दुनिया शरण में आ गए
जब से सद्‌गुरु...

जिन्दगीभर की दुआ लेते फिरे-2
मतलबी दुनिया में धोखा खा गए-2
छोड़कर दुनिया...जब से सद्‌गुरु...

कोई न अपना इस जहां में बन सका-2
ज्ञान ले सबसे किनारा पा गए-2
छोड़कर दुनिया...जब से सद्‌गुरु...

तेरी रहमत के ख़जाने हैं भरे

जिसने जैसा चाहा वैसा पा गए-2
छोड़कर दुनिया...जब से सद्गुरु...

जिसने हस्ती को मिटाया खाक में-2
पल में वो दीदार तेरा पा गए-2
छोड़कर दुनिया...जब से सद्गुरु...

***

भजन - 3

(राग – गोंडल वाला योगी तमारी मूर्तिमां...)

जन्मों तक साधन से न मिलते
स्वामी सहजानंद मिल गए
काकाजी के रूप में हम सब
हुकुम का इक्का पा गए
जन्मों तक साधन से न मिलते
स्वामी सहजानंद मिल गए

मिले प्रगट पहचान न पाए
दिव्य उन्हें हम मान न पाए।
दिव्य प्रभु और सभी उसके दिव्य
माना तो खुद दिव्य बन गए।
जन्मों तक साधन...

संबंध से ब्रह्मरूप मनवा के
सदेह अक्षरधाम बिठाते।
रहमों नज़र से इनकी क्षण में
स्वभाव और वृत्ति टल गए।
जन्मों तक साधन...

निर्दोषबुद्धि रख कर जो भी
भक्तों में रसबस हो जाए।
भक्तों की महिमा से सेवा की जिसने
उस पर अतिशय ही ढल गए।
जन्मों तक साधन...

मान में मैंने रौब किया है
मनमानी भक्ति करी है।
फिर भी तूने गोद लिया है
समझा तो आँसू निकल गए।
जन्मों तक साधन...

हे प्रभु! मुझको बल तुम देना
साधन तेरा बनकर जीऊँ मैं
जैसे जहाँ भी चलाना तू चाहे
कदम मेरे वैसे ही चल पड़ें।
जन्मों तक साधन...
काकाजी के रूप में...
स्वामी सहजानंद... (3)

✸✸✸

भजन - 4

(राग - बस्ती-बस्ती, पर्वत-पर्वत गाता जाए बनजारा...)

दोहा- ताड़देव को गुणातीत समाज की, गंगोत्री रूप बनाया।
तुम विश्वकर्मा स्वरूप हुए, गुणातीत समाज रचाया।।

जय जय जय स्वामिनारायण का जग में गूंजे नारा
ताड़देव तीरथ न्यारा } -2

ब्रह्मस्वरूप योगीबापा ने, छोड़ी एक निशानी,
याद करें काकाजी की, बलिदानों भरी कहानी।
नड़ियाद में काकाजी का, दिव्य प्राकट्य हुआ था,
पूज्य पिता माता ने, दादुभाई नाम दिया था।
जय जय जय स्वामिनारायण...

उस दिव्य तत्त्व ने अपने मन में, ये संकल्प किया था,
स्वर्ग धरती पर उतरे, ये सपना साकार किया था।
देश छोड़ परदेश गए, और वहीं से शिक्षा पाई,
मुंबई में व्यापार किया, एक सृष्टि नई रचाई।
जय जय जय स्वामिनारायण...

काकाजी ने योगीजी महाराज को हृदय बसाया,
गुरुकृपा से काकाजी का, तत्त्व सामने आया।
अक्षरपति योगी ने सोचा, शूरवीर पुरुष है निराला,
यही बात आजमाने को, सेवा की कसौटी में डाला।
जय जय जय स्वामिनारायण...

सफल कसौटी में आए, विश्वास गुरु का पाया,
दिव्य समाधि में गुरुदेव ने, साक्षात्कार कराया।
दिव्य समाधि में काकाजी ने जो दर्शन पाया,
स्वामी सहजानंद व योगीजी को एक बताया।
जय जय जय स्वामिनारायण...

एक योगी परिवार बना, प्रभु का संदेश सुनाया,
निष्कामी सेवा से, हरिभक्तों का भाग्य जगाया।
शूरवीर स्वरूप की निष्ठा, से नवक्रान्ति आई,
अपनी हस्ती मिटा दी, सो साधु मस्ती पाई।
जय जय जय स्वामिनारायण...

योगीजी महाराज ने अपना, वारिस तुम्हें बनाया,
तुम ब्रह्मस्वरूप, तुम गुणातीत, आशीर्वाद बरसाया।
पुरुषोत्तम को सर्वस्व मानकर, दिव्य संबंध बनाया,
गुरुभक्ति निर्दोषबुद्धि का, अनुपम दर्श कराया।
जय जय जय स्वामिनारायण...

काकाजी की आत्मीयता का, दर्शन तुम्हें कराएं,
ये प्रसंग जब याद करें, तो आंख में आंसू आएं।
नवयुवकों को दीक्षा देकर, साधु समाज बनाया,
जिसके बदले मिली बुराई, तो भी गले लगाया।
जय जय जय स्वामिनारायण...

बहनों को भगवान भजने का, अवसर तुमने दिलाया,
विद्यानगर में बहनों का एक, साधना केन्द्र बनाया।
निज सर्वस्व की आहुति देकर, केन्द्र की नींव भरी थी,
काकाजी ने अपने हाथों, ये शुरुआत करी थी।
जय जय जय स्वामिनारायण...

गुणातीत सत्संग को तुम, गुजरात से बाहर लाए,
दिल्ली और पंजाब में तुमने, इसके बीज उगाए।
ऐसा अलौकिक काम कोई, आसान नहीं हरिभक्तों,
हमरे काकाजी जैसा बलिदान नहीं हरिभक्तों।
जय जय जय स्वामिनारायण...

जीवन था आदर्श, सुहृद्‌भक्ति का रूप काका थे,
निःस्वार्थ प्रेम देने वाले, प्रेरणास्वरूप काका थे।
पहले ज़हर पिया तुमने, फिर बाद में अमृत पाया,
प्राणों की कुर्बानी देकर, भेददृष्टि को मिटाया,
जय जय जय स्वामिनारायण...

इष्टदेव काकाजी तुमको, कोटि-कोटि प्रणाम मेरा,
मेरे प्राणों में बस जाओ, **सांस-सांस में नाम तेरा-2**
जय जय जय स्वामिनारायण...

सभी दिशाओं में काकाजी, आपकी जय जयकार रहे,
तेरे गुणातीत बाग के फूलों से, **ये महका सत्संग रहे -2**
जय जय जय स्वामिनारायण...

✸✸✸

भजन - 5

(राग – मेरे देश की धरती सोना उगले...)

जय-जय काकाश्री SSS...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री, जय-जय काकाश्री
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री, जय-जय काकाश्री
आ... आ... आ... ओ... ओ... ओ...

उत्तर भारत में सत्संग का, ये बीज आपने बोया है,
ये बीज आपने बोया है
उद्धार करने सब मुक्तों का, 'गुरुजी' को बगीचा सौंपा है
'गुरुजी' को बगीचा सौंपा है
ओ... SS... ओ...

कोई भी अपेक्षा रखे बिना, -2
निरपेक्ष प्रेम ही बरसाया, -2
दिन-रात और देह गिने बिना, पैग़ाम योगी का फैलाया,
पैग़ाम योगी का फैलाया
जय-जय काकाश्री SSS...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाए,
जय-जय काकाश्री... जय-जय काकाश्री...

गुणातीत समाज के ज्योतिर्धरों की, करवाई पहचान तूने,
हां, करवाई पहचान तूने
उत्तर की बहनों का श्रेय करने, 'दीदी' की दे दी भेंट हमें
'दीदी' की दे दी भेंट हमें
ओ... SS... ओ...
गल्तियों को नज़रअन्दाज़ किया, -2
जीवों के रोग निर्मूल किए -2
हमजोली बन कर साथ रहे, बस मौज में प्रभु संबंध दिया,
बस मौज में प्रभु संबंध दिया
जय-जय काकाश्री SSS...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री ... जय-जय काकाश्री...

हर मोरचे पर आगे रह कर, हर वार तूने सीने पे लिया,
हर वार तूने सीने पे लिया
अपनी प्रतिभा को ढक के सदा, धन्यवाद साथीदारों को दिया,
धन्यवाद साथीदारों को दिया
मुक्तों को कटु लगे तो भी, मुक्तों को कटु लगे तो भी
अज्ञान पे उनके प्रहार किया,
मूलवृत्ति पे उनकी प्रहार किया
गुणातीतभाव को पाएं सभी, तूने तो यही प्रयास किया,
तूने तो यही प्रयास किया
जय-जय काकाश्री SSS...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री... जय-जय काकाश्री...

संबंध से ही निश्चिंत किया, आश्रितों को तूने निहाल किया,
आश्रितों को तूने निहाल किया
करने सनाथ सब मुक्तों को, 'गुरुजी' का संबंध अनमोल दिया,
'गुरुजी' का संबंध अनमोल दिया
ओ... SS... ओ...
स्वामिनारायण अलख जगा, -2
भवसागर से है पार किया, -2
आत्मबुद्धि प्रीति से जुड़ा, -2
नूतन समाज तैयार किया, -2
जय-जय काकाश्री SSS...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री... जय-जय काकाश्री...

काका की जय जयकार करें, 'गुरुजी' के स्वरूप को पहचानें
'गुरुजी' के स्वरूप को पहचानें
अभिप्राय को...
अभिप्राय को उनके समझें हम, उनकी पसंद के पात्र बनें
उनकी पसंद के पात्र बनें
मिलजुल के रहें सब मुक्तों से SS...
निर्दोष बनें मन-बुद्धि से SS...
सर्वस्व समर्पण कर दें हम, -2
रंग लें जीवन पराभक्ति से, -2
जय-जय काकाश्री SSS...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री... जय-जय काकाश्री... } -2
आ... आ... आ... ओ... ओ... ओ...

***

भजन - 6

(राग – सुनो, सुनो अतिथिगण...)

जय परब्रह्म, जय अक्षरब्रह्म, जय अक्षरमुक्त...
गुणातीत संत की, गुणातीत संत की परंपरा से गुरुजी हमने पाए हैं,
काकाजी ने जिनको, -2

दिल्ली भेज के हमरे भाग्य जगाए हैं,
गुणातीत संत की...

महाराज अपने संग अक्षरब्रह्म को लाए,
स्वामी गुणातीत श्रीजी का स्वरूप समझाएं,
वारिस जागास्वामी, अदाश्री, भगतजी बनाए,
गुणातीत की महिमा जो शास्त्रीजी को बताएं,
अक्षरपुरुषोत्तम, अक्षरपुरुषोत्तम, बोचासण के मंदिर में पधराए रहे;
शुद्ध युगल उपासना, -2
का सत्संग वो सबको दृढ़ कराए रहे,
गुणातीत संत की...

शास्त्रीजी ने स्थावर मंदिर बनवाए,
योगीजी ने कई जंगम तीर्थ बनाए,
साक्षात्कार योगीजी ने काका को कराया,
काका, पप्पा, प्रगट स्वरूपों ने समाज रचाया,
है ज्योत से ज्योत, -2
यूं प्रगट संत से हमने प्रभु ही पाए हैं;
गुणातीत संत की, गुणातीत संत की परंपरा से गुरुजी हमने पाए हैं,
काकाजी ने जिनको -2, दिल्ली भेज के, हमरे भाग्य जगाए हैं,
गुणातीत संत की...

(राग – राजीव नयन को, स्वत: चयन...)

काकाजी के सेवक, गुरुजी को अपने, **जीवन में बसाएं -2**
काकाजी के नक्शेकदमों पर तेरी तरह चल पाएं, आत्मसात् कर पाएं;
काकाजी के सेवक, गुरुजी को अपने, **जीवन में बसाएं -2**

(राग – अद्‌भुत है महिमा, दो अक्षर के नाम की...)

प्रगट का कायदा, जीवन का आधार बने -2
‘ब्रह्माग्नि’ से बचें, किसी के हम काज़ी ना बनें -2
मुक्त हैं उत्तर में भिजवाए, अक्षरधाम से आपको लाए,
हैं ब्रह्म की मूर्ति मुक्त सभी हम मान लें -2
एक कुटुंबभाव हम सत्संग में साकार करें,
प्रगट का कायदा, जीवन का आधार बने

जय मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम, जय मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम,
मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय जय।। -3

✸✸✸

भजन - 7

युग बीते, वर्ष बीते, तब जन्मे अवतार
जिनके रोम-रोम से उठती श्रीजी की पुकार
शास्त्रीजी और योगीजी की दे दी सच्ची पहचान
काकाजी के रूप में पाए गुरुहरि साकार

आ... आ... आ...

जय जय स्वामिश्रीजी, जय जय योगीजी-2
जय जय जय हो काकाजी-2
आये जग में दर्शन देने-2
तूने गाए गान योगीजी के
जय जय जय हो काकाजी...

हिमालय की गंगोत्री से,
गंगा जैसी पवित्रता से-2
आत्मीयता का धोध बहाया
काकाजी ने अनुकंपा से-2

पी ले भक्ति का - 2,
अमृत भैया, योगी तेरा गान गवैया
गुणातीत का रास रचैया-2
जय जय स्वामिश्रीजी, जय जय योगीजी-2
जय जय जय हो काकाजी-2

संबंध से सहजानंद देखा
तालाब में सागर देखा...
तूने तालाब में सागर देखा
प्रेम जल से प्यासे जग को
अपनी कृपाओं से सींचा... तूने (2)
तू अक्षरधाम का - 2
तख़्त बनैया... योगी तेरा गान गवैया

गुणातीत का रास रचैया -2
जय जय स्वामिश्रीजी, जय जय योगीजी -2
जय जय जय हो काकाजी -2

सत्यम् शिवम सुंदरम्
ना भूतो ना भविष्यति -2
तुम संसारी फिर भी काका,
इस युग के तुम महायती -2
तुम डूबे जल की -2
बन के नैया... योगी तेरा गान गवैया
गुणातीत का रास रचैया -2
जय जय स्वामिश्रीजी, जय जय योगीजी-2
जय जय जय हो काकाजी -2

सुमिरन करके काकाजी का
आंखों में पानी भर आए -2
मन की आरत चरन कमल में
हम अज्ञानी आज धरे -2
अब पार लगा दो -2
हमारी नैया... योगी तेरा गान गवैया
गुणातीत का रास रचैया...-2
जय जय स्वामिश्रीजी, जय जय योगीजी-2
जय जय जय हो काकाजी-2

***

भजन - 8

(राग – आए हो मेरी जिन्दगी में...)

आ... आ SSS...
जीवन में आप आए, प्रभु का प्रकाश बन के-3
हृदय में आ बसे तुम... श्याम...
हृदय में आ बसे तुम, अनुग्रह हज़ार करके
जीवन में आप...

निःस्वार्थ प्रेम तेरे, जैसा कहीं न पाया -2
प्रभु के ही हो के रहना, तुमने यही सिखाया

दर्शन प्रभु का पाया, दीदार तेरा करके... हो...
दर्शन प्रभु का पाया, दीदार तेरा करके
हृदय में आ बसे तुम... श्याम... हृदय में...
जीवन में आप...

मूर्ति को जब भी भूलें, प्रसंग तुम बनाते-2
फिर अपना ही बल दे के, मन का हो संग छुड़ाते
हेतनिष्ठा छोड़ कर अब, जीएं तेरे ही बन के...हो...
हेतनिष्ठा छोड़ कर अब, जीएं तेरे ही बन के
हृदय में आ बसे तुम... श्याम... हृदय में...
जीवन में आप...

प्रारब्ध टाले जैसे, प्रकृति भी छुड़ाना-2
संबंध दे दिया है, पहचान भी कराना
लीला चरित्र तेरे, हम दिव्य मानें मन से... हो..
लीला चरित्र तेरे, हम दिव्य मानें मन से
हृदय में आ बसे तुम... श्याम... हृदय में...
जीवन में आप...

हनुमान जैसा दासत्व, श्रद्धा हो शबरी जैसी
वैराग्य ध्रुवजी-सा, हो प्रीति राधा जैसी
सखाभाव हो अर्जुन-सा, हो भक्ति मीरां जैसी... हो...
सखाभाव हो अर्जुन-सा, हो भक्ति मीरां जैसी
सहज ही सरल वर्तें... श्याम...
सहज ही सरल वर्तें, भक्तों के दास बन के
जीवन में आप आए, प्रभु का प्रकाश बन के - 2
हृदय में आ बसे तुम... श्याम... हृदय में...
जीवन में आप...

***

भजन - 9

(राग – ओ... मुझे किसी से प्यार हो गया...)

ओ... जीव को हितैषी मिल गया -2
हितैषी मिल गया, परम सुहृद् मिल गया, मुक्तिदाता मिल गया;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...-2

हँसी खेल में जो जीवभाव टाले, प्रभु प्रगटा कर माया तिमिर काटे –2
बन के सच्चा गुलाम, काका का दे पैगाम, करे श्रीजी का काम;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...-2

मूर्ति जो प्रगट यहाँ, धाम में भी है वही,
धाम में भी है वही,
मान कर जीएगा जो, धाम का सुख पाए वो;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...-2

चैतन्यस्पर्शी नज़र ये तुम्हारी, करती मन को हमारे अविकारी –2
सोच में सिर्फ तुम, चाहें तुमको ही हम, तुम्हें पा जाएं हम;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...
हितैषी मिल गया, परम सुहृद् मिल गया, मुक्तिदाता मिल गया;
ओ... जीव को हितैषी मिल गया...-4

***

भजन - 10

(राग – जिस गली में तेरा घर ना हो...)

जिसके दिल में प्रगट का बसेरा नहीं
उसके दिल का है मिटता अंधेरा नहीं
लाख साधन करे तीर्थाटन करे
उसकी रातों का होता सवेरा नहीं... जिसके दिल में...

कौन है, किसका है, तू ये पहचान के,
ब्रह्म सत्य, जग है झूठ, यही तथ्य जान के,
प्रगट और उसके भक्तों को दिव्य मान के
कर ले संग संत का, फिर मिले न मिले-2
ये जन्म जाये निष्फल ना तेरा कहीं। जिसके दिल में...

अपने अंतर जगत से संबंध तोड़ ले,
हो समर्पित प्रगट प्रभु से मन जोड़ ले,
स्वामिनारायण की चुनर ओढ़ ले,
जब संबंध साधु से तेरा हो जाएगा-2
रह ना पायेगा मन में अंधेरा कहीं। जिसके दिल में...

प्रगट का अखंड चिंतन और वासना रहे,
प्रगट के सिवाय मन में कोई आस न रहे,

फिर कभी भी पुनः गर्भवास न रहे,
सूली पर भी जो साधु सुलाए अगर - 2
फिर भी संग उससे छूटे ना तेरा कहीं। जिसके दिल में...

प्रगट के संग तेरा जो सरल वर्तन रहे,
माहात्म्य सहित दृढ़ निश्चय और संबंध रहे,
भक्तों में भी तू निर्दोषबुद्धि रख मगन रहे,
तू निर्बंध और समर्थ इतना हो जाएगा -2
फिर लगेगा जहाँ में कभी फेरा नहीं।
जिसके दिल ...

✸✸✸

भजन - 11

(राग– जय हो, जय हो, आजा आजा जिन्दे शामियाने के तले...)

जय हो! जय हो! जय हो! जय हो!
अक्षरपुरुषोत्तम का है संबंध मिला,
गुणातीत संत द्वारा प्रगट मिला,
जय हो, जय हो...
अक्षरपुरुषोत्तम का है संबंध मिला,
गुणातीत संत द्वारा प्रगट मिला
जय हो, जय हो...
जय हो... जय हो... जय हो...

काठी जैसा बन के, उनसे प्रीति बढ़ाई है,
आत्मबुद्धि, कुटुंबभावना, उनमें जगाई है,
राग अपने में करवा के श्रीजी ने,
प्रारब्ध उनके टाले, उनकी प्रकृति छुड़ाई है,
अक्षरपुरुषोत्तम का है संबंध मिला,
गुणातीत संत द्वारा प्रगट मिला
जय हो, जय हो...
जय हो श्रीजी की, जय हो काकाजी, जय हो पप्पाजी, जय हो स्वामिजी

गुणातीत के द्वारा, श्रीजी क्रांति लाए,
साधना,
साधना के मार्ग पर, हैं सेरे लगाए
संबंध, उनसे, जो दृढ़, कर ले, ब्रह्मरूप, होकर, मुक्ति पाए -2

अक्षरपुरुषोत्तम का है संबंध मिला,
आज प्रगट स्वरूपों द्वारा जीतेजी मिला
जय हो, जय हो…
जय हो… जय हो… जय हो…

संबंध, श्रीजी का , हर मुक्त में देखें,
उसमें,
उसमें महाराज ही, हैं खेल रहे ये,
दिव्य, अखंड, मानें उन्हें, सबसे बड़ी सेवा है ये…
अक्षरपुरुषोत्तम का है संबंध मिला,
आज काकाजी के द्वारा हमें जीतेजी मिला
जय हो, जय हो…
जय हो… जय हो… जय हो…

***

भजन - 12

जय हो, जय हो, जय हो… – 4
कृपानिधि घनश्यामराज की जय हो…
जय हो…
सर्वेश्वर घनश्यामराज की जय हो…
जय जय हो…
कृपानिधि घनश्यामराज की जय हो…
सर्वेश्वर घनश्यामराज की जय हो…
जय हो, जय हो, जय हो… – 4

जग में हुए परब्रह्म प्रगट, आनंद की लहरी जागी
सकल सृष्टि घनश्याम की जय कर, मगन हो नाचन लागी } -2
घनश्यामराज महाराज आपकी जय हो…
जय हो…
कृपानिधि घनश्यामराज की जय हो…
जय जय हो…
अक्षरपति घनश्यामराज की जय हो…
सर्वेश्वर महाराज आपकी जय हो…
जय हो, जय हो, जय हो… – 4

छपिया के कण-कण में भक्ति की सुरभि छाई
घनश्याम बाल तेरी लीलाओं पर जन-जन वारि जाई } -2
धर्मपुत्र महाराज आपकी जय हो...
जय हो...
कृपानिधि घनश्यामराज की जय हो...
जय जय हो...
अक्षरपति घनश्यामराज की जय हो...
सर्वेश्वर महाराज आपकी जय हो...
जय हो, जय हो, जय हो... – 4

बचपन में भैया-भाभी ने मात-पिता का प्यार दिया
गुरु की खोज में घूमते रहे, और मोह-माया का त्याग किया } -2
नीलकंठ महाराज आपकी जय हो...
जय हो...
कृपानिधि घनश्यामराज की जय हो...
जय जय हो...
अक्षरपति घनश्यामराज की जय हो...
सर्वेश्वर महाराज आपकी जय हो...
जय हो, जय हो, जय हो... – 4

धर्मधुरा को सौंप के गद्दी पे गुरु ने बिठाया
स्वामिनारायण मंत्र घोष से भक्तिज्ञान फैलाया } -2
जय जय स्वामिनारायण... – 3
भक्तिज्ञान फैलाया... – 3
हे स्वामी सहजानंद, महाराज आपकी जय हो...
हे अक्षरपुरुषोत्तम, महाराज आपकी जय हो...
महाराज आपकी जय हो... – 2

ब्रह्मस्वरूप संतों, मुक्तों की परंपरा एक अखंड दी
परब्रह्म की उपासना को गति आपने नवखंड दी } -2
हे पूर्णकाम, महाराज आपकी जय हो...
कृपानिधि घनश्यामराज की जय हो...
अक्षरपति घनश्यामराज की जय हो...
सर्वेश्वर महाराज आपकी जय हो...
जय हो, जय हो, जय हो... – 8

✸✸✸

भजन - 1

(राग – अफसाना लिख रही हूं...)

झूला लो भक्तों झूला-2, झूला प्यार का
आज जन्मदिन है आया, मेरे गुरु महाराज का

झूला लो भक्तों झूला-2, झूला प्यार का
आज साल के बाद आया, दिन गुरु महाराज का
झूला लो भक्तों झूला ...

आज ताड़देव मंदिर में भक्तों, फूल बिछाए हैं-हां फूल बिछाए हैं
पावन मंदिर के मालिक को, देने बधाई आए हैं-देने बधाई आए हैं
भक्तों देखो श्रृंगार, -2 सुंदर दरबार का
आज साल के बाद आया...
झूला लो भक्तों झूला ...

हम करते हैं अभिवादन, काकाजी स्वामी का-काकाजी स्वामी का
गुरुजी बख़्शा हीरा, खुद अंतर्यामी का-खुद अंतर्यामी का
हमने भी भेद ना पाया, -2 इस चमत्कार का
आज साल के बाद आया...   झूला लो भक्तों झूला ...

भक्तों के जीवन को गुरुजी, हरदम निहारते-हरदम निहारते
दुखियों की बिगड़ी को, पल में संवारते-पल में संवारते
कैसे हम ऋण चुकाएं,-2 सच्ची सरकार का
आज साल के बाद आया...
झूला लो भक्तों झूला ...

गुणातीत स्वरूपों के पास, गुरुजी बालक बन रहते-भुलका बन रहते
काकाजी का ये प्यादा, सेवक बन कर रहते-सेवक बन कर रहते
करने को गुरुजी आए,-2 भला संसार का
आज साल के बाद आया...
झूला लो भक्तों झूला ...

काकाजी तेरे लाड़ले की, छबि निराली है-तेरी छबि निराली है
बहनों की जिम्मेदारी लिए, जी जान लड़ाई है-जी जान लड़ाई है
तेरे किए वादे जो,-2 पल -पल निभा रहा
आज साल के बाद आया...
झूला लो भक्तों झूला...

***

भजन - 1

(राग – चांद सी महबूबा हो...)

तप ध्यान योग से प्रभु मिलेंगे, ऐसा मैंने सोचा था }-2
मौज में प्रभु रंगीले मिलेंगे, सपने में नहीं सोचा था

सत्संग में खींचा आपने ही, संबंध बनाया छुपे श्रम से-2
मेरी रूचि वैसी सेवा दे, **निमित्त कुछ ऐसा बना करके-2**
संचित मेरे जन्मों जनम के, जो-जो मैंने जोड़े थे
पल में ही आपने फूंक दिए, सपने में भी नहीं सोचा था।
तप ध्यान योग...

योगी परिवार के हम जो हुए, ख़ानदानी न अपनी चूकें हम-2
महिमा का धोध यूं बहता रहे, **जगत की काई ना पाए जम-2**
कौन मिला हमें कैसा मिला है, जब भी सोचा समझा है
मानव स्वरूप में मिले परब्रह्म, सपने में भी नहीं सोचा था।
तप ध्यान योग...

प्रभु हैं प्रगट तो सीखें हम, करामात प्रत्यक्ष करने की-2
लय और लीन होकर उसमें ही, **क्रियायें करें सभी जीवन की-2**
योग और क्षेम वो वहन करेंगे, मूर्ति स्वरूप हो जाएंगे
सहजानंद मिल जायेगा, सपने में जो नहीं सोचा था।
तप ध्यान योग...

✷✷✷

भजन - 2

(राग – एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा...)

हो तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा -2
जैसे करुणा का रूप, जैसे स्नेहल स्वरूप,
जैसे शक्ति का पुंज, जैसे प्रार्थना की गूंज,
जैसे भक्तों का श्वास, जैसे निराशों की आस,
जैसे कड़कती धूप में ममता की छाँव... ओ... तेरी मूर्ति...

हो तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा -2
साधुता बेमिसाल, बदले जीवन की चाल,
देखा दीनता का भाव, देखा सरल स्वभाव,
देखा मोहक रूप, जैसे श्रीजी का स्वरूप,
तुम हो निर्दोषबुद्धि के महाराजा... ओ... तेरी मूर्ति...

हो तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा -2
सेवक सेवकों का, मसीहा बहनों का,
जैसे क्रांति का वीर, जैसे रमता फ़कीर,
अक्षय तेज का पुंज, तेरी अनोखी ही सूझ,
करे जटिल समस्या का पल में उपाय... ओ... तेरी मूर्ति...

हो तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा...-2
जैसे मैत्री का पैग़ाम, योगीजी का भक्तिगान,
सहजानंदी चेतना, हर ले मन की वेदना,
महिमा तेरी अपार, करने चैतन्य का व्यापार,
आया अनिर्देश का शाही सौदागर... ओ... तेरी मूर्ति...

हो तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा...-2
तू है दिव्यता का धोध, मन के टाले अवरोध,
कैफ़ और मस्ती अमाप, अखंड धुन और जाप,
चले प्रवाह के विरुद्ध, छेड़े माया से जंग,
देकर खुली तू चुनौती शूरवीर योद्धा... ओ... तेरी मूर्ति...

हो तेरी मूर्ति को देखा तो ऐसा लगा...-2
अनंत ज्ञान का तू स्रोत, भक्तों में तू ओतप्रोत,
अनुपम आत्मीयता, सर्वदेशीयता,
करता प्रभु का ही काज, कर ले मेरे दिल पे राज,
हे गुणातीत समाज के बेताज बादशाह... ओ... तेरी मूर्ति...-2

***

भजन - 3

(राग – ऐ मेरे दिल नादान...)

तेरा रखवाला भगवान, तू है बड़ा भाग्यवान,-2
सब चिंता का छोड़ दे भार, तुझे मिल गए संत और श्याम।
तेरा रखवाला...

तेरी अगली सदी का हाल, तुझे उसका नहीं है ख्याल,
पिछली सदी का कुछ ज्ञान, तुझे बिल्कुल नहीं नादान,
इस सदी में मिले भगवान, तू स्वयं बन जा पैगाम।
तेरा रखवाला...

जो करता है भगवान, हित से भरी प्रीत का निशान,
कर अंतर से स्वीकार, रख हृदय में विश्वास,
सर्वजीवहितावह का, कार्य दर्शन है आसान।
तेरा रखवाला...

तेरे मन के जो रिश्तेदार, खुदा उसके हैं जिम्मेदार,
प्रभु की है यही मुराद, प्रभु-सा ना हो किसी का स्थान,
उत्तम है प्रभु का नाम, बन जा तू फरिश्ता आज।
तेरा रखवाला...

✸✸✸

भजन - 4

(राग – कभी खुशी, कभी गम...)

आ... तेरी मूर्ति हो जीवन,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम...
आ... आ...-2
मस्ती प्रभु की हो ना कभी कम, मुक्तों को दिव्य मानें यदि हम,
मस्ती प्राप्ति की हो ना कभी कम, मुक्तों को दिव्य मानें यदि हम,
तेरे अंतर की प्रसन्नता पाने
सीखें मन का असंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।

दादुभाई के मंडल के, कहे हम हैं जाते,
'सर्वोपरि स्वामिनारायण', क्यों ना मान पाते,
आ... आ... ओ...ओ...
दादुभाई के मंडल के, कहे हम हैं जाते,
'सर्वोपरि स्वामिनारायण', क्यों ना मान पाते,
ब्रह्मनियंत्रित सभी, मुक्त हैं जान लें, -2
सच्चे सुहृद सभी के बनें हम,
सीखें मन का असंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।

एक होकर जो, कुटुंबभाव से रहें हम,
कलियुग में सतयुग तू प्रगटाए,

आ... आ... ओ...ओ...
एक होकर जो, कुटुंबभाव से रहें हम,
कलियुग में सतयुग, तू प्रगटाए,
चिंता सब छोड़ के, तेरा चिंतन करें, -2
हरदम रक्षा करता तू हर पल,
छोड़ें मन का कुसंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।
मस्ती प्रभु की हो ना कभी कम, मुक्तों को दिव्य मानें यदि हम, -2
तेरे अंतर की प्रसन्नता पाने
सीखें मन का असंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।
आ... तेरी मूर्ति हो जीवन,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम...

✷✷✷

भजन - 5

(राग – मिल के भी हम न मिले, तुमसे न जाने क्यों...)

तुझसे रखें न कोई मन की चोरी, अंतरायरहित हो जाएँ ,
तेरे मेरे बीच में अब पतला पर्दा भी न रह पाए,
मिट जाएंगे तब, अंतर के द्वंद्व,
पाएंगे मूर्ति का, सच्चा आनंद।
मिला जो, जोग हमें, गुणातीत संत का,
स्वरूप हम, पहचान लें, गुणातीत संत का,
आशीर्वाद, झेल लें हम, गुणातीत संत का,
संबंधी, दिव्य मानें, गुणातीत संत का...
तुझसे रखें न कोई मन की चोरी, अंतरायरहित हो जाएँ ,
तेरे मेरे बीच में अब पतला पर्दा भी न रह पाए,
मिट जाएंगे तब, अंतर के द्वंद्व,
पाएंगे मूर्ति का, सच्चा आनंद।

संबंध किया हो सत्पुरुष से जो खरा, गुण उनके स्वतः आ जाते हैं,
हो... विरोध प्रकृति वालों के स्वभाव जँचाएं, स्वभाव अपने टल जाते हैं,
जान कर ये सब भी, हमसे क्यों होता नहीं,

'स्व' प्रयत्न से न करें, बल प्रभु का लें, बन पाएं
प्रकाश हम, गुणातीत संत का,
स्वरूप हम, पहचान लें, गुणातीत संत का...
तुझसे रखें न कोई मन की चोरी, अंतरायरहित हो जाएँ ,
तेरे मेरे बीच में अब पतला पर्दा भी न रह पाए,
मिट जाएंगे तब, अंतर के द्वंद्व,
पाएंगे मूर्ति का, सच्चा आनंद,

उद्यम संत का, ये न रहे पीली छांट भी, जीव के हित में क्रिया करते हैं,
हो... मान्यता पकड़ के, करके तुलनाएँ ही हम,
संत में मायिकभाव रखते हैं,
अपेक्षा ही रखते रहे, तुझसे अभी तक हम,
तेरी अपेक्षा समझें, जीवन वैसे जीकर, बाँटे
संबंध हम, गुणातीत संत का,
स्वरूप हम, पहचान लें, गुणातीत संत का,
आशीर्वाद, झेल लें हम, गुणातीत संत का,
संबंधी, दिव्य मानें, गुणातीत संत का...
तुझसे रखें न कोई मन की चोरी, अंतरायरहित हो जाएँ ,
तेरे मेरे बीच में अब पतला पर्दा भी न रह पाए,
मिट जाएंगे तब, अंतर के द्वंद्व,
पाएंगे मूर्ति का, सच्चा आनंद,
मिट जाएंगे तब, अंतर के द्वंद्व,
पाएंगे मूर्ति का, सच्चा आनंद,
हो... पाएंगे तुमसे ही सच्चा आनंद।

***

भजन - 6

(राग– मेरा जूता है जापानी...)

तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी,
तेरे संकल्प में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

अनंत ऐश्वर्य होते हुए भी, सेवक बन कर रहते
सेवक बन कर रहते

साकार योजना करने काका की, परिश्रम अविरत करते
परिश्रम अविरत करते
तेरे भजन में हैं काकाजी, तेरी मूर्ति हैं काकाजी,
तेरी स्मृति में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी,
तेरे संकल्प में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

सांगोपांग काकाजी को धारे, जीवनशैली हुबहु है
जीवनशैली हुबहु है
जगाए गुणातीत अस्मिता, साधुता भी ऐसी है
साधुता भी ऐसी है
तेरी दौलत तो काकाजी, तेरी हुंडी बस काकाजी,
हुकुम का इक्का बस काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी,
तेरे संकल्प में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

अक्षरधाम के कुशल कारीगर, मिले काकाजी ऐसे
मिले काकाजी ऐसे
अद्भुत चैतन्यशिल्पी जिन्होंने, घढ़ दिए गुरुजी जैसे
घढ़ दिए गुरुजी जैसे
देखें मुक्तों में काकाजी, प्रेरक कर्त्ता बस काकाजी,
कर ले आपको जो राजी, पा ले बख़्शिश में काकाजी!
तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी,
तेरे संकल्प में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

भजन - 1

(राग – दीदी तेरा देवर दीवाना ...)

ललला... लई... लई...ला...
थोड़ा-सा भी गुरुजी को जाना, ओ! थोड़ा-सा भी गुरुजी को जाना
पाया उसने ख़ुशी का ख़ज़ाना-2
प्रभु से संबंध उसका कराया, अरे! प्रभु से संबंध उसका कराया
सार्थक जीवन, फिर उसका बनाया-2
ललला... लई... लई...ला...

कभी पथ प्रदर्शक, तू राह दिखाए
तो कभी है सखा, ख़ुद हँसे और हँसाए
रसबस हो के सुख-दुःख, तू बांटे सभी का
लगे अपना सबको, पर तू काकाजी का
महिमा काकाजी की तू गाता
अरे! महिमा काकाजी की तू गाता
दर्शन जीवंत, उनका कराता-2
ओय होय... थोड़ा-सा भी गुरुजी को जाना...
ललला... लई... लई...ला...

पल में ही बदल दे, तू जीवन की धारा, बने केन्द्र जीवन का, प्रेम तुम्हारा
हँसी खेल में ही जगत तू छुड़ा दे, गुण दोष न देखे तेरी, गोद बिठा दे
जीव में प्रभु का निश्चय करा कर
जीव को चैतन्य मंदिर बनाना-2
थोड़ा-सा भी गुरुजी...

रप प प पा तू रु रु...
टले मन का आभास, ब्रह्मरूप बनें हम
तेरा ध्यान करके, मर्जी में रहें हम
नज़र एक पल भी, निशां से चूकें न
ऐश्वर्य रिद्धि-सिद्धि गिरा अब सके न
साधन हमको अपना बनाना-2
तुमसे ही हैं हमें प्रभु पाना-2
थोड़ा-सा भी गुरुजी को जाना-2
पाया उसने ख़ुशी का ख़ज़ाना...-4

✷✷✷

भजन - 1

(राग – सोचा नहीं अच्छा बुरा, देखा सुना कुछ भी नहीं...)

दर्शन करूं सभी में तेरा, नाम तेरा न भूलें कभी,
इतनी कृपा तू करना प्रभु, स्वभाव मेरे छूटें सभी। } -2

प्रत्यक्ष में हो निष्ठा मेरी, वो जो कहें करूं मैं वही-2
उसकी क्रियाएं, उसके चरित्र, मुझको लगें दिव्य सभी।
इतनी कृपा तू...

दोष मैं औरों के देखूं नहीं, सह लूँ मैं सब, गलत या सही-2
मुक्तों में स्वामी देखूं सदा, अभाव किसी का न आए कभी।
इतनी कृपा तू...

मद, मान, मोह, न कोई वासना, बस एक सरलता की ही कामना-2
अंतरायरहित का संबंध बने, वरदान ऐसा दे दो अभी।
इतनी कृपा तू...

सुख का हो हर्ष, न दुःख का हो शोक, मस्ती हो बस एक तेरी मूर्ति की-2
कृपा से न केवल प्रगट ब्रह्म मिले,
करवा दी तूने है पहचान भी
इतनी कृपा तू...   दर्शन करूं सभी...

***

भजन - 2

(राग – न कजरे की धार...)

हो-ओ SSSSS
दर्शन से एक बार, हो अंतर पर अधिकार
करे ऐसा चमत्कार, तुम काका के सैनिक हो
काका के सैनिक हो
आ... आ...
मुक्तों को लेकर साथ, हैं प्रभु मिले साक्षात्
साधु के रूप में आज, तुम तो मेरे गुरुवर हो
तुम्हीं तो मेरे गुरुवर हो

आशिष दिए बापा ने, तुम तो निर्दोष ही हो-2
संबंध में जो आएगा, निर्दोष उसे कर दोगे

ये आशिष, बापा के-2, हो गए हैं साकार
दर्शन से एक बार...

संकल्प, क्रिया और भाव, काकामय होकर करते-2
काका का झमूरा बनकर, उनका ही कार्य हो करते
काका तुझ में, तू काका में-2, हुए दोनों एकाकार
दर्शन से एक बार...

सेवा, स्मृति और समागम, इनका ही आग्रह रखते-2
संप, सुहृद्भाव और मैत्री, इसका संदेश ही देते
दिव्य संकल्प काकाजी का-2, बने ऐसा सुहृद् समाज
दर्शन से एक बार...

प्रगट स्वरूप से जोड़े, जीव किसी भाव से आए-2
हर क्षण, हर पल उस पर तू, ममता का धोध बहाए
ध्येय तेरा पहचानें-2, करो प्रार्थना स्वीकार
दर्शन से एक बार... मुक्तों को लेकर...

✸✸✸

भजन - 3

(राग – चौदवीं का चांद...)

दिल और दिमाग़ का, समन्वय कमाल हो,
दिल्ली को भेंट काकाजी की, बेमिसाल हो
दिल और दिमाग़ का...

सूरजमुखी ज्यों देखता रहे, सूर्य की तरफ
जीवन हैं जीते आप यूं, काका को देखकर
ख़ुद जल के जो दिखाती है राह, वो मशाल हो।
दिल और दिमाग़ का...

एक जैसी महिमा आपको, सारे स्वरूपों की
अभिप्राय भक्ति आप तो, करते हैं काका की
भजनिक विरल हो, साधुता की मिसाल हो।
दिल और दिमाग़ का...

कॉलेज में ब्रह्मविद्या की, दाखिल हमें किया
कहा ऐसे न बरते तो भी, बाहर नहीं किया

लोहे को भी पारस करे, वो प्रभु के लाल हो।
दिल और दिमाग़ का...

सामर्थ्य प्रभु का मगर, सेवक ही बन रहे
बर्ताव सख़्त, पर हृदय वात्सल्य ही बहे
मां की तरह हम 'भुलकों' का रखते ख्याल हो।
दिल और दिमाग़ का...

***

भजन - 4

(राग – भैया रे, भैया रे, भैया नैया छुआओ...)

देखो आयो रे, आयो रे, देखो आयो रे
देखो आयो रे, आयो रे, देखो आयो रे
ऊँ हु... ऊँ हु... ऊँ हु...
आयो रे, आयो रे, आयो, प्रभु भजवाने
माया के बंधन से मुक्त कराने
आयो रे, आयो रे, आयो हो...

बाल लीलाएं तेरी, याद दिलाएं हमें, मोहन मुरलीधर की
ऊँ... ऊँ...
बाल लीलाएं तेरी, याद दिलाएं हमें, **मोहन मुरलीधर की -2**
चित्त पे छा जाते हो, मन को लुभाते हो, **देकर मूर्ति प्रभु की - 2**
हे, आयो रे, आयो रे, आयो हो...
आयो रे आयो...
माया के बंधन से...
आयो रे... आयो हो..

हंसी नटखट तेरी, चाल मटक तेरी, **आंखें बड़ी-बड़ी हैं -2**
करते हैं बस भला जीव का, **इन्हें कोई स्वार्थ नहीं है - 2**
हे, आयो रे, आयो रे, आयो हो...
आयो रे, आयो...
माया के बंधन से...
आयो रे... आयो हो..

सौ-सौ शरद जीओ, हे प्यारे गुरुजी, लगे तुम्हें हमरी उमरिया
ऊँ... ऊँ...

सौ-सौ शरद जीओ, हे प्यारे गुरुजी, **लगे तुम्हें हमरी उमरिया-2**
हे आयो, रे आयो, रे आयो हो...
आयो रे आयो...

ओ... ओ... ओ...
निर्दोष तुम हो, दिव्य भी तुम हो, हमको भी ऐसा बनाना, गुरुजी
हमको भी ऐसा बनाना
कल्याणकारी गुण बख़्शिश दे, साधुता प्रगटाना, गुरुजी
ब्रह्मरूप हमको बनाना
हे आयो, रे आयो, रे आयो, प्रभु भजवाने
माया के बंधन से मुक्त कराने
आयो रे, आयो रे, आयो हो...

✵✵✵

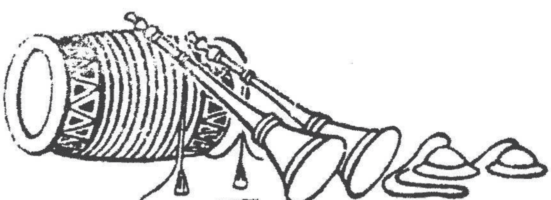

भजन - 1

(राग – वाह–वाह रामजी! जोड़ी क्या बनाई...)

धन्य-धन्य काकाजी, कृपा क्या बरसाई
हम सब भक्तों ने, निराली भेंट पाई,
साधु गुरुजी जैसे देकर लॉटरी सबकी लगाई...
धन्य-धन्य काकाजी-3

काका का दर्शन, है तुम्हें पल-पल
परिश्रम उनका किया तुमने सफल
अखंड प्रभु में रहते हैं
अखंड प्रभु में रहते हैं, कार्य उनका करते हैं,
सेवा मुक्तों की करते हैं, महिमा प्रभु की गाते हैं
गुणातीत अस्मिता, यहां प्रगटाई
हम सब भक्तों ने, निराली भेंट पाई
साधु गुरुजी...
धन्य-धन्य काकाजी-3

निर्गुण मूर्ति, प्यारी कैसी
निर्दोषता है बालक जैसी
टाले सारी कसर
टाले सारी कसर, तेरी रहम नज़र, बना मूर्ति सभर, करे माया से पर
मुफ्त में हमने आज, चिंतामणि पाई
हम सब भक्तों ने, निराली भेंट पाई
साधु गुरुजी...
धन्य-धन्य काकाजी-3
ये समय ये स्थल, ऐसा योग विरल
प्रभु पाने का रस्ता ये सरल
अवसर खो न जाए
अवसर खो न जाए, स्वरूप मिल न ये पाए, फिर हम पछताएं,
कहीं जन्म न गवाएं
प्रभु पा लेने की, 'सेल' है लगाई

हम सब भक्तों ने, निराली भेंट पाई
साधु गुरुजी...
धन्य-धन्य काकाजी-3

✵✵✵

भजन - 2

(राग – धन्य–धन्य शरद्पूनम का दिन...)

धन्य-धन्य शरद्पूनम का दिन - 4
प्रगट हुए हैं स्वामी करुणानिधान -2
भला करने पधारे स्वामी इह लोक में हैं आज
धन्य-धन्य शरद्पूनम का दिन...

संत हरिजन के मन में, समाए न उमंग अंतर में -4
आनंद बधाई रे-2 हो... हुई त्रिलोक में रे आज
भला करने पधारे...

पहनी है दक्षिणी पाग अनूप, सिर पर छत्र धरा सुखरूप-4
ऐसी तो शोभा रे-2 हो... धर रहे नाथजी रे आज
भला करने पधारे...

केसर चंदन लगाया है भाल, उसमें कुमकुम चमके है लाल - 4
अखंड मुनि को रे-2 हो... करने सनाथ रे आज
भला करने पधारे...
धन्य-धन्य शरद्पूनम का दिन...

✵✵✵

भजन - 3

(राग–जिंदाबाद – जिंदाबाद ए मोहब्बत जिंदाबाद...)

कृष्ण को राजी किया, अभिप्राय की भक्ति से,
बना पार्थ, नारायणस्वरूप नर से।।

धन्यवाद, धन्यवाद, योगीबापा तुम्हें धन्यवाद!
योगीबापा तुम्हें धन्यवाद।
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद!
संबंध गुरुजी का देकर -2

कर दिया हमें निहाल!
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद!
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद

द्वैत नहीं विशिष्ट अद्वैत है, काकाजी का ही रूप हो तुम,
उद्धारक चैतन्यों के, गुणातीत समाज की शान हो तुम,
पहचान काकाजी की देना, यही तेरा अरमान।
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद!
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद...

सहज, स्वाभाविक क्रिया अलौकिक, पल-पल प्रेरक हैं भगवान,
मानव से महामानव करने, तेरी क्रिया, तेरा अभियान,
वाणी तेरी ब्रह्मसरिता, वर्तन तेरा ब्रह्मज्ञान।
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद!
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद...

मुक्तों के वृत्ति स्वभाव का प्रवाह प्रभु ओर तू मोड़ दे
बाह्य जगत व अंतर्मन के, मायाजाल को तोड़ दे,
करण प्रभु का बना कर तू, शाश्वत् सुख देता अपार।
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद!
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद...

आ...आ...आ...आ...आ...
बंधे रहें न मान्यताओं में, आदर्शों और सत्यों में,
परम सत्य स्वरूप से बंधकर, निर्बन्ध अब हम हो जाएं,
'स्व' तुझमें विलीन कर दें, बस एक तेरा आकार रहे, -2
कृष्ण से जैसे पार्थ जुड़ा, यूं तुमसे जुड़ें हम नाथ।
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद!
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद...
धन्यवाद...धन्यवाद...धन्यवाद...

***

भजन - 1

(राग – मेरा रंग दे बसंती चोला...)

साखी- *योगी की पहचान करा कर, अनंत को किया निहाल,*
फनां हो गया फरिश्ता वो, रचने योगी परिवार।
हम सब एक होकर रहें बस, रखा यही अरमान,
एकता का ध्वज लहराने, दिया अपना बलिदान
दिया अपना बलिदान।

नवयुग का प्रणेता निराला, नवयुग का,
नवयुग का प्रणेता निराला तू,
श्रीजी का मतवाला, काका, योगी का तू मतवाला।

खुल्ले पत्तों से बाजी खेली, एक आधार प्रभु का लिया-2
मुक्तों से खेल दिली से हारे, और योगी को जीत लिया।
योगी का उपवन तुमने जो सींचा, -2
आज वो फला फूला, काका, योगी का मतवाला।
नवयुग का प्रणेता निराला...

योगी तुझ में, तू योगी में, ऐक्य ये दिव्य कमाल है-2
योगीजी ही रास रचा रहे, निंदा स्तुति समान है।
अक्षरधाम धरा पर लाकर,-2
दिव्यानंद देने वाला, काका, योगी का मतवाला।
नवयुग का प्रणेता निराला...
काकाजी का अदना सैनिक बन कर जो पल-पल जिए-2
संबंध में आया, जीवन में उसके काकाजी प्रगटा दिए।
दुर्लभ योग मौज में मिला, दुर्लभ योग मौज में मिला,
मुक्तों का मतवाला, गुरुजी, काकाजी का मतवाला।
नवुयग का प्रणेता निराला...

आज्ञारूपी मूर्ति लेकर गुरुजी दिल्ली आ बसे -2
साथ खड़े रह कर सुख-दुःख में, मुक्तों के दिल में जो बसे।
पूर्ण के संबंध से, पूर्ण करेंगे
पूर्ण करेंगेSS...

पूर्ण के संबंध से, पूर्ण करेंगे,
स्वरूप मिला वो निराला, गुरुजी, काकाजी का मतवाला।
नवयुग का प्रणेता निराला...

✹✹✹

भजन - 2

(राग – अखियाँ मिलाऊँ –कभी अखियाँ चुराऊँ...)

निश्चिंतता मिली उस दिन से हमें; जिस दिन से मिला है तू-3
लय और लीन रहूं तुझमें, जीऊं बन के तेरी खुश्बू
तुम्हीं गुरु मेरे, तुम्हीं हो प्रभु -2
निश्चिंतता मिली उस दिन से हमें; जिस दिन से मिला है तू-3
लय और लीन रहूं तुझमें, जीऊं बन के तेरी खुश्बू
करूँ अब मैं वो ही, चाहे जो तू-2
आ... आ...

सदा मुक्तों की सेवा करूँ, दास का तेरे दास रहूँ
दोष किसी का ना देखा करूँ, मूर्ति में बस मस्त रहूँ
आशिष जब तू बरसाता, रखूँ न मैं मन का छाता
मेरे जीवन में रहे समता, मानूं तुझे कर्ताहर्ता
निश्चिंतता... आ... आ...

छेड़े जब तू तंत्र मेरा, दिव्य तुझे मन माने मेरा
'डिवाईन लव' तेरा न्यारा, कर दिया जग तूने खारा
गुण, सत्ता या मान्यता, तुड़वा ना पाए ये नाता
छुड़वा के मन की जड़ता, प्रगटा दो प्रभु साधुता
निश्चिंतता... आ... आ...

क्या करने यहाँ आए हम, *'चैकिंग'* तो करें कम से कम
स्वभाव को नहीं पोषें हम, प्रगति तभी कर पाएंगे हम
एकांतिक का प्रसंग कर लें, जिससे मायिकभाव टले
सर्वोपरि हैं हमको मिले, उसका ही बल ले के चलें
निश्चिंतता... आ... आ...

✹✹✹

भजन - 3

(राग – कहाँ गए वो वचन तुम्हारे...)

भक्ति उत्सव आज मनाएं, शाश्वत् ये पल कर लें।
प्रगट प्रभु जो आज मिले, अध्यात्म संबंध हम कर लें।।

निजात्मानं ब्रह्मरूपम्, निजात्मानं ब्रह्मरूपम्
ब्रह्मरूप हो परब्रह्म धर ले-2
एकांतिक का ये धरम, निजात्मानं ब्रह्मरूपम्
जय हो भक्ति उत्सव की, जय हो पप्पाजी महाराज की
जय हो धाम, धामी, मुक्तों की

सर्वोपरि स्वामिनारायण, अक्षरब्रह्म को संग ले आए;
अखंड धरा पर प्रगट रहूंगा-2, भारत पर आशिष बरसाए,
श्याम, घनश्याम, धन्यवाद, धन्यवाद...
आज प्रभु वो कहां बिराजे-2, कहां वो श्रीजी स्वयं?
कहां वो श्रीजी स्वयं, कहां वो श्रीजी स्वयं?

(राग – राम कहाँ, राम कहाँ...)

श्रीजी यहां..., श्रीजी यहां...
पप्पाजी के रूप बिराजे, पहचानों हैं श्रीजी यहां, श्रीजी यहां,
श्रीजी यहां...

स्वर्ग धरती पर उतरे ये दो, बंधुओं ने संकल्प किया;
गुणातीत अस्मिता प्रगटा कर, अक्षरधाम अवतरित किया;
चैतन्यों के शिल्पी अनूठे, सर्वावतारी श्रीजी यहां, श्रीजी यहां,
श्रीजी यहां...

क्या गलत है बात अगर, बहनें भी भगवान भजें;
झेला वचन योगी का पप्पा, काका, बा की त्रिमूर्ति ने;
अमर गुणातीत भाव बहनों में, प्रगटाया वो श्रीजी यहाँ,
श्रीजी यहां, श्रीजी यहां...

युवकों, गृहस्थों, संतों और बहनों के मंगल हो तुम;
स्वरूप हो प्रभु का फिर भी, सेवक बनकर जीते तुम;
कल्याणदाता, मुक्तिदाता, भक्तवत्सल श्रीजी यहाँ, श्रीजी यहां,
श्रीजी यहां...

अल्प संबंधी चाहे हो, दिव्यभाव से सेवा करी;
स्वरूपनिष्ठा दृढ़ कराई, देखा किसी का कुछ भी नहीं;
ब्रह्मरूप होकर के जिनको, पाना है वो श्रीजी यहां, श्रीजी यहां
श्रीजी यहां...

वेदों के नारायण यहां, उपनिषद् के ब्रह्म यहां,
भागवत् के भगवान यहां, हनुमान के राम यहां;
गोपियों के श्रीकृष्ण यहां, गीता के परमात्मा यहां,
अर्जुन के सारथी भी यहां, सिक्खों के गुरु नानक यहां,
योगी परिवार के योगी यहां हैं,
परमहंसों के महाराज यहां हैं,
गढ़पुर के गोपीनाथ यहां...
श्रीजी यहां... श्रीजी यहां...
श्रीजी यहां...।।

***

भजन - 4

(राग– भांगड़ा – बाबे भांगड़ा पौन्दे...)

ना व्रत-दान कीता ना भक्ति, ना थी जगत से कोई विरक्ति,
चाहे फितरत हो न चंगी, चाहे चाल भी हो बेढ़ंगी,
बस मौज में संबंध देकर, जीव को ब्रह्मरूप करते हैं,
जनम-मरण के फेरे, काकाजी तो टालते हैं
जनम-मरण के फेरे, पप्पाजी तो टालते हैं
ब्रह्मरूप करते हैं, जीव को ब्रह्मरूप करते हैं
जनम-मरण के फेरे, काकाजी तो टालते हैं
जनम-मरण के फेरे, पप्पाजी तो टालते हैं...
ना कोई त्याग कराया, ना कुछ कहा छोड़ने को, } -2
हमजोली बन संग रहे, अपने से जोड़ने को,
राग करा के अपने से, बैरागी ये करते हैं,
जनम-मरण के फेरे, काकाजी तो टालते हैं
जनम-मरण के फेरे, पप्पाजी तो टालते हैं...
करा भरोसा जिसने, काका तुमने निभाया है **-2**
जिसने जहाँ पुकारा, तुमको साथ ही पाया है **-2**

मेहर से आपकी ही हम, आज तो मौजा करते हैं
जनम-मरण के फेरे, काकाजी तो टालते हैं
जनम-मरण के फेरे, पप्पाजी तो टालते हैं...

अजीज आपने माना, कैसे कर्ज़ उतारें हम,
जिन मुक्तों संग रखा, उन्हें दिव्य ही मान लें हम, }-2
एक मन हो, भेद मिटे सब, अरज ये करते हैं
जनम-मरण के फेरे, काकाजी तो टालते हैं
जनम-मरण के फेरे, पप्पाजी तो टालते हैं...

ना व्रत-दान कीता ना भक्ति, ना थी जगत से कोई विरक्ति,
चाहे फितरत हो न चंगी, चाहे चाल भी हो बेढ़ंगी,
बस मौज में संबंध देकर, जीव को ब्रह्मरूप करते हैं,
जनम-मरण के फेरे, काकाजी तो टालते हैं
जनम-मरण के फेरे, पप्पाजी तो टालते हैं...
ब्रह्मरूप करते हैं, जीव को ब्रह्मरूप करते हैं
जनम-मरण के फेरे...
जनम-मरण के फेरे, काकाजी तो टालते हैं
जनम-मरण के फेरे, पप्पाजी तो टालते हैं...

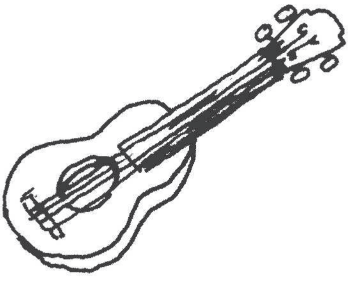

भजन - 1

(राग – वरसोथी संघरी राखेली...)

पप्पाजी के रूप में पुरुषोत्तम का दास है-2
गुणातीत स्वरूप विभूति हो...
धरा के - आप मंगल हो-2

माया पर का ज्ञान हो प्रत्यक्ष, ऐसा आपका वर्तन
प्रकृति पुरुष तक के कार्य का कोई नहीं है स्पंदन
पारदर्शी पुरुष हैं, चैतन्य को ये पहचानें
जीवलक्षी सेवा सौंप के, कसर ये सारी टालें

प्रकाश योगी का बन जीएं, ज्योतिर्धर हैं उनके
मुक्तों को ब्रह्म की मूर्ति मानें, दर्शन करते उनके
दिव्य सदा साकार ये मूर्ति, अनिर्देश से आई है
कर्ताहर्ता हर प्रसंग की सदैव मंगलकारी है,
वाणी, वर्तन और विचार में अंतर्दृष्टि की छन्नी हो
संकल्प, भाव और क्रिया हमारी, केवल तुझ में रह कर हो।

(राग – हुं नथी पूछतो...)

ज्ञान अहं छोड़ कर दीनता से रहें,
खो के मुक्तों में सब के सुहृद् हम बनें } -2
सभी चैतन्य, हुं...
सभी चैतन्य हैं प्रगति करते हुए, दास उनका बनें, वो ही है अर्चना,
है अर्चना...
हे गुणातीत योगी स्वरूप पप्पाजी...

प्रसंग कोई भी हो हम विचारें यही,
भार प्रभु के सिवा किसी का तो नहीं } -2
धाम-धामी, हुं...
धाम-धामी, मुक्तों की सेवा करें और बाकी सभी है फिज़ूल कल्पना,
कोरी कल्पना
ऐसा संबंध मिला वो ही सौभाग्य है,
गोद मिली आपकी वो ही है धन्यता,

वही दिव्यता
हे गुणातीत योगी स्वरूप पप्पाजी...

भले ही भक्ति भी ऐसी ना कर पाएं हम, } -2
चाहे स्थिति पर ऐसी ना पहुंच पाएं हम
साथ हमारे,
साथ हमारे सवा सौ बरस धरती पर आप इसी रूप रहना यही याचना,
यही याचना
हे गुणातीत योगी स्वरूप पप्पाजी...
कर लो स्वीकार 'भुलको' की ये प्रार्थना,
ये प्रार्थना
हे गुणातीत योगी स्वरूप पप्पाजी...।
कारण... वरसोथी संघरी राखेली दिलनी वात जणावुं छुं -2
सुरत राखीने सांभणजो...
तमे बहु, मने गमो छो...-4

✷✷✷

भजन - 2

(राग – बीते हुए लम्हों की...)

कभी अलविदा मत कहो मुक्तों,
है शाश्वत संबंध पप्पाजी का मुक्तों
है शाश्वत संबंध पप्पाजी का मुक्तों
क्योंकि —

पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं, -2
पुकार करें हम..., प्रत्यक्ष वो होंगे,
बीते हुए लम्हों की कसक साथ तो होगी,
हम हों कहीं भी जरुर साथ वो होंगे;
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।

ब्रह्मज्ञान तूने हमको, आजमा कर दे दिया,-2
दिव्य बंधु की जोड़ी ने, ब्रह्मसमाज रच दिया,
तेरी मूर्ति को व्यापक में, निहारा ही करेंगे, -2
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।
पुकार करें हम..., प्रत्यक्ष वो होंगे।

अनुभव के खज़ाने दिए, स्मृतियों की दी दौलत, -2
सुख धाम का यहीं पाया, तुम्हारी ही बदौलत,
करी परवरिश ज्यों अब तक, सदा वैसी करोगे -2
पुकार करें हम..., प्रत्यक्ष वो होंगे,
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।

लाड़ तुमने जो लड़ाए, मोल समझे नहीं हम,-2
मायूस हो ग्लानि से, अब आँखें होती नम,
लयलीन तुझमें हो के, अनुवृत्ति खींचे हम,
पहचान बनें तेरी, जीवन जीए यूं हम।
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।
पुकार करें हम..., प्रत्यक्ष वो होंगे।
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं -2

***

भजन - 3

(राग – झिलमिल सितारों का आँगन होगा...)

प्रगटे गुरुजी वो शुभ दिन आया, जीवन हमारा धन्य बनाया -2
आज सभी के तन-मन में है, ब्रह्मानंद समाया...
प्रगटे...

काकाजी में अतिशय प्रीति और विश्वास तुम्हारा है
काकाजी में अतिशय प्रीति... हो...
काकाजी में अतिशय प्रीति और विश्वास तुम्हारा है
पप्पा स्वामी के स्वरूप में, हरदम उन्हें निहारा है
स्नेह प्रीति संकल्प आदि से, तुमने हमें उबारा है
भक्तों की महिमा गाए जो, वो तुमको अति प्यारा है
वर्तन तेरा सब स्वरूपों को भाया-जीवन...

आप स्वयं निर्दोष सदा ऐसी करुणा बरसाते हो
आप स्वयं निर्दोष सदा... हो...
आप स्वयं निर्दोष सदा ऐसी करुणा बरसाते हो
अपने संबंध वालों को पल-पल निर्दोष बनाते हो
आप सरल हो, सुहृद् हो सब को ये मंत्र सिखाते हो

इसी सरलता से बस तुम सब के मन में बस जाते हो
तेरे स्वरूप में, काकाजी को पाया-जीवन...

महिमा तेरे रोम-रोम से पल-पल छलका करती है
महिमा तेरे रोम-रोम से... हो...
महिमा तेरे रोम-रोम से पल-पल छलका करती है
महिमा से सबको देखो बस, ऐसी तेरी दृष्टि है
ऐसी दृष्टि हमको बख़्शो बस इतनी सी विनती है
जिस जीवन में तुम नहीं गुरुवर, उसकी क्या कोई गिनती है
जीवन वही तू जिसमें समाया-जीवन...

सच में शासन तेरा हो, बस ऐसा हमें बना देना
सच में शासन तेरा हो... हो...
सच में शासन तेरा हो, बस ऐसा हमें बना देना
तू ही तू हो अंतर में बस बाकी सभी भूला देना
इस पावन बेला पर बस इतनी करुणा बरसा देना
सबके मन मंदिर में अपनी मूर्ति बसा देना
तेरे स्वरूप को जो पहचान पाया...
जीवन उसी ने धन्य बनाया
आज सभी के तन-मन में है, ब्रह्मानंद समाया
प्रगटे गुरुजी वो शुभ दिन आया
जीवन हमारा धन्य बनाया...

***

भजन - 4

(राग–अगर तुम मिल जाओ, जमाना छोड़ देंगे हम...)

प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हों हम-3
तेरा संबंध ही देखें, अब अपनी सोच छोड़ें हम,
प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हों हम-2

बने बंसी तेरी हम तो तेरा ही सुर सुनाई दे,-2
मुक्तों की क्रियाओं में तेरी लीला ही दिखाई दे;
निर्दोष उनको हम मानें, ओSS ओ...
निर्दोष उनको हम मानें, निर्दोष हो जाएंगे हम।
प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हों हम।।

मानव योनि से महामानव की योनि में चले जाएं,-2
भजन और प्रार्थना से, अंतर की मूर्ति को हिलाएं;
एकता ही एकांतिक धर्म, ओSS ओ...
एकता ही एकांतिक धर्म, लक्ष्य यही अपना बना लें हम
प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हों हम।।

काकाजी से वफादारी, तुम्हारे जैसी सीखें हम,-2
स्मरण मूर्ति का करके ही, हर एक क्रिया करें आरंभ,
प्रगट प्रभु को राजी करना, ओSSओ...
प्रगट प्रभु को राजी करना, हमारा हो वही उद्यम।

प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हों हम
तेरा संबंध ही देखें, अब अपनी सोच छोड़ें हम,
प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हों हम-2

***

भजन - 5

(राग – सजनवा बैरी हो गए हमार...)

प्रभु मैं आया तेरे द्वार-2
करुणा कर अपना लो स्वामी-2, कर दो भव से पार
हरि मैं आया तेरे द्वार

न बुद्धि, न बल है मुझ में, न पुण्य कर्म कमाया
जीव फंसा विषयों में ऐसा, हीरा जन्म गंवाया
कुछ गुणगान किया न तेरा-2, ओ मेरे दातार
प्रभु मैं आया तेरे द्वार
करुणा कर अपना लो स्वामी-2, कर दो भव से पार
हरि मैं आया तेरे द्वार

झूठे रिश्ते नाते झूठे, जग की झूठी माया
बड़ी देर के बाद समझ में, मुझ को इतना आया
तू ही केवल मीत हमारा-2, सच्चा तारनहार
प्रभु मैं आया तेरे द्वार
करुणा कर अपना लो स्वामी-2, कर दो भव से पार
हरि मैं आया तेरे द्वार

अपने चरणों की भक्ति दे दो, भजन करूं मैं तेरा
सब में देखूं लीला तेरी, छूटे 'मैं' और 'मेरा'
तू ही है इस पार हमारा-2, तू ही है उस पार
प्रभु मैं आया तेरे द्वार
करुणा कर अपना लो स्वामी-2, कर दो भव से पार
हरि मैं आया तेरे द्वार
प्रभु मैं आया तेरे द्वार

✸✸✸

भजन - 6

(राग – संदेशे आते हैं, हमें तड़पाते हैं...)

जय स्वामी जय नारायण, जय स्वामी जय नारायण-2
प्रभु न आते हैं, प्रभु न जाते हैं
गुणातीत पुरुषों से अखंड वो रहते हैं
कि भक्ति करनी है-2, कि मूर्ति पानी है
कि ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म रखना है
} -2

जो भी इस मंदिर में, एक बार आया है
प्रभु की मूर्ति का, अनुभव पायाSS... है
शांति का एहसास और अपनापन पाया है
मिले हो बिछड़ों से, वो आनंद पाया है
सुबह को उठते ही, यही दिल करता है
कि मंदिर जाने का इन्तज़ार रहता है
नशा अनोखा है, संत के दर्शन का
कि निर्गुण मूर्तिSS का
स्मृति यही रख कर, जीवन बिताना है
कि भक्ति करनी है-2, कि मूर्ति पानी SS है
कि ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म रखना है

देह मानव का जो, भाग्य से पाया है
भरतखंड में हमने, जन्म जो पायाSS है
गुणातीत पुरुषों ने, गोद बिठाया है
तरसे जो देवों भी, वो संबंध पाया है

भरोसा रखना है, माया से लड़ना है
गरज खुद रख करके, भजन कर लेना है
कि संत में खोकर के, राजी उसे करना है
सरल बन जाना है
सहन सब करके, फनां हो जाना है
कि भक्ति करनी है-2, कि मूर्ति पानी है
कि ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म रखना है
जय स्वामी जय नारायण, जय स्वामी जय नारायण

संत की बातों को, लेके अब चलना है
मर्जी में मिट कर ही, आत्मीय बनना है
गुणातीत प्रीति में, अब चले जाना है
अपेक्षा न रख कर, दिव्य बन जाना है
मन को ठुकराना है, जाग्रतता रखनी है
पक्ष भक्तों का रख, दिल में बस जाना है
साधुता रखनी है, सेवा कर लेनी है
समता से जीना है
कि सौरभ काका की हमें बन जाना है
कि भक्ति करनी है-2, कि मूर्ति पानी है
कि ब्रह्मरूप होकर, परब्रह्म रखना है...
प्रभु न आते हैं...
जय स्वामी जय नारायण, जय स्वामी जय नारायण -3

भजन-1

(राग–कजरारे–कजरारे...)

गुरु गोविंद दोनों मिले, काकाजी के रूप में।
राहबर हमको दे दिए, गुरुजी के रूप में।।

धिन...धिन...धिन...
फागुन में आप हो प्रगटे, रंग श्रीजी का लगाने-2
योगीजी और काकाजी
योगीजी और काकाजी, के रंग में सब रंग डाले
फागुन में आप हो प्रगटे, रंग श्रीजी का लगाने
योगीजी और काकाजी, के रंग में सब रंग डाले
हो...रंग न उतरे, ये मन से हमारे
रंग न उतरे, ये मन से हमारे
भगवा रे...
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा-2
गुणातीत अस्मिता, है असली रंग जो भगवा
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा

चैतन्य सुहृद् अनिर्देश के तुम, साक्षी दर्शन से ही भेदते हो
मन, बुद्धि का प्रलय करा के तुम, हठ-मान-ईर्ष्या की होली जलाते हो
तप, ध्यान, दान से जो छुटता नहीं, तेरी कृपा मात्र से ही टलता वही ।। - 2
बंधते तुझ में ही, निर्बन्ध वो हो जाए
हो...रंग न उतरे, ये मन से हमारे
रंग न उतरे, ये मन से हमारे
भगवा रे...
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा-2
गुणातीत अस्मिता, है असली रंग जो भगवा
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा

सेवा, स्मृति और सुहृद्भाव ही, गुरुमंत्र हमारे जीवन का बने
प्रत्यक्ष की निष्ठा दृढ़ करके हम, काकाजी के रॉकेट अब बनें
तेरे मुक्तों का रास निहारा करें, तू ही खेल रहा ये स्वीकार करें-2
मिलजुल मुक्तों संग, हम एक मन हो जाएं
हो...रंग न उतरे, ये मन से हमारे

रंग न उतरे, ये मन से हमारे
भगवा रे...
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा-2
गुणातीत अस्मिता, है असली रंग जो भगवा
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा

ओ...भेजा काकाजी ने तुम्हें दिल्ली में
स्वामिश्रीजी बिठाए दिल्ली में
साधु समाज से ताड़देव तलक
तुमने धुनी जमाई दिल्ली में
उत्तर में स्वामिनारायण सत्संग आप लाए हैं
तुम्हारे अपनेपन ने बंजर में भी फूल खिलाए हैं
सुख-दुःख में भक्तों के साथी बने
चेतना की हमारे प्रहरी बने
मक्खी से जीव को, सूर्य बना तुम लोहे को पारस बनाते हो
तप, ध्यान, दान से जो छुटता नहीं, तेरी कृपा मात्र से ही टलता वही-2
हो...रंग न उतरे, ये मन से हमारे
रंग न उतरे, ये मन से हमारे
भगवा रे...
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा
गुणातीत अस्मिता, है असली रंग जो भगवा-2
भगवा रे, भगवा रे, ऐसा रंग दो मेरा मनवा
रंग दो मेरा, रंग दो मेरा, रंग दो मेरा, रंग दो मेरा मनवा
भगवा रे...भगवा रे...ऐसा रंग दो मेरा मनवा

***

भजन - 2

(राग – ये किसके चेहरे का जादू है...)

फैला दो प्रभुता की सौरभ यूं मेरे जीवन में,-2
तेरे दीदार के सिवा आरजू न रहे।
फैला दो प्रभुता...

तू सुख मूर्ति का देकर जन्नत प्रगटा दे,-2
तेरा संबंध ही अक्षरधाम बख़्शिश दे,

अपार महिमा चिंतामणि सम मूर्ति का,
न कोई छोर पा सका, नेति-नेति कहे।
फैला दो प्रभुता...

संबंध आप के साथ ऐसा अब तो हो जाए,-2
कि चेहरे का हमारा नूर ही बदल जाए,
ख़ुदा की नज़रे इनायत की ही तमन्ना हो,
ज़माने भर की दौलतों की जुस्तजू न रहे।
फैला दो प्रभुता...

मूर्ति काकाजी की ये रोम-रोम बसाएSS हैं,-2
जीव को शिव करें शिल्पीSS ऐसे न्यारे हैं
अनंत रूप में अनंत जीवों को भाए,-2
प्रहार करके मूलवृत्ति को तू छुड़वाए,
जब अपनी कसनी में तुम लो, तो हमको देना बल
मायिकभाव न आए, दिव्यता ही बहे।
फैला दो प्रभुता...

साकार ब्रह्म काकाजी ने कृपा से दिए हैं,-2
प्रत्यक्ष धाम, धामी, मुक्त हमने पाए हैं,
गुरुजी रूप में मिले हैं अक्षरपुरुषोत्तम,
न कोई भाव प्रकृति पुरुष तक का रहे।
फैला दो प्रभुता की सौरभ यूं मेरे जीवन में,
तेरे दीदार के सिवा आरजू न रहे।
फैला दो प्रभुता...

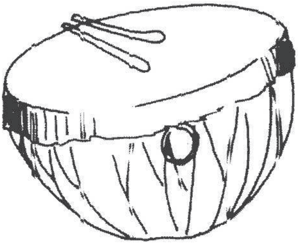

भजन - 1

(राग–ढोल बजने लगा, गाँव सजने लगा...)

ब्रह्म संबंध मिला,
दिव्य कुनबा मिला,
काकाजी का कुंवर आया,
मुक्तों पे जिसने सब कुछ लुटाया...
हो... ब्रह्म संबंध मिला, दिव्य कुनबा मिला,
काकाजी का कुंवर आया,
मुक्तों पे जिसने सब कुछ लुटाया...
प्रागट्य दिन गुरुजी का, उमंग से मनाएं,
दिव्य कुनबे के मिलजुल, आज झूमें, नाचे गाएं,
ओ हो हो, ओ रे ओ हो हो... ओ रे ओ हो...
ओ हो हो, ओ रे ओ हो हो... ओ रे ओ हो...
आ... आ... आ...

जय हो जय हो, जय काकाजी, जय हो जय हो, जय हो काकाजी
जय हो जय हो, जय गुरुजी, जय हो जय हो, जय गुरुजी
आश्रय तेरा सबको निश्चिंत बनाए
मुक्तों में रसबस हो तू आनंद कराए, } -2
रसधन मूर्ति तेरी सबको लुभाए,
जय हो जय हो, जय गुरुजी, जय हो जय हो, जय गुरुजी
गुणातीत-सी काया, देने धाम का सुख आया,
मुक्तों पे जिसने सब कुछ लुटाया...
प्रागट्य दिन गुरुजी का उमंग से मनाएं
दिव्य कुनबे के मिलजुल, आज झूमें नाचें गाएं
ब्रह्म संबंध मिला, दिव्य कुनबा मिला,
काकाजी का कुंवर आया,

ओ हो हो, ओ रे ओ हो हो... ओ रे ओ हो...
ओ हो हो, ओ रे ओ हो हो... ओ रे ओ हो...
आ... आ... आ...

जय हो जय हो, जय काकाजी, जय हो जय हो, जय हो काकाजी
जय हो जय हो, जय गुरुजी, जय हो जय हो, जय गुरुजी

काकाजी तुझमें, तू काकाजी में रमता, } -2
जिसको भाए जैसा वो संबंध करता,
पिता, सखा, भाई कभी बेटा बनता,
जय हो जय हो, जय गुरुजी, जय हो जय हो, जय गुरुजी
मूर्ति को अखंड धारा,
सबका प्राण पुरुष प्यारा,
मुक्तों पे जिसने सब कुछ लुटाया...
प्रागट्य दिन गुरुजी का, उमंग से मनाएं,
दिव्य कुनबे के मिलजुल, आज झूमें, नाचे गाएं,
रे... ब्रह्म संबंध मिला, दिव्य कुनबा मिला,
काकाजी का कुंवर आया,
मुक्तों पे जिसने सब कुछ लुटाया...
प्रागट्य दिन गुरुजी का, उमंग से मनाएं,
दिव्य कुनबे के मिलजुल, आज झूमें, नाचे गाएं...
ब्रह्म संबंध मिला, दिव्य कुनबा मिला,
काकाजी का कुंवर आया...

✷✷✷

भजन - 2

(राग - ये चांद-सा रोशन चेहरा...)

बुशर्ट टेनिस कॉलर की और पैंट भी क्रीम कलर की,
मुस्कान तेजोमय मुख पर, हर अदा में ब्रह्म की मस्ती,
काकाजी का पहला ही दर्शन, चमत्कार जीवन में लाया

हैं परम सूर्य योगीजी, पहचान काका ने कराई,
मैं सूर्य बापा के बल से, काकाजी ने रहस्य बताया;
चिदाकाश का सूर्य जो श्रीजी, संतरूप धरा पर गोचर,
और सूर्य तुम्हारे हृदय में, तीनों को एक बता कर,
छाती पर हाथ फिरा कर,
किया शक्तिपात काका ने, गुरुनिष्ठा से होकर राजी,

निज नूर काका ने बख़्शा, बने गुरुजी नूर-ए-इलाही,
काकाजी का पहला ही दर्शन, चमत्कार जीवन में लाया...।।

श्री अक्षरपुरुषोत्तम का, परिचय दिया दिल्ली में,
काकाजी का अतिशय अनुग्रह, मिले गुरु गोविन्द बख़्शिश में,
मिले गुरु गोविन्द बख़्शिश में,
गुरुजी का संबंध पाया, आई जीवन में खुशहाली,
सोने का सूरज उगा, हर दिन अब तो दीवाली,
धन्यवाद, प्रभु जो तुमने अपना हमें बनाया,

पहले दर्शन में ही तुमने, एहसास हमें ये कराया,
हो जन्मों जन्म का रिश्ता, अपनापन ऐसा पाया,
धन्यवाद, प्रभु जो तुमने अपना हमें बनाया...

काकाजी के अल्प वचन में, विश्वास अटल ज्यों तेरा
है रखी गरज ज्यों तुमने, जैसी आपको भक्तों की महिमा,
जैसी आपको भक्तों की महिमा,
संकल्प अब आप ही करके, मेरा तंत्र भी ऐसा कर दो,
जैसी प्रीति तुम्हें काका से, वैसी मेरे भी दिल में भर दो,
धन्यवाद, प्रभु जो तुमने अपना हमें बनाया,
पहले दर्शन में ही तुमने, एहसास हमें ये कराया,
हो जन्मों जन्म का रिश्ता, अपनापन ऐसा पाया,
धन्यवाद, प्रभु जो तुमने अपना हमें बनाया-4

***

भजन - 3

(राग – रमैया वस्ता वैया...)

बोलो सब मिल के बोलो, बोलो सब दिल से बोलो
बोलो स्वामिनारायण -बोलो स्वामिनारायण... बोलो सब...

ये जो साधु मिले, अति दुर्लभ मिले, जिसके अंतर में ऐसा दृढ़ विश्वास है
जिसके अंतर में ऐसा दृढ़ विश्वास है
उसके लिए, संत के रूप में, प्रगट प्रभु की मूरत सदा पास है
प्रगट प्रभु की मूरत सदा पास है... आ...

इसी को राजी करो, इसी की सेवा करो-बोलो स्वामिनारायण-2
बोलो सब...

देह को छोड़कर, जिन्हें पाना हमें,
प्रगट हैं सामने बात करते हैं वो-2
अपने सामर्थ्य को, छुपा के ऐश्वर्य को,
मानव कक्षा पे क्रियाएं करते हैं वो, -2
आ...
इन्हें पहचान लेना, तत्त्व से जान लेना-बोलो स्वामिनारायण-2
बोलो सब...

लाख साधन से भी, जो प्रभु वश में ना हों,
एक सत्संग से वश में होते हैं वो-2
सच्चे साधु का जो कोई प्रसंग करे,
तो भव सागर से ही पार होते हैं वो
भव सागर से ही पार होते हैं वो...
आ...
अखंड जागृति से, निरंतर सुरुचि से-बोलो स्वामिनारायण-2
बोलो सब...

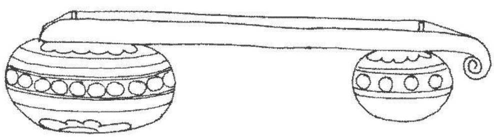

भजन - 1

(राग – गीत गाता चल...)

मन का करें अमन, हम अपने मन का करें अमन
मन का करें अमन, हम अपने मन का करें अमन
गुरुजी हे...
मन पे चले अब केवल आपका शासन
मन का करें अमन, हम अपने मन का करें अमन

पहली नज़र में प्रेम हुआ काकाजी से
परंपरा गुणातीत की, मिली काकाजी से-2
हो... पारदर्शी पुरुष चेतना को देखते
अखंड आप में रह कर प्रभु कार्य करते
ओ... प्रभु हर क्रिया करते
हे गुरुवर हे...
भक्तों की भक्ति कर लें तेरी तरह हम
मन का करें अमन...

परिश्रम हमारे लिए आपने उठाए
साधु बन पाँच बार, धरती पर आए-2
हो.. मोहताज आपको अब और ना बनाएं
जीवन इशारों पर तेरे हम जी पाएं
ओ... इशारों पर हम जी पाएं
हे गुरुवर हे...
आपका आधार केवल आपका ही बल
मन का करें अमन...

साधु, सेवक, बहनें, गृहस्थ पाँच ऐसे हों
काकाजी की रीत से जो, जीवन जीते हों-2
हो... पहचाने अभिप्राय अब हम तेरा
बन जाए यही जीवन सूत्र अब मेरा
हो... जीवन सूत्र अब मेरा
हे गुरुवर हे...

ऐसे भक्तों में लग जाए अपना भी नंबर
मन का करें अमन, हम अपने मन का करें अमन... -3

✷✷✷

भजन - 2

(राग – कब तक चुप बैठे...)

मन-बुद्धि, चित्त को साधु से है जोड़ना
जन्मों की जड़ता के बंधन को तोड़ना
वृत्ति के वेग को साधु ओर है मोड़ना
हाँ मोड़ना -2
मन-बुद्धि...

कई बार किया जो सूचन, वो बात ना हमने मानी
हुँ... हुँ... कई बार किया जो सूचन, वो बात ना हमने मानी
करते आए जन्मों से अब तक अपनी मनमानी
मन की इस भूमिका को अब तो छोड़ना
हाँ छोड़ना -2
मन-बुद्धि...

सेवा, स्मृति और समागम, से जीव है बल को पाए
हुँ... हुँ... सेवा, स्मृति और समागम, से जीव है बल को पाए
भक्तों की भक्ति करके साधु को हम पा जाएं
ब्रह्मानंद में है अब तो हरदम झूलना
हाँ झूलना -2
मन-बुद्धि...

हों स्वभाव कितने जटिल भी, संत कृपा से वो टल जाएं
हुँ... हुँ... हों स्वभाव कितने जटिल भी, संत कृपा से वो टल जाएं
निश्चय दृढ़ 'गर रखें तो, निर्गुण हम सब बन जाएं
साक्षीभाव से जीने की आदत डालना
हाँ डालना -2

मन-बुद्धि, चित्त को साधु से है जोड़ना
जन्मों की जड़ता के बंधन को तोड़ना
वृत्ति के वेग को साधु ओर है मोड़ना
हाँ मोड़ना... } -2

✷✷✷

भजन - 3

(राग – दिल हूं–हूं करे, घबराए...)

मन इत-उत डोले, भरमाए;
वृत्तियों में झूले, दुःख पाए;
एक पल भी जो तुझ में लागे तो, सुख धाम का ये पा जाए...
मन इत-उत-डोले, भरमाऽऽए...।।

एक पग जो भरूं, तेरे कारण, तू दौड़ा चला आए;
प्रेरक तू ही उस पग का, खुश फिर भी बहुत हो जाए।
मन इत-उत-डोले, भरमाऽऽए...।।

जिस मन को छेड़ा तूने, उसे तुझ में लगाऊं;
जिस तन को छुआ तूने, कैसे विषय में पिरोऊं?
ओ... तेरी साधुता, हम जान नहीं पाए।
कर ऐसी करुणा, मन तुझ में ही खो जाए।
मन इत-उत-डोले, भरमाऽऽए...।।

निमित्त सेवा का बनूँ मैं, तूने गरज ग्रहण की;
संबंध प्रभु से हो मेरा, तेरा यत्न बस यही;
फिर भी ये मन, क्यों मान नहीं पाए?
पकड़ न रखे, अनुभव जो तूने करवाए।
मन इत-उत-डोले, भरमाऽऽए...।।

महिमा तेरी मैं जानूं, देना बुद्धियोग ऐसा;
बल से तेरे रख सकूँ, समता जीवन में सदा;
तेरी रुचि के बिना, पत्ता भी नहीं हिल पाए;
कर्ता-हर्ता तू ही, ये ही बात मन में बस जाए।
मन इत-उत-डोले, भरमाऽऽए...।।

***

भजन - 4

(राग – धीरे–धीरे मचल ए दिले बेकरार...)

मन से लेने लड़ाई, हो जाओ तैयार, जीत जाना है...
कर लें गुरु को हम राजी, उन्हीं से ही तो, प्रभु पाना है...
मन से लेने लड़ाई...

पुचकारेंगे कब तक इस मन को ही हम, } -2
साधु के संग रह नहीं पाएगा मन,
संत का हर वचन बने अपना वर्तन, जीत जाएंगे...
मन से लेने लड़ाई, हो जाओ तैयार, जीत जाना है...
मन से लेने लड़ाई...

है मिला कौन हमको ये सोचें हरदम,
प्राप्ति की खुमारी को ना होने दें कम, } -2
अनुभव को पकड़ कर जिएं तो प्रसंग, बीत जाएंगे...
मन से लेने लड़ाई, हो जाओ तैयार, जीत जाना है...
मन से लेने लड़ाई...

साधु प्यार करेगा, लड़ाएगा लाड़,
तोड़ेगा वृत्तियां, पोषेगा ना स्वभाव, } -2
मान निर्दोष उसे, रख अखंड दिव्यभाव, जुड़ जाना है...
मन से लेने लड़ाई, हो जाओ तैयार, जीत जाना है...
कर लें गुरु को हम राजी, उन्हीं से ही तो, प्रभु पाना है...
मन से लेने लड़ाई...

✸✸✸

भजन - 5

(राग– लट्ठे दी चादर उत्ते सलेटी रंग माईयां...)

मानव दा चोला मिलयाए संत दा संग भगतां,
कर ले, कर ले सत्संग कर ले, माया नालो जीत ले जंग भगतां,
मानव दा चोला मिलयाए संत दा संग भगतां,
कर ले, कर ले सत्संग कर ले, माया नालो जीत ले जंग भगतां,

तुवाडा लख लख
तुवाडा लख लख शुकर काकाजी,
तुवाडा लख लख
तुवाडा लख लख शुकर काकाजी } -2
सानु गोद दीत्ती गुरुजी दी,
मानव दा चोला...

जनम भगतां
जनम भगतां विच मैं पांवा-ओए

जनम भगतां विच मैं पावा,
ओनादी सेवा कर रबनुं रिझावां
मानव दा चोला...
हेजी रे...हे...हेजी रे
स्वामिनारायण महामंत्र संत स्मृति साथ भजो रे,
हे...
संत स्वरूपे प्रगट प्रभु मळया, दिव्य सदा साकार रे,
आपणा भाग्य खुल्या रे...
संत स्वरूपे प्रगट प्रभु मळया, दिव्य सदा साकार रे,
आपणा भाग्य खुल्या रे...
हंस वान्गू
हंस वान्गू उमर लंघ जावे,
सुच्चे मोती चुग चुग खावे,
मानव दा चोला...
अक्षरधाम दीयां मौजां ए वंड दे,
अक्षरधाम दीयां
अक्षरधाम दीयां मौजां ए वंड दे,
चौरासी लख जूनिया ए कट दे,
मानव दा चोला मिलयाए संत दा संग भगतां,
कर ले कर ले सत्संग कर ले, माया नालो जीत ले जंग भगतां,
मानव दा चोला मिलयाए संत दा संग भगतां,
कर ले कर ले सत्संग कर ले, माया नालो जीत ले जंग भगतां,
माया नालो जीत ले जंग भगतां -4

***

भजन - 6

(राग – मांगो–मांगो भगतजी आज...)

मांगो-मांगो भगतजी आज-2, जो भी मांगो वो देंगे
करते सेवा बहुत हो आप-2, सो हम राजी तुम पर हैं।

साधु क्या देंगे भला, यूं सोचना मन में नहीं,
श्रीजी हमारा मानेंगे, संशय कोई रखना नहीं।
मिलेगा जग का सुख भंडार-2, ऐसा अभय वचन देंगे।
मांगो-मांगो भगतजी आज...॥

क्षणिक सुख संसार का, वो सुख है किस काम का,
राजी हो गुरुजी आप तो, दो ज्ञान हे गुरु आप का।
मेरा जीव सत्संगी हो जाए-2, प्रभु के समीप रह पाएं।
मांगो-मांगो भगतजी आज...॥

आया शरण गुरु आपकी, मन माना वर दे दो मुझे,
और कोई भी आशा नहीं, एक सुख हो घनश्याम का।
कहां हो बसते गुरुजी आप-2, जहां घर हो आपका वहाँ रहें।
मांगो-मांगो भगतजी आज...॥

इस देह की परवाह न कर, घर बार छोड़ यहाँ रहो,
है निराली प्रसन्नता मेरी, वचन ये चित्त में धरो।
तुम्हारा जीव लगे बलवान-2, ऐसा ना मांगा कभी किसी ने।
मांगो-मांगो भगतजी आज...॥

तप, त्याग और वैराग्य से, निवृत्ति धर्म ग्रहण करो,
इस साधु में जीव जोड़ कर, तन-मन से सेवा करो।
पाएं सिद्धदशा तब आप-2, तुमने जो मांगा वो देंगे।
मांगो-मांगो भगतजी आज...॥

***

भजन - 7

(राग – कर चले हम फिदा जानो तन साथियों...)

मानकर काकाजी का वचन लाड़ले
कर दिया काकाजी को अमर लाड़ले

प्रीति अनुपम तेरी काकाजी के प्रति
पूर्ण निष्ठा सुरुचि से झेला वचन
खुद की चंचल वृत्ति जोड़ी अभिप्राय में
बुद्धि, मन और चित्त दिव्यता में ढला
कैसा, चैतन्यशिल्पी मिला लाड़ले
कर दिया... मानकर...

सौंपा जब एक नया ये बगीचा तुम्हें
तू उन फूलों के जीवन का माली बना
सुहृद्भाव की ज्योति को उज्ज्वल किया

तुमने आँधी तूफां से घबराए बिना
काकाजी का तू अनमोल हीरा लाड़ले
कर दिया... मानकर...

काकाजी ने सर्वदेशी पैग़ाम दिया
आज तूने उसी को अखंडित रखा
हर पल प्रभु के ही बल से तू जीता रहा
हर प्रसंग पर भजन का सहारा लिया
कैसा निर्दोष भुलका है तू लाड़ले
कर दिया... मानकर...

तेरी जादूभरी आंखों का ये कमाल
जो भी आया उसी को ही पावन किया
तू किसी का सखा व किसी का पिता
पथप्रदर्शक तो यूँ तू सभी का बना
कैसे भूलेंगे हम तेरा ऋण लाड़ले
कर दिया... मानकर...

करें याहोम चरणों में खुद को तेरे
एक नज़र से ही समझें इशारा तेरा
हम करें बस वही जो तुम्हें हो पसंद
रहें हर पल प्रभु की स्मृति में सदा
ऐसा निर्दोष हमें भी बना लाड़ले
कर दिया... मानकर...

✸✸✸

भजन - 8

(राग – मधुबन में जो कन्हैया किसी...)

मानव रूप में है सारथी समर्थ मिला,
जिनके दर्शन से खरा अपनापन सहज ही मिला,
साधु अजोड़ मिला, सर्वदेशीय मिला, चैतन्यदर्शी मिला,
गुरुजी रूप मिला, पसंदीदा पात्र मिला;
अड़सठ तीर्थ जिनके चरणों में वो संत मिला,
गुणातीत कुल का वारिस, मूर्तिमान ब्रह्म मिला,

साधु अजोड़ मिला, सर्वदेशीय मिला, चैतन्यदर्शी मिला,
गुरुजी रूप मिला, पसंदीदा पात्र मिला;

ओ... कामिल, काबिल हुन्नर, सब हैं तेरे हाथ,
दुर्लभ जोग जिसका, मिला हमें वो साक्षात्, } -2
ब्रह्म के धारक तुम, ब्रह्म की शक्ति तुम हो,
मन का मनन भी तुम, चित्त का चिंतवन तुम हो,
'मकन्द' योगीजी के हो, 'मुकुन्द' काकाजी के हो,
'मकन्द' योगीजी के हो, 'राजा' काकाजी के तुम हो,
कोटि जन्म की कसर टाले गुरुजी हमरे ब्रह्मविद्या के,
चौदह लोकों के जो स्वामी वही प्रत्यक्ष मिले,
धाम के धामी मिले, अन्तर्यामी मिले,
ताड़देव वासी मिले, गुरुजी रूप मिले, सखास्वरूप मिले।

प्रार्थना करनी है, ये प्रभुवर तुमसे,
स्वरूप आपका हम, पहचाने तत्त्व से,
कलश सुहृद्भाव के, मिल के चढ़ा पाएं,
तेरी भक्ति में अपनी, अस्मिता मिटा पाएं,
तेरे वचन पे जी पाए, सौरभ तेरी बन पाएं,
मन को ठुकरा कर हम, साधुता सच्ची रख पाएं,
वासना मूर्ति की ही हो और नहीं कुछ प्यारा रहे,
शक्ति, वृत्ति, पदार्थ का ना कोई प्रभाव पड़े,
सर्वोपरि जो मिले, मोक्ष के दाता मिले,
जंगम तीर्थ मिले, गुरुजी रूप मिले, प्रत्यक्ष स्वरूप मिले।

मानव रूप में है सारथी समर्थ मिला,
जिनके दर्शन से खरा अपनापन सहज ही मिला,
साधु अजोड़ मिला, सर्वदेशीय मिला, चैतन्यदर्शी मिला,
गुरुजी रूप मिला, पसंदीदा पात्र मिला;
अड़सठ तीर्थ जिनके चरणों में वो संत मिला,
गुणातीत कुल का वारिस, मूर्तिमान ब्रह्म मिला, चैतन्यदर्शी मिला,
गुरुजी रूप मिला, पसंदीदा पात्र मिला।।

***

भजन - 9

(राग – पूर्वा सुहानी आई रे... पूर्वा...)

मिल के खुशियाँ मनाओ-मनाओ
मंगल गीत भी गाओ रे गाओ
चंदन तिलक लगाओ-लगाओ
पुष्प-हार पहनाओ-पहनाओ

विजय दिन मनाएं आज रे, काकाजी का
सर्जन अनोखा देखो रे, काकाजी का
करुं वंदन वारंवार, आओ-आओ प्राणाधार
पसंदीदा पात्र आया रे...काकाजी का।

हो... दिल्ली हुई सुहागिन आपके आने से
ला... ला... ला...
दिल्ली हुई सुहागिन आपके आने से
हुए हम सनाथ आपको पाने से
निमित्त बन के तू, जंगम तीर्थ बना,
कोहिनूर हीरा है तू... काकाजी का।
विजय दिन मनाएं...

कई सत्कर्म करवाने हैं तुमसे
ला... ला... ला...
हो... कई सत्कर्म करवाने हैं तुमसे
मुझको निजी लगाव है तुमसे
स्वतंत्र होकर, कार्य करो अब,
संकल्प साकार किया रे...काकाजी का।
विजय दिन मनाएं...

हे प्रेम करुणा के साक्षात् सागर
ला... ला... ला...
हे प्रेम करुणा के साक्षात् सागर
करें अंतर्दृष्टि हम हर प्रसंग पर
केसरिया हम हो जाएं, तेरी तरह बन पाएं
माला का मनका जैसे तू , काकाजी का।
विजय दिन मनाएं...

✸✸✸

भजन - 10

(राग – कानुडो मांग्यो...)

मूर्ति गुणातीत तेरी हे काकाजी,
चमत्कारी मूर्ति तेरी,
साक्षात् गुणातीत आप काकाजी,
चमत्कारी मूर्ति तेरी...।
योगी का प्यादा, शास्त्रीजी का प्यारा-2
हे... अनिर्देश की... अनिर्देश की विभूति काकाजी,
चमत्कारी मूर्ति तेरी।
मूर्ति गुणातीत तेरी हे काकाजी,
चमत्कारी मूर्ति तेरी,

हे... मूर्तिस्वरूप तुम तो हो काका,
मूर्तिस्वरूप तुम तो हो काका,
हे... हूबहू श्रीजी की... हूबहू छबि श्रीजी की काकाजी
चमत्कारी मूर्ति तेरी...।
मूर्ति गुणातीत तेरी हे काकाजी,
चमत्कारी मूर्ति तेरी।।

हे... संकल्प से तू तो ब्रह्मांड हिलाए,
संकल्प से तू तो ब्रह्मांड हिलाए,
हे... योगी चैतन्यों के... योगी चैतन्यों के प्रहरी काकाजी,
चमत्कारी मूर्ति तेरी,
साक्षात्...
मूर्ति गुणातीत तेरी हे काकाजी,
चमत्कारी मूर्ति तेरी॥

(राग – पेथलपुरमां पावो...)

योगी कृपा से, गोंडल मंदिर में, काकाजी को हुआ, } -2
असली नारायण का साक्षात्कार, हुआ साक्षात्कार
योगी स्वरूप का साक्षात्कार।

योगी परिवार का, सर्जन किया मिल के, काका, पप्पा, बा ने,
ओ हो..., ओहो, ओहो, ओहो...ओ...

योगी परिवार का, सर्जन किया मिल के, काका, पप्पा, बा ने,
योगी संबंध में 'स्व' को मिटा कर योगी के वारिस बने,
योगी स्वरूप की पहचान करा कर, बख़्शिश दे दिया अक्षरधाम,
अक्षरधाम यहीं अक्षरधाम।
योगी कृपा से, गोंडल मंदिर में, काकाजी को हुआ,
असली नारायण का साक्षात्कार, हुआ साक्षात्कार
योगी स्वरूप का साक्षात्कार।-3

(राग – हालाजी तारा...)

हे... निर्दोषबुद्धि के राजा हो तुम, सुहृद् क्षितिज आप
निर्दोषबुद्धि के राजा हो तुम, सुहृद् क्षितिज आप
काकाजी तेरी... काकाजी तेरी
काकाजी तेरी मूर्ति निहारूँ, उसी में लयलीन हो जाऊँ,-2
गुरुजी तेरी मूर्ति निहारूँ, उसी में लयलीन हो जाऊँ।।-2

✸✸✸

भजन - 11

(राग– ढोलीडा ढोल धीमो धीमो वगाड़ना...)

साखी *हे...चंदन का तिलक भाल, नेत्र करुणामय विशाल,*
मूर्ति मनोहर भक्तों को भाए
साधुता बेमिसाल, आत्मीयता मूर्तिमान,
वर्तन काकाजी की छवि प्रगटाए-3

मूर्ति का आनंद अंतर में समाए ना, दिल में समाए ना,
दर्शन गुरुजी का करें, नज़र हटा पाएं ना।
मूर्ति का, हे मूर्ति का, मूर्ति का;
मूर्ति का, मूर्ति का, मूर्ति का, मूर्ति का,
मूर्ति का आनंद अंतर में समाए ना, दिल में समाए ना,
दर्शन गुरुजी का करे नज़र हटा पाए ना...

लुंगी, छोटी बाँह का कुर्ता, शोभे शिर पाघ,
कोमल त्वचा है, तेज से भरा ललाट,
मुख पे छोटे तिल हैं कई-2

नज़र लग जाए ना, कहीं लग जाए ना
दर्शन गुरुजी का करें...

होठों के बीच जीभ, पेन लिए हाथ,
आँखों पर चश्मा और मोड़ कर एक पाँव,
आपके लिखने की अदा-2
हम तो भुला पाएं ना, हम भुला पाएं ना
दर्शन गुरुजी का करें...
नैन मिचमिचाते करके हास्य विनोद,
भक्तों के सरताज, भक्तों में ही ओत-प्रोत,
मूर्ति की नज़ाकत जो,-2
शब्दों में समाए ना, बयाँ कर पाएं ना
दर्शन गुरुजी का करे...

फेरती नित माला लम्बी पतली उंगलियां,
मस्तीभरी चाल, देते नित नई स्मृतियां,
तेरी करीबी में तो, -2
जगत याद आए ना, वो याद आए ना,
दर्शन गुरुजी का करें...

साखी *हे... चंदन का तिलक भाल, नेत्र करुणामय विशाल,*
मूर्ति मनोहर भक्तों को भाए
साधुता बेमिसाल, आत्मीयता मूर्तिमान,
वर्तन काकाजी की छवि प्रगटाए।
कंठी में शोभे रुद्राक्ष, अधरों पर मधुर हास्य-2
दर्शन प्रभु की अनुभूति कराए
गुण के भंडार, महिमा अतिशय अपार,
प्रभुता तेरी अनंत कोई पार ना पाए।
दृष्टि से एक बार, अष्ट आवरण के पार,
चैतन्य को भेद, जीव में तू समाए;
नाचत है भक्त वृंद, दिल में उठे उमंग,
प्राग‌ट्य पर्व गुरुजी का मनाएं -6

✸✸✸

भजन - 12

(राग–जब हम जवाँ होंगे, जाने कहाँ होंगे...)

ओ... ओ...
मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी,–2
पहले ही दर्शन में मुक्तों को खींच लिया है, अपनापन दिया है
मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी,
पहले ही दर्शन में मुक्तों को खींच लिया है, अपनापन दिया है
मूर्ति मोहक तेरी...

काकाजी श्रीजी का स्वरूप हैं ये माना, } -2
तत्त्व से उनका स्वरूप तुमने पहचाना, }
बनकर उनका साधन, तुमने तो जीवन जिया है, उन्हें प्रगट रखा है।
मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी,
पहले ही दर्शन में मुक्तों को खींच लिया है, अपनापन दिया है
मूर्ति मोहक तेरी...

पप्पाजी और स्वामिजी के तुम प्यारे, } -2
अक्षरविहारी और साहेब के सखा न्यारे, }
संबंध सभी स्वरूपों से तुमने अजोड़ किया है, सबको राजी किया है।
मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी,
पहले ही दर्शन में मुक्तों को खींच लिया है, अपनापन दिया है
मूर्ति मोहक तेरी...
आ... आ...

शुद्ध गुणातीत परंपरा न गौण करी, } -2
सभी स्वरूपों की महिमा सबके दिल में भरी, }
बिना भेदभाव सब मुक्तों का स्वीकार किया है, बहुत प्यार दिया है।
मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी,
पहले ही दर्शन में मुक्तों को खींच लिया है, अपनापन दिया है
मूर्ति मोहक तेरी...

कर्ता गुरुवर, शून्य हूँ मैं, तुमसे सीखें, } -2
चुंबकीय सुई बनना तुमसे हम सीखें, }
संबंध दे के तुमने हमें जब मौका दिया है, निहाल किया है।

मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी,
पहले ही दर्शन में मुक्तों को खींच लिया है, अपनापन दिया है
मूर्ति मोहक तेरी, दिलकश अदा तेरी...

***

भजन - 13

मुझे तुमने काका, बहुत कुछ दिया है -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -2
मुझे तुमने काका बहुत कुछ दिया है -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -2

न मिलती अगर दी हुई दाद तेरी, तो क्या थी ज़माने में औकात मेरी। -2
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -2

मुझे है सहारा, तेरी बंदगी का, है जिसमें गुज़ारा मेरी ज़िंदगी का। -2
मिला वो मुझे जो, तुम्हीं ने दिया है -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -2

मुझे तो मिली है, वो दौलत तुम्हारी, मेरा कुछ नहीं है, ये रहमत तुम्हारी। -2
उसे क्या कमी जो, तेरा हो गया है, -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -2

किया कुछ न मैंने, शरमसार हूँ मैं, तेरी रहमतों का तलबदार हूँ मैं। -2
दिया कुछ नहीं बस, लिया ही लिया है -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -2

मेरा ही नहीं तू, सभी का है काका, तू ही तो है सबको देता दिलासा। -2
तू ही तो है साथी, तू ही तो पिया है -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -2

मुझे तुमने काका बहुत कुछ दिया है -2
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है... -4

***

भजन - 14

(राग – रामजी की सेना चली...)

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय-4
जय जय परब्रह्म, जय जय अक्षरब्रह्म!
जय जय सहजानंद, जय जय गुणातीत!
जय शास्त्रीजी, जय योगीजी, जय काकाजी, जय पप्पाजी!
जय जय स्वामी हरि, जय अक्षरविहारीजी!
जय जय सोनाबा, जय जय दिव्य बेन!

माहात्म्य सम्राट हो, हृदय अखंड योगी धरे -2
ठहरावरहित गुरुमुखी, साहेब की हसीन छवि -2
जय जय परब्रह्म, जय जय अक्षरब्रह्म।
जय जय सहजानंद, जय जय गुणातीत।।
कहा साझेदार योगी ने, योगी स्वरूप हो गए -2
अनूठा हास्य बिखेरती, साहेब की हसीन छवि।
जय जय परब्रह्म, जय जय अक्षरब्रह्म
जय जय सहजानंद, जय जय गुणातीत।।

माया से खुली जंग खेलने, **साथी आठ संग लिए -2**
आज नारायणी सेना के हो, **आप सेनापति बने -2**
सबसे पहले काकाजी ने, **महिमा आपकी समझाई -2**
विदेश भी संग ले जाकर के, **पहचान आपकी करवाई -2**
सबके प्राणाधार हो, ब्रह्मज्योति की शान हो -2
ठहरावरहित गुरुमुखी, साहेब की हसीन छवि -2
जय... ... ... जय जय गुणातीत।।

योगी वचन से विद्यानगर में, **छात्रालय था बनवाया -2**
आशीर्वाद योगी बापा से, **'अक्षरदेरी' में पाया -2**
गुणातीत ज्ञान का परचम, **देश विदेश में फहराया -2**
क्रांतिकारी कर्मयोगी साधु समाज तूने खड़ा किया, समाज नया खड़ा किया
रह के मग्न मूर्ति में, मूर्ति ही लुटा रहे -2
ठहरावरहित गुरुमुखी, साहेब की हसीन छवि -2
जय... ... ... जय जय गुणातीत।।

आपके योग में जो भी आया, **उसको प्रभु से जोड़ दिया -2**
युवकों के शिल्पी अनूठे, **संबंध से उन्हें ब्रह्मरूप किया - 2**
मूर्तिमान स्वरूप पक्ष का, **सदा पक्ष भक्तों का लिया -2**

वारिसदार गुणातीत पीढ़ी के, **सबको गुणातीत ज्ञान दिया -2**
नेता युवानों के हो, निरपेक्ष प्रेम बहा रहे -2
अनूठा हास्य बिखेरती, साहेब की हसीन छवि
ठहरावरहित गुरुमुखी, साहेब की हसीन छवि -2
जय... ... ... जय जय गुणातीत।।

अस्सी ब्रह्मविद्या पढ़े हुए, **राहबर के महारथी हो आप-2**
संकल्प से ही निर्गुण कर दो, **ऐसे गुणातीत साधु आप-2**
मिटाने मन की होली को, **धुलेन्डी पर प्रगटे आप -2**
रसबस होकर मुक्तों को, **प्रभु के रंग से भर देते आप -2**
प्रभु का रंग भर देते आप
गुरुभक्ति हम अदा करें, 'स्व' का समर्पण करें -2
वो ही करें जो तेरी प्रेरणा, साहेब को हमरी दक्षिणा

जय जय परब्रह्म, जय जय अक्षरब्रह्म
जय जय सहजानंद, जय जय गुणातीत
जय जय शास्त्रीजी, जय जय योगीजी
जय जय काकाजी, जय जय पप्पाजी
जय जय स्वामी हरि, जय अक्षरविहारीजी
जय जय सोनाबा, जय जय दिव्य बेन
जय जय जसभाई साहेSS...ब।

✹✹✹

भजन - 15

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है
करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...
मेरा आपकी कृपा से...

पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है,
हैरान है ज़माना, मंजिल भी मिल रही है,
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है, -2
करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...
मेरा आपकी कृपा से...

तू जो है साथ मेरे, किस चीज की कमी है,
किसी और चीज की अब, दरकार ही नहीं है,

तेरे साथ से गुलाम अब, गुलफाम हो रहा है, -2
करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...
मेरा आपकी कृपा से...

मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरा पार कैसे पाऊँ,
टूटी हुई वाणी से, गुणगान कैसे गाऊँ,
तेरी प्रेरणा से ही सब, ये कमाल हो रहा है,-2
करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...
मेरा आपकी कृपा से...

मुझे हर कदम डगर पर, तूने दिया सहारा,
मेरी जिंदगी बदल दी, तूने करके एक इशारा,
एहसान ये तेरा अब, एहसास हो रहा है,-2
करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...
मेरा आपकी कृपा से...

तूफान आँधियों में, तूने ही मुझ को थामा,
तुम कृष्ण बन के आए, जब मैं बना सुदामा
तेरा ये कर्म मुझ पर, सरे आम हो रहा है,-2
करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...
मेरा आपकी कृपा से...

***

भजन - 16

(राग – मेरे महबूब शायद आज कुछ नाराज...)

मेरे गुरुदेव अपने दास पर, इतना करम कर दो-2
हटा कर पाप-कर्मों से-2 मेरा मन भक्ति से भर दो
मेरे गुरुदेव...

जानें कब से जनम ले ले के मरता, आ रहा हूँ मैं-2
पिलाकर ज्ञान का अमृत गुरुजी, मुझको अमर कर दो
मेरे गुरुदेव...

तुम्हें देखूँ, तुम्हें चाहूं, तुम्हें पूजूं, तुम्हें पाऊं-2
तुम्हीं में लीन हो जाऊं गुरुजी, ऐसा मुझे वर दो
मेरे गुरुदेव...

न जानूं ज्ञान की बातें, न तप न ध्यान की बातें-2
पड़ा हूँ द्वार पर तेरे, हाथ मेरे शीश पर धर दो
मेरे गुरुदेव...

ईर्ष्या-द्वेष, हठ-अभिमान में लिपटा हुआ हूँ मैं-2
मुझे सद्मार्ग दिखला कर गुरुजी, इनसे अलग कर दो
मेरे गुरुदेव अपने दास पर, इतना करम कर दो-2
हटा कर पाप-कर्मों से-2 मेरा मन भक्ति से भर दो
मेरे गुरुदेव...

✷✷✷

भजन - 17

(राग – बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम...)

मेरे मन को मंदिर बना दो गुरु-2
प्रभुमय ये जीवन-2, बना दो गुरु। मेरे मन...

प्रभु की ही मूर्ति, है प्राण तुम्हारा,-2
ब्रह्मनियंत्रित, है पल-पल तुम्हारा,
मेरा तंत्र ऐसा ही-2, बना दो गुरु। मेरे मन...

चिदाकाश जैसा, हृदय है तुम्हारा-2
है सौभाग्य हमको, जो तुमने स्वीकारा,
रागों से प्रीति-2, हटा दो गुरु। मेरे मन...

दिव्य लगें सब, क्रियाएं तुम्हारी,-2
ऐसी रहे काका, दृष्टि हमारी,
निर्दोष 'भुलका'-2, बना दो गुरु। मेरे मन...

प्रभु का ही दर्शन, सभी में निहारें,-2
तेरे हर वचन को, सहर्ष स्वीकारें,
समता ही जीवन में-2, रहे बस गुरु। मेरे मन...

मन-बुद्धि-चित्त और, अहम् का प्रलय हो,-2
मैत्री व प्रीति से, दिव्य मिलन हो,
मंजिल हो जीवन की-2, यही बस गुरु। मेरे मन...

हर एक प्रसंग पर, भजन का ही बल हो,-2
मन बुद्धि पर का, भरोसा अटल हो,
भजन की ही लगनी-2, लगा दो गुरु। मेरे मन...

✸✸✸

भजन - 18

(राग – हवा में उड़ता जाए, मेरा लाल दुपट्टा...)

मौज में मूर्ति लुटाए, संबंध देते हैं श्रीजी का,
परिचय देते काकाजी का, गुरुजी-गुरुजी
कुटुंबभाव प्रगटाए अपनापन देकर के सबको,
अपनापन देकर के सबको, गुरुजी-गुरुजी।
मौज में मूर्ति लुटाए, संबंध देते हैं श्रीजी का,
परिचय देते काकाजी का, गुरुजी-गुरुजी

ओ... पल-पल रक्षा चैतन्यों की माँ की भाँति करते,
रक्षक बन कर करते, -2
चैतन्यशुद्धि करके जीव को प्रभु सन्मुख हैं करते - 2
हो...प्रभु सन्मुख हैं करते
मौज में मूर्ति लुटाए, संबंध देते हैं श्रीजी का,
परिचय देते काकाजी का, गुरुजी-गुरुजी
कुटुंबभाव प्रगटाए अपनापन देकर के सबको,
अपनापन देकर के सबको, गुरुजी-गुरुजी।

ओ... मुक्त स्वभाव ग्रहण करते हैं दिव्य यंत्र हैं तुम्हारे,
दिव्य यंत्र हैं तुम्हारे, -2
कुटुंबी आपका मानें उनको, लगे सभी हमें प्यारे -2
हो... लगे सभी हमें प्यारे
मौज में मूर्ति लुटाए, संबंध देते हैं श्रीजी का,
परिचय देते काकाजी का, गुरुजी-गुरुजी
कुटुंबभाव प्रगटाए अपनापन देकर के सबको,
अपनापन देकर के सबको, गुरुजी-गुरुजी।
मौज में मूर्ति लुटाए, संबंध देते हैं श्रीजी का,
परिचय देते काकाजी का, गुरुजी-गुरुजी...

✸✸✸

भजन - 19

(राग– आयो जी पधारो हे कृष्ण कन्हाई..)

मन बिछाए राह में, खोल हृदय के द्वार
करते हैं हम आपका स्वागत बारंबार, स्वागत बारंबार
दर्शन से बसो नैनों में, भेद के अंतर द्वार,
हमारे हृदयाकाश में, बिराजो प्राणाधार, बिराजो प्राणाधार

आओ जी पधारो हे प्रत्यक्ष स्वरूपों -2
कहे मनभरी राह, प्रारंभ से पूर्णाहुति,
तोरे स्वागत में आज पलकें बिछाई हो,
लाखों बधाई हों-2
अक्षरधाम से अवनी पधारे हो -2
देके निरपेक्ष प्यार, तेरे संबंध का आधार,
हमरे जीवन में आप सुख-शांति लाए हो,
वारी वारी जाएँ, तो पे वारी वारी जाएँ हो...

दिव्य दर्शन मिले हैं आज, मिला सुख नैनन को,
आज सारा गुणातीत समाज निहारे स्वरूपों को,
सुध बिसरा के हर कोई आज -2
सुध बिसरा के मुक्त समाज तके सब स्वरुपों को,
हुआ जीवन धन्य है आज, मिला ये संबंध हमको।

संतरूप मिले प्रगट प्रभु, संबंध दृढ़ कर लें हम,
लाए साथ हैं मुक्त समाज, समझ लें महिमा हम,
उगा सोने का सूरज आज -2
उगा सोने का सूरज आज, ना मौका खोएँ हम
ढले काकाजी मुक्तों पे आज, राजी उन्हें कर लें हम,
ढले पप्पाजी मुक्तों पे आज, राजी उन्हें कर लें हम।

हो... देखो सृष्टि मगनभर आज, मगन हो नाचे रे,
यहाँ सबके हृदय में आज मैत्री धुन बाजे रे,
दिव्य दर्शन मिले हैं आज, मिला सुख नैनन को,
हुआ जीवन धन्य है आज, मिला ये संबंध हमको।

✸✸✸

भजन - 1

(राग – दिल तो पागल है...)

ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है - 2
वृत्ति और स्वभाव छुड़ाता है यही, मन-बुद्धि से पार ले जाता है
जीव को ब्रह्मरूप बनाता है यही, प्रभु से संबंध यही कराता है
ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है- 2
मुक्तों द्वारा रास कराता है यही, राह भक्तों को दिखाता है
भवसागर से पार लगाता है यही, प्रभु से संबंध यही कराता है
ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है - 2
ला... ला... ला ला ला ला...

इनको नया ना ही पुराना है, अपने सभी हैं ना बेगाना है
सत्संग नित नया करता है जो, अखंड आनंद उसी ने पाया है
ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है - 2

मन की बातों में जो भी आता है, साधु से दूर हो जाता है
तोड़े जो मन के बंधन सारे, साधु के दिल में बस जाता है
ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है - 2

हुं आ, आ, आ, हुं आ, आ, आ... हुं-हुं...
इनके दर्शन मात्र से ही पुण्य उदय हो जाएं
सान्निध्य में इनके आ करके, मन की गति थम जाए
ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है - 2

लीला जो इनकी दिव्य मानेगा, दिव्य वही बन जाएगा
मर्जी में इनकी वर्तेगा जो, मूर्ति वही ले जाएगा
ये जो साधु है, प्रत्यक्ष प्रभु है...
मुक्तों द्वारा रास कराता है यही...
भवसागर से पार लगाता है यही...
ये जो मूर्ति है, ये हितकारी है
कल्याणकारी है, बहुत सोणी है - 3

✹✹✹

भजन - 2

(राग – मेंहदी लगा के रखना...)

ये मूर्ति... निराली मूर्ति... ॥
ये दर्शन... प्रभु का दर्शन... ॥
ये मूर्ति निराली मूर्ति
ये दर्शन प्रभु का दर्शन
निराली मूर्ति, प्रभु का दर्शन
हो... हो...हो...SSS...

प्रभु के ही हो के रहना, प्रभु के ही बल से चलना - 2
प्रभु में ही डूबे रह कर, प्रभु के लिए ही जीनाSS ॥
प्रभु के ही, हो के रहना, प्रभु के ही बल से चलना
ओहो... ओ... ओ... आ... आ...

मन का कभी ना गिनना, साधु को आगे रखना - 2
प्रीति इन्हीं से रख कर, संबंध दृढ़ करनाSS ॥
मन का कभी ना गिनना, साधु को आगे रखना
प्रभु के ही हो के रहना, प्रभु के ही बल से चलना ॥
होए... हो...

मंदिर बने हो जंगम, श्रीजी को तुम हो धारे,
पसंद योगीजी की, स्वरूपों के हो प्यारे
लयलीन काकाजी में, भक्तों के तुम सहारे
काका को आगे रख कर, करते हो कार्य सारे ॥
काकाजी को हमेशा, हाज़राहजूर माना,- 2
सर्वोपरि समझ कर, आज्ञा को मूर्ति मानाSS ॥
प्रभु के ही हो के रहना, प्रभु के ही बल से चलना ॥
मन का कभी ना गिनना, साधु को आगे रखना ॥

प्राप्ति की ही हो मस्ती, चिन्ता में अब क्यों रहना,
हर पल बने सनातन, अब ऐसा ही है जीना;
अपने स्वभावों को है, मुक्तों में लीन करना,
सर्वस्व भी लुटा के, मूर्ति है सिद्ध करना ॥
गरजू हमें है बनना, भजन तीव्र करना, - 2
सुहृद् सभी का बन के, राजी तुम्हें है करनाSS ॥
प्रभु के ही हो के रहना, प्रभु के ही बल से चलना ॥
मन का कभी ना गिनना, साधु को आगे रखना ॥

संबंध से ही केवल, मुक्तों की महिमा जानें,
अवगुण न इनके देखें, तेरा स्वरूप मानें;
व्यापक में आप ही हो, प्रेरक-नियंता जानें,
साक्षी हृदय में बैठे, साकार दिव्य मानें ॥
मर्जी में तेरी मिटना, साधन तेरा है बनना - 2
कर्ता तुम्हें ही मानें, पूजन यूँ ही है करनाSS ॥
मन का कभी ना गिनना, साधु को आगे रखना, - 2
प्रीति इन्हीं से रख कर, संबंध दृढ़ करना
प्रभु के ही हो के रहना, प्रभु के ही बल से चलना,
मन का कभी ना गिनना, साधु को आगे रखना...

***

भजन - 3

(राग – सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है...)

ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की महाकल्याणकारी है
ये अनुपम भेंट काका की सदा सब की हितकारी है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की...

ये अक्षरधाम से आई लिए संदेश करुणा का
ये साधुता ये दिव्यता, ये साधुता ये दिव्यता
बड़ी अद्भुत निराली है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की महाकल्याणकारी है
ये अनुपम भेंट काका की सदा सब की हितकारी है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की...

ये गोदी माँ की ममतामयी लड़ाती लाड़ है सब को
ये मुक्ति के पथ पे ले जाती, ये मोक्ष के पथ पे ले जाती
बहुत आनंद कराती है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की महाकल्याणकारी है
ये अनुपम भेंट काका की सदा सब की हितकारी है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की...

गुणातीत ज्ञान की गंगा-गुरुभक्ति का ये सागर
हमारे जीव को हर पल, हमारे जीव को हर पल
स्वरूप निष्ठा कराती है

ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की महाकल्याणकारी है
ये अनुपम भेंट काका की सदा सब की हितकारी है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की...

चुका पायेंगे कैसे हम हे काका आपके ये ऋण
किए उपकार जो हम पर, किए उपकार जो हम पर
जुबां गिन गिन के हारी है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की महाकल्याणकारी है
ये अनुपम भेंट काका की सदा सब की हितकारी है
ये मूर्ति प्यारे गुरुजी की...

✸✸✸

भजन - 4

(राग – तेरी माया का ना पाया...)

योगी बापा को करोड़ों धन्यवाद, काकाजी हमें भेंट मिले-2
जिसने धरती पे उतारा अक्षरधाम, काकाजी हमें भेंट मिले
योगी बापा को करोड़ों...

3 फरवरी 1952, **विजयदिन कहलाया-2**
हो... योगीजी ने काकाजी को, **साक्षात्कार कराया-2**
घड़ी बनी रे मंगल, आज उसका ही है फल-2
हम सब हो गए हैं रे निहाल, काकाजी हमें भेंट मिले...

ज्ञानसमाधि में काका को, **दर्शन दिव्य कराया-2**
स्वामी सहजानंद और, **योगीराज को एक ही पाया-2**
लिया बापा को पहचान, साधुवेश मिले भगवान
डंका सर्वोपरिता का बजाया, काकाजी हमें भेंट मिले...

पात्र-कुपात्र ना देखा तुमने, **जात-कुजात ना मानी -2**
प्रेम की अमृत वर्षा कर दी, **संबंध की ही महिमा जानी -2**
मान-अपमान में था समभाव, बनाने योगी का समाज
हो गए उसके लिए ही कुर्बान, काकाजी हमें भेंट मिले...

गुणातीत समाज के सृष्टा, **नींव में आप समाए-2**
काका तेरे स्वरूप को हम, **अब तो पहचान पाएं-2**
सारा गुणातीत समाज, चले एक होकर आज
तेरे संकल्प में बने भागीदार, काकाजी हमें भेंट मिले...

सुहृद्भाव के राजा हो तुम, **निर्दोषबुद्धि के दाता-2**
भावात्मक एकता बढ़ाएं, **तुमको जो है भाता-2**
अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, संत के रूप में प्रगट आज
उनके स्वरूप का हो साक्षात्कार, गुरुजी जो हैं भेंट दिए
काकाजी को करोड़ों धन्यवाद, गुरुजी जो हैं भेंट दिए ...-3

***

भजन - 5

योगीजी की आस गुरुजी, काकाजी के ख़्वाब हो
चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात हो
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम...
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें सलाम

श्रीजी के अनमोल संबंध को योगीजी ने जान लिया
भीतर छिपी जो लगन थी, भीतर ही पहचान लिया
साधु की तब दीक्षा दी, अब साधुता की शान हो
चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात हो
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें सलाम...

सोनाबा से प्यार पाया, काका की क्या बात कहें
पप्पाजी की हाश पाई, स्वामिजी भी ख़ुश रहें
ऐसी किस्मत ऐसी प्राप्ति, ऐसी भक्ति जिसकी हो
चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात हो
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें सलाम...

योगीजी का संकल्प काकाजी ने कैसा लो झेला
स्थावर मंदिर के ही साथ एक जंगम तीरथ भी खिला
इस भूमि की आन तुम्हीं हो, भक्तों के तुम प्राण हो
चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात हो
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें सलाम...

काकाजी के तुम जिगर हो, उनकी तुम धड़कन भी हो
साधुता ही हो निशान, ऐसी अगन-तड़पन भी हो

ओ प्यारे दिलदार गुरुजी, दिल में ऐसा स्थान दो
काकाजी जिसमें बसे उस दिल की एक पहचान हो
ओ प्यारे दिलदार गुरुजी, दिल में ऐसा स्थान दो
चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात हो
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें सलाम...

योगीजी की आस गुरुजी काकाजी के ख़्वाब हो
चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात हो
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें सलाम...

Happy Birthday to you, Happy Birthday to you.
Happy Birthday to Guruji, Happy Birthday to you
Happy Birthday to you, Happy Birthday to you
Happy Birthday to Guruji, Happy Birthday to you
Happy Birthday to Guruji, Happy Birthday to you

जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें सलाम...
जुग जुग जिओ गुरुजी प्यारे, तुम को करें प्रणाम
तुमको करें प्रणाम, तुमको करें सलाम
तुमको करें प्रणाम, तुमको करें सलाम
तुमको करें प्रणाम, तुमको करें सलाम ॥

***

भजन - 6

योगीजी की जान के मर्जी, आपने कदम उठाया,
भगवा ले वीरांगनाओं ने डंका भारी बजाया,
बहनें भी भगवान भजें वो मौका तुमने दिलाया,
भोर भई उजियारा छाया, सत्पुरुष का संग जो पाया।
प्रभु के नाम की चुनरी ओढ़ी, नया सवेरा आया।
नया सवेरा आया, हाँ नया सवेरा आया।

बहनों के सत्संग हेतु एक पवित्र स्थान रचाना है,
विद्यानगर की भूमि पर तुम्हें एक संस्थान बनाना है।

बनी 'गुणातीत ज्योत' बहनों के, जीवन में सत्संग छाया,
संदेशा गुणातीत ज्ञान का चहुँ ओर फैलाया।
भोर भई उजियारा छाया, सत्पुरुष का संग जो पाया।
प्रभु के नाम की चुनरी ओढ़ी, नया सवेरा आया।
नया सवेरा आया, हाँ नया सवेरा आया।

सत्पुरुष की मर्जी में ही जो कोई भी रहता है
विमुख भले कोई घोषित कर दे, विमुख नहीं वो होता है।
काका, पप्पा ने दिव्य रास में जोर से डंडा लगाया,
'विमुख नारायण की जय' कह कर दिव्यभाव प्रगटाया।
भोर भई उजियारा छाया, सत्पुरुष का संग जो पाया।
दिव्य ज्ञान की डगर पे चल कर, नया सवेरा आया।
नया सवेरा आया, हाँ नया सवेरा आया।
सा रे सा, रे सा... ग रे, ग रे... सा रे सा रे सा नी...
सा रे सा, रे सा... ग रे, ग रे... सा रे सा रे ग म प...

स्वामिनारायण संदेशा फैलाने दिल्ली जाओगे,
प्रगट गुणातीत ज्ञान का दर्शन तुम ही सबको कराओगे।
साधुता प्रगटेगी इससे, काका ने समझाया,
बापा ने सत्संग सहज ही आस-पास है बढ़ाया।
भोर भई उजियारा छाया, सत्पुरुष का संग जो पाया।
दिव्य ज्ञान की डगर पे चल कर, नया सवेरा आया।
नया सवेरा आया, हाँ नया सवेरा आया।

भारत साधु समाज में गुरुजी आ करके ठहरते,
धुन स्वामिनारायण की वो रात-रात भर करते।
अपने वर्तन से परिचय, जिसने गुरु का कराया,
हर प्रसंग पर धुन-भजन को ही आधार बनाया।
भोर भई उजियारा छाया, सत्पुरुष का संग जो पाया।
दिव्य ज्ञान की डगर पे चल कर, नया सवेरा आया।
नया सवेरा आया, नया सवेरा आया।

***

भजन - 1

(राग – प्यार किया तो डरना क्या...)

रंगीली छबि का कहना क्या, निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
पारसमणि गुरुजी रूप मिली, पारसमणि
पारसमणि गुरुजी रूप मिली, भूलें उन्हें तो जिया क्या!
रंगीली छबि का कहना क्या, निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या...

काकाजी के ही अनुग्रह से, साधु मिले हैं लूटने जैसे -2
चैतन्यों के शिल्पी मिले हैं,
चैतन्यों के शिल्पी मिले फिर लौकिक-अलौकिक मांगें क्या!
रंगीली छबि का कहना क्या, निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या...

कम्पयूटर से पेन ड्राईव जैसे, जुड़ जाएं हम आप से ऐसे -2
अन्तर्यामी और सर्वज्ञ मानें,...
अन्तर्यामी और सर्वज्ञ मानें, मन की चोरी छिपाना क्या!
रंगीली छबि का कहना क्या, निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या...

मूर्ति अनेकों आपने दी हैं, आनंद कराया, स्मृतियाँ दी हैं,
आ... आ... आ... आ...

मूर्ति अनेकों आपने दी है, आनंद कराया, स्मृतियाँ दी हैं,
मनन उनका निरंतर करें हम,
मनन उनका निरंतर करें हम, साधन और है करना क्या!
रंगीली छबि का कहना क्या, निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या...

पारसमणि गुरुजी रूप मिली, भूलें उन्हें तो जिया क्या!
रंगीली छबि का कहना क्या, निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या...

✸✸✸

भजन - 1

(राग – ले के पहला पहला प्यार...)

ले के निर्दोष-निर्व्याज प्यार, भर के आँखों में ब्रह्मभाव, } -3
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादुगर!
ले के निर्दोष-निर्व्याज प्यार...।।

एक बार मिला जो तुमको, भूला नहीं पाया, } -2
मैत्री कर तुमने उसको अपना बनाया,
चैतन्यों के शिल्पकार, खुल्ला कर दिया मोक्षद्वार,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादुगर!

मस्ती अलौकिक तेरी, शूरवीरता भरी, } -2
कुटुंबभाव प्रगटा कर के, तुमने क्रांति करी,
निर्दोषबुद्धि-सुहृद्भाव, धुन करने का अतिशय चाव,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादुगर!

संबंध देकर अपना, ब्रह्मरूप बनाया, } -2
प्रेम में डूबो कर हमें, भव भव से तारा,
माफ करते रहे हर बार, टाले दोष हमारे अपार,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादुगर!

मूर्ति सिद्ध कर लें पहले, सभी बातें छोड़ कर, } -2
दास के भी दास बनें, तेरा संबंध देख कर,
टालो ज्ञान अहम् अंधकार, कर दो माया से हमें पार,
अक्षरधाम से आया, ये कैसा जादुगर! -2

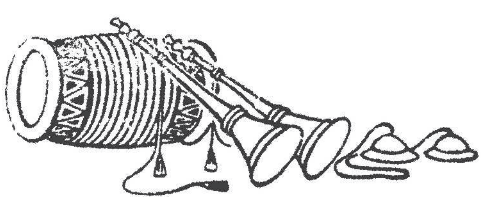

भजन - 1

(राग – प्रभुजी तुम ही नाथ हमारे...)

विनती सुन लो काका हमारे - 2
विनती, विनती
विनती सुन लो काका हमारे।

दास बनाना, साधु बनाना
दास बनाना
दास बनाना, साधु बनाना
प्रभुधारक बन पाएं - 2
विनती सुन लो काका हमारे।
विनती, विनती
विनती सुन लो काका हमारे।
हे सुहृद् सम्राट, सदा दिव्य साकार, सुन लो प्रभु पुकार - 2

अंतर्दृष्टि हर पल करें हम
अंतर्दृष्टि
अंतर्दृष्टि हर पल करें हम
क्या करने यहां आये हैं हम?
जाग्रत हम रह पाएं - 2
विनती सुन लो काका हमारे।
विनती, विनती
विनती सुन लो काका हमारे।
हे सुहृद् सम्राट, सदा दिव्य साकार, सुन लो प्रभु पुकार - 2

सर्वज्ञ मानें, निर्दोष मानें
सर्वज्ञ मानें
सर्वज्ञ मानें, निर्दोष मानें
कर्ता हर्ता प्रेरक मानें
भुल्के हम बन पाएं - 2
विनती सुन लो काका हमारे।
विनती, विनती
विनती सुन लो काका हमारे।
हे सुहृद् सम्राट, सदा दिव्य साकार, सुन लो प्रभु पुकार - 2

मूर्ति बस हो प्राण हमारा
मूर्ति बस हो
मूर्ति बस हो प्राण हमारा
और रहे ना कुछ भी प्यारा
तुझ में ही खो जाएं - 2
विनती सुन लो काका हमारे।
विनती, विनती
विनती सुन लो काका हमारे।
हे सुहृद् सम्राट, सदा दिव्य साकार, सुन लो प्रभु पुकार - 4

✸✸✸

भजन - 2

(राग – वो मेरी नींद, मेरा चैन मुझे लौटा दो...)

वो पहली बार का आनंद, मुझे लौटा दो - 2
दिव्यता - दिव्यता दिखी जो मुझे
अनुभव प्रभु का जो हुआ था मुझे
उसी का कैफ़ वही मस्ती, मुझे लौटा दो
वो पहली बार का आनंद...

साधक–
ये कृपा आपकी जो मुझको है स्वीकार किया - 2
न गिने दोष-गुण तूने तो सिर्फ प्यार दिया - 2
हुआ धन्य मैं, सोचता ये रहूँ,
हुआ क्या मुझे, क्या किसी से कहूँ?
आप के ही रूप में प्रभु हैं मिले,
हृदय में रहते हैं अखंड मेरे;
कभी न भूलूँ मैं ये सत्य ऐसा करवा दो
वो पहली बार...

सद्गुरु–
सुरुचि वो पहले दिन-सी क्यों नहीं रखी तूने?-2
गरज जो ज्ञान की थी अब क्यों न रखी तूने?-2
ये सही, ये गलत सोचने क्यों लगा?
वचन साधु का मापने क्यों लगा?

मन और बुद्धि के ये तर्क तेरे,
सुख में भी दुःख को ढूंढ लेते हैं,
कहे खोकर मुझे आनंद मेरा लौटा दो - 2

प्रीति और आत्मबुद्धि सत्संग में रखना तू - 2
संत के वचन से प्रवृत्ति, निवृत्ति करना तू - 2
छोटा सबसे मैं मानना ये सदा
प्रभु हैं तेरे, याद रखना सदा
आज ही तो सत्संग में आया हूँ,
मानकर ये ही 'गर जिएगा तू
मिलेगा तुझको वो आनंद फिर न छूटे जो - 3

साधक–
आज तक जैसे जिया हूँ भुला के मानूँ मैं - 2
संबंध से तेरे सबको ब्रह्म की मूर्ति मानूँ मैं - 2
रखूँ मैं नज़र अब निशान पर सदा
तेरी मूर्ति का करके चिंतन सदा
मन से लड़ाई अब तो ले लूं मैं;
तेरा बल ले के चल पड़ूं अब मैं,
तेरे अभिप्राय में जुड़ जाऊँ ऐसा करवा दो - 3

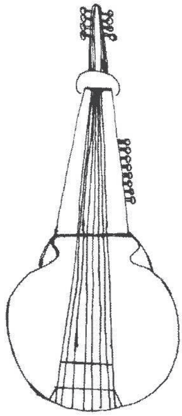

भजन - 1

(राग–जिंद माई...)

शताब्दी आई है, ओहो, शताब्दी आई है काका दी,
शास्त्रीजी-योगीजी, आहा, शास्त्री और योगी दे, वारिस दी,
गुणातीत कुनबे दे, ओहो, गुणातीत कुनबे दे मुखिया दी,
मस्ती सहजानंदी, आहा, मस्ती सहजानंदी जो बाँटे,
मौज में धाम दा सुख, ओहो, मौज में धाम दा सुख जो लुटाते,
मुक्तों दे मतवाले, आहा, मुक्तों दे मतवाले महायोगी,
मैत्री दा मूर्त स्वरूप, ओहो, मैत्री दा मूर्त स्वरूप हो तुम...।।

(राग–पंजाबियाँ दी बल्ले बल्ले बल्ले...)

साड़े सारियाँ ते है **रहमत उन्हाँ दी -3**
खून पसीना **मेहनत उन्हाँ दी-3**
अज उन्हाँ करके साडी है बल्ले ओ बल्ले ओ बल्ले!
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो, जै हो-4

नींव विच जो कुर्बान हो गए, सत्संग विच नई क्रांति लाए,-2
मुक्तां दे भगत जो बने, जो बने, हाँ बने...
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो, जै हो-4

हो... शास्त्रीजी दे अनुरागी, बापा दे झमूरे आप;
मस्ती शाही फकीर-सी, दिव्य वाणी केसरी नाद,
गवर्नर अक्षरधाम दे , गवर्नर अक्षरधाम दे, चैतन्यों के शिल्पी आप,
लाईट हाऊस गुणातीत ज्ञान दे... ओ ओ
लाईट हाउस गुणातीत ज्ञान दे, रहे फैंकते सदा प्रकाश,
इको ही लगन, जीव ए साडा ब्रह्मरूप कीवें बने, हाँ बने, हाँ बने,
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो, जै हो-4
सत्संग दे बीज बोए जिथे, धरती सोणी पंजाब,
श्रीजी दी अलख जगाई, सबद्धी-मोगा-जगरांव,
प्रभात फेरियाँ कीतीयाँ...
प्रभात फेरियाँ कीतीयाँ, गली-गली विच घूमे आप,
जो मिलिया ओ भूल न पाया... ओ ओ...
जो मिलिया ओ भूल न पाया, तुवाढी मूर्ति दा प्रताप
हुण तुवाढी तरह सानू गुरुजी संभाले,

हो गई साडी बल्ले, ओ बल्ले, ओ बल्ले,
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो-4

ओ... निरंतर संत और मुक्तों दा, करदें रहें महिमा गान,
रख सुहृद्भाव जीएं हम, दो निर्दोषबुद्धि दान,
परिचय त्वाढा अस्सी बन सकिए, -2 दिन-रात रहे एही तान,
गुरुजी, स्वरूप काकाजी दे... ओ ओ...
गुरुजी, स्वरूप काकाजी दे, संबंध दृढ़ करीए आज
मैत्री मिलन महोत्सव दा फल, एही सानुं मिले, मिले, हाँ मिले
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो-8

✸✸✸

भजन - 2

(राग–ये रात, ये चांदनी फिर कहाँ...)

हो... आहा... आहा...
शांति अनुपम, अलौकिक मजा,
प्रत्यक्ष हो, प्रगट प्रभु जहाँ।
चढ़ के न उतरे स्वामिनारायण नाम का ऐसा नशा...
शांति अनुपम...।।

हे... संत के पहले दर्शन
संत के पहले दर्शन में ही ये प्रभाव है
अलग अहसास होता, दिव्यता का भाव है,
ऐसा दिव्यभाव ही, अखंड मुझको रहे;
महिमारूपी भक्ति का, व्यसन मुझको लगे।
आनंद ही आनंद मिले फिर वहाँ... प्रत्यक्ष हो प्रगट...

हे... जीव जैसा बन के बंधन,
जीव जैसा बन के बंधन प्रीति का जोड़ते,
धीरे-धीरे वृत्तियाँ, प्रभु ओर मोड़ते;
संत के प्रसाद से, प्रभु संबंध पाएगा;
देहभाव कब टला, पता भी चल न पाएगा।
चैतन्यशिल्पी अनूठा मिला..। प्रत्यक्ष हो प्रगट...

हे... योग हुआ फिर भी,
योग हुआ फिर भी स्वभाव सताएँगे,

भगवदी से जुड़े तो, ये भी टल जाएंगे
प्रभु के भजन का, बल ही काम आएगा;
रूप माया का तेरे, हित में पलट जाएगा।
माया परम सुखदायी वहाँ।
प्रत्यक्ष हो प्रगट... शांति अनुपम...

✸✸✸

भजन - 3

(राग–फिर आज मुझे तुमको, बस इतना बताना है...)

शूरवीर सहृदयी बनें, सुहृद्भाव बढ़ाना है,
काका का अमृतपर्व, हमें ऐसे मनाना है।
तुम कौन हो, किसके हो, है समर्थ वो पहचानो;
प्रत्यक्ष स्वरूप है जो, करे हित ही सदा जानो;
उसकी रुचि में रहना, यही प्रभु रिझाना है।
काका का अमृतपर्व...

निर्दोषबुद्धि रखें हम, रहे दिव्यभाव सब में;
प्रभु अर्पण कर सब कुछ, छोड़ें मेरा और मैं;
रख कर अखंड मूर्ति, मन को मंदिर बनाना है।
काका का अमृतपर्व...

भगवती से मैत्री करें, रखे संबंध ऐसा हम;
दुःख उसका अपना लें, सुख बाँट लें अपने हम;
बढ़े बाँटने से जो वही, दिव्यानंद पाना है।
काका का अमृतपर्व...

झंझट में न औरों की, कभी एक भी पल जाए;
धुन भजन अखंड करें, तो जीवन सँवर जाए;
यहीं मिला है अक्षरधाम, कहीं और न जाना है।
काका का अमृतपर्व...

काका का जीवन तो, यही मार्ग दिखाता है;
जो सेवक सरल हो गया, वही प्रभु को भाता है;
जैसा चाहा काका ने, वैसा बन के ही रहना है
काका का अमृतपर्व... शूरवीर सहृदयी...

✸✸✸

भजन - 1

(राग–प्यार किया तो डरना क्या...)

श्रीजी के धारक साहेबजी, भागीदार योगी के जसुभाई,
निर्दोष हंसी तेरी चैतन्य भेदे, निर्दोष हंसी...
निर्दोष हंसी तेरी चैतन्य भेदे, अखंड बिराजो साहेबजी,
श्रीजी के धारक साहेबजी, भागीदार योगी के जसुभाई,
माहात्म्य का स्वरूप साहेबजी।

युवाशक्ति पर ढली योगीकृपा, बापा ने दादूकाका को सौंपा -2
योगी रंग में रंग गए सारे,
योगी रंग में रंग के बने, अनुपम गुरुवर्य साहेबजी,
श्रीजी के धारक साहेबजी, भागीदार योगी के जसुभाई,
माहात्म्य का स्वरूप साहेबजी।

जीव का शिव में रुपांतर कराते, हठ, मान, ईर्ष्या की होली जलाते -2
अक्षररमुक्तों में महारथी तुम,
अक्षरमुक्तों के महारथी, ब्रह्मज्योति प्रगटाए साहेबजी,
श्रीजी के धारक साहेबजी, भागीदार योगी के जसुभाई,
माहात्म्य का स्वरूप साहेबजी।

पाँच भेदों में खेलते फिर भी, आध्यात्मिक मूल्य न गौण किए कभी,
आ... आ... आ...
योगी की मर्जी ही तेरा जीवन, युवकों के तुम दिल की धड़कन,
नैष्कर्म्य सिद्धि के वाहक तुम,
गुणातीत सेना के नायक हमें, अपना सैनिक बना दो साहेबजी,
श्रीजी के धारक साहेबजी, भागीदार योगी के जसुभाई,
माहात्म्य स्वरूप साहेब दादा!

***

भजन - 1

(राग – संसार से भागे फिरते हो...)

सत्संग से भागे फिरते हो,
भगवान को तुम क्या पाओगे
साधु से संबंध जो कर लोगे,
ब्रह्मभाव को तुम पा जाओगे
सत्संग से भागे...

सत्संग में दिव्यता स्थिर रहे
साधक की ये एक तपस्या है; } -2
हर त्याग से बढ़कर ये तप है,
तुम जीव जगत के क्या जानो -2
प्रसंग बना प्रभु मौका दें, स्वभाव यूं ही टल पाएंगे
सत्संग से भागे फिरते हो...

कोटि साधन से दुर्लभ जो,
प्रभु का संबंध हमें मौज मिला } -2
सत्संग से जुड़ कर सहज मिला...
जितना अब समर्पण कर दोगे, उतना ही सुख पा जाओगे
सत्संग से भागे फिरते हो...

दो हाथ जोड़ प्रभु प्रगट को
आज्ञा में रहे वही सत्संग है -2
ऐसे सत्संग से प्रभु वश होंगे, साधन से नहीं कर पाओगे
सत्संग से भागे फिरते हो...
सत्संग से भागे फिरते हो...

✷✷✷

भजन - 2

(राग – नदिया चले, चले रे धारा...)

ओ... ओ... ओ... ओ... -2
ओ सत्संग जो मिल गया है न्यारा
ओ... ओ... ओ... ओ... -2
ओ सत्संग जो मिल गया है न्यारा

संत के वचन का लेके सहारा
अब तो चलना होगा, जोड़ में रहना होगा
ओ... ओ... ओ... ओ... -2

जोड़ बना के जो चलता नहीं है-2
रस्ता फिर मुश्किल ये कटता नहीं है
दो मुक्तों को दो साथी बना के देखो...
स्वामी रे स्वामी, स्वामी रे स्वामी - 2
ओ... दो मुक्तों को दो साथी बना के देखो...
मैत्री अटूट उनसे करके तो देखो
रस्ता आसान होगा, रस्ता स्पीडी होगा
रस्ता आसान होगा, रस्ता स्पीडी होगा
ओ... सत्संग जो मिल गया है न्यारा
संत के वचन...
अब तो चलना होगा, जोड़ में रहना होगा - 2
ओ... ओ... ओ... ओ... - 2

ओओ... दोष स्वभाव सत्संगी के न देखो-2
संबंध किससे है उसका ये देखो
उसको भी प्रगट प्रभु ही वर्ताए...
स्वामी रे स्वामी, स्वामी रे स्वामी - 2
ओ... उसको भी प्रगट प्रभु ही वर्ताए,
स्वभाव का अपने यूँ दर्शन कराए,
जिसे छोड़ना होगा, स्वभाव छोड़ना होगा
अब तो चलना होगा, जोड़ में रहना होगा
ओ... सत्संग जो मिल गया है न्यारा
संत के वचन...
अब तो चलना होगा, जोड़ में रहना होगा
ओ... ओ... ओ... ओ... -2

ओओ.. संत की महिमा से मन अपना भर लो-2
खुल्ला संबंध संत से ऐसा कर लो
दिव्य मिला है, वो सर्वोपरि है...
स्वामी रे स्वामी स्वामी, स्वामी रे स्वामी - 2

ओ.. दिव्य मिला है, वो सर्वोपरि है...
बाजी अपने हित में करेगा,
जो न हमसे होगा, परिणाम ऐसा होगा;
दिव्य हर क्षण होगा, जन्म सफल होगा
ओ... सत्संग जो मिल गया है न्यारा
संत के वचन का ले के सहारा...
अब तो चलना होगा, दिव्य हर क्षण होगा
दिव्य हर क्षण होगा, जन्म सफल होगा - 2
ओ... ओ... ओ... ओ... - 3

***

भजन - 3

(राग–घर आया मेरा परदेसी...)

आ... आ... आ...
संत मेरा है परदेसी, मुक्तों की भावन मूर्ति
आ... आ... आ...

श्वासोश्वास में काकाजी, एक ही निशान तू हो राजी
ले उनका आधार तूने, जीती है हर एक बाजी
आ... आ... आ...

निरपेक्ष, निर्लेप, निर्गुण हैं, भावातीत - गुणातीत हैं
आतम का प्रीतम प्यारा, क्रिया तेरी चैतन्यलक्षी
आ... आ... आ...

संग नहीं, प्रसंग करें, भगवदी से दृढ़ मैत्री करें
मनमुखी ये तंत्र मेरा, कर दो हे प्रभु गुरुमुखी
आ... आ... आ...

एक तू ही, हम शून्य ही हैं, कोरा काग़ज़ बन के रहें
अविरत महिमाधारा बहे, बन के जीएं तेरी बंसी
आ... आ... आ...   संत मेरा है परदेसी...-2

***

भजन - 4

(राग – कोई जब राह न पाए...)

संबंध संत का पाया, मुक्तों का संग पाया,
अखंड दिव्य मान के जो जिया,
उसने ही समझा ब्रह्मज्ञान,
उसके लिए यहीं अक्षरधाम।

जैसे देह और उसके संबंधी से प्यार,
कर लें मुक्तों का वैसा ही स्वीकार,
संबंध की महिमा हो, गुण दोष का ना भार, -2
स्वरूपलक्षी सुहृद् बन जाएं, रसबस हो पाएं,
कि काकाजी के हम बन पाएं...
मुक्तों के बनें जो हम गुलाम,
जीतेजी यहीं पाएं अक्षरधाम।

तेरे संकल्प में अमोघ है बल,
दर्शन मात्र से वृत्ति जाए पिघल,
स्मृतियाँ तेरी अंतर को करती शीतल,-2
अनुवृत्ति तेरी जान पाएं, भक्तों में 'स्व' भुलाएं,
निरंतर महिमा गाएं...
तुम्हें राजी करने की हो तान, यही बने मेरा निशान।

गुरु साक्षात् अक्षरधाम का द्वार,
गुरु आज्ञा ले जाए भवसागर से पार,
जीव को शिव बना दे ऐसे ये शिल्पकार,-2
इनकी योजना में जुड़ जाएं, सरल बन जाएं,
रूपांतर ये हमारा कर दें...
अंतर का मिटा के अंधकार, प्रगटा दो जीव में ब्रह्मभाव।

संबंध संत का पाया, मुक्तों का संग पाया,
अखंड दिव्य मान के जो जिया,
उसने ही समझा ब्रह्मज्ञान,
उसके लिए यहीं अक्षरधाम।

***

भजन - 5

(राग–जब ज़ीरो दिया मेरे भारत ने...)

सबसे पहले योगीजी को पहचाना, काकाजी ने, काकाजी ने,
श्रीजी का स्वरूप उन्हें जाना,
सत्संग में फिर उद्‌घोष किया, पहचान योगी की करवाई,
पहचान जो वो न करवाते, 'योगी' को पहचानना मुश्किल था;
सुख अक्षरधाम का सामूहिक, धरती पर लाना नामुमकिन था,
वचन से शास्त्रीजी के जो जीए-2
बन कर कांतिकाका के भ्राता,
आत्मीयता की गंगा जिसने, 'ताड़देव' से अविरत बहाई,
मुक्तों में आत्मबुद्धि रख कर
कुटुंबभावना जिसने प्रगटाई,
योगीजी करें; ऐसा सत्संग हम, बढ़ाते रहें और आनंद करें
बढ़ाते रहें और आनंद करें!

चुप क्यों हो गए, और सुनाओ!

हुं हुं... ओ... ओ...
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा - 2
गुणातीत समाज के सेनापति, काकाजी की झाँकी कराता हूँ,
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ,
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

बापा के संकल्प में जुड़ कर शिक्षितों को साधु बना दिए
योगी में जोड़ के युवकों को स्पीरिच्युअल टॅक्नीश्यन्स बनाए हैं
कई जंगम तीर्थ रचे जिसने -2, उन्हें मन
उन्हें मनमंदिर में बिठाता हूँ
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

भगवान भज सकें बहनें भी, अपमान-विरोध को तुमने सहा
योगी मर्जी जान ये पहल करी, फिर 'पप्पाजी' ने संभाल लिया
बने अल्पसंबंधी के सेवक-2, मैं उनको
मैं उनको शीश झुकाता हूँ

योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

स्वरूपलक्षी सुहृद्‌भाव और निर्दोषबुद्धि का मंत्र दिया
'मम्मी, मम्मी' पुकारो, 'भुल्का' बन, 'मास्टर-की' लगाना सीखा दिया
'स्वरूपयोग' सिखाया जिसने हमें-2, उस 'स्वरूप'
उस 'स्वरूप' का ध्यान लगाता हूँ
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

'एलिजिबिलिटी' ना देखी तुमने, ईस्माईलिया कॉलेज चला दी रे
कुछ और न सीखा हो हमने, आत्मीयता निभानी सीखी है
भक्तों पे लुटाया जब जितना-2, कई गुना
कई गुना काकाजी से पाता हूँ
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

स्त्री-पुरुष भाव का भेद नहीं, चैतन्यस्वरूप ही देखें हैं
सोने-हीरों से भले तुले न हों, मुक्तों के दिलों से तुले हैं
दिव्य मान चरित्र तेरे सारे-2, माया से
माया से परे हो जाता हूँ
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

'दिल्ली जाओ संकल्प है बापा का, मैं नहीं तुम्हें भेज रहा'
ओ...ओ...
'मुक्त निष्ठावान मिल जाएंगे', गुरुजी को ये आशीर्वाद दिया
ओ...ओ...
दे गोद गुरुजी की किया निहाल-2, काकाजी का
काकाजी का शुक्र मनाता हूँ
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

गुणातीत समाज की चारों पंखुड़ियों में, परिश्रम तेरा समाया है
आज मंदिर-केन्द्र जो फले-फूले, 'श्रीगणेश' उसका तूने किया है

नहीं भूलें, रखी बुनियाद तूने-2, आशीष
आशीष शताब्दी पे माँगता हूँ
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...
गुणातीत समाज के सेनापति, काकाजी की झाँकी कराता हूँ
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...
ओ...हो...हो...

***

भजन - 6

(राग – घूंघट की आड़ से दिलबर का...)

साधु से संबंध बिना मुक्ति का, हर प्रयास निकम्मा रहता है-2
साधु से छुपाया कुछ भी अगर-2, संबंध दिखावा रहता है।।
साधु से संबंध बिना मुक्ति का
साधु से संबंध बिना मुक्ति का, हर प्रयास निकम्मा रहता है,
एक चलना है उसके वचन पर हमें-2, बाकी सब वो पूरा करता है।
साधु से संबंध बिना मुक्ति का, **मुक्ति का... 6**

आड़ से मन के परदे की देखें जो हम,
स्वरूप हमको समझ आए पूरा नहीं;
साधु के वचन से जो देखें अगर,
स्वरूप पहचान पाएंगे तब ही सही;
जितने हमने, गुण समझे, उतने तो गुण दे दे हमें वो,
प्रेम निरपेक्ष दे ऐसा कि, जग का प्यार फीका लगता है,
एक चलना है उसके वचन पर हमें...।।-2

छोड़ो तोड़ो की रीति बताएं सभी,
साधु कहे मोड़ो-जोड़ो प्रभु में सभी;
सेवा भगवान की तो करे हर कोई,
साधु कहता करो सेवा प्रभु भक्त की;
सत्संग में बुद्धि ना लगाए, वही भाए साधु को,
उसके अनोखे गणित के आगे, हर ज्ञान झूठा ठहरा है।।
एक चलना है उसके वचन पर हमें...।।-2

ये गलत वो सही सोचते रहते हम,
अपनी बुद्धि का रहता हमें है गरूर;
करके मूल्यांकन रहते अभावों में,
कुछ न मिलता अपने दोष बढ़ते जरूर;
दिव्य जिसने सबको जाना, आनंद मस्ती में रहे वो,
मूर्ति में जो मगन उसे हर कोई, साकार प्रभु ही दिखता है।।
एक चलना है उसके वचन पर हमें...।।-2
साधु से संबंध बिना...
साधु से छुपाया कुछ भी...
मुक्ति का...

***

भजन - 7

(राग - हमको हम ही से चुरा लो...)

साधुता प्रगटा दो, मैत्री दृढ़ करा दो-2
गुणातीत-सी, छवि तुम्हारी,
चिंतामणि सम, मूर्ति तुम्हारी,
मूर्ति यही सिद्ध करा दो। -2

काकाजी ने दिए, गुणातीत वंश के साधु,
संतस्वरूप पाए, साकार प्रत्यक्ष प्रभु,
निर्गुण तुम्हें जो हम मानें, हम निर्गुण हो जाएंगे,
अखंड निर्दोष तुम्हें जानें, तुम्हारे गुण पा जाएंगे,
मुक्तों को दिव्य मानें, तेरा माहात्म उन्हें समझें,
पराभक्ति ये दृढ़ करा दो...।
साधुता प्रगटा दो...

आपके संबंध का, लाभ मुक्तों को मिल पाए,
इसीलिए ना कभी, भीड़ लोगों की जुटाएं,
भीड़ अगर हो जाए तो, छन्नी तुम रख देते हो,
मनुष्यभाव ही आ जाए, ऐसी क्रिया करते हो,
मौके पर रहे सदा, अखंड तुझमें दिव्यता,
ऐसी निष्ठा दृढ़ करा दो...।
साधुता प्रगटा दो...।।

***

भजन - 8

(राग – बेकरार करके हमें यूं न जाइए...)

सुख अक्षरधाम का यहीं पे पाइए;
प्रगट प्रभु की प्राप्ति का आनंद मनाइए। } -2

ऊँचाई से मनाली की जिस तरह,
चंडीगढ़ नज़र आता नहीं;
ऐसे ही उठ जाए ऊंचा इस कदर,
मन का आभास रह पाए नहीं।
प्रभु भजन करके ऐसा बल पाइए।
प्रगट प्रभु की...।।

दृष्टि से ही वासनाएं टाल दीं, बैठ गए भेद कर चैतन्य में
पात्रता देखी नहीं न दोष गुण, कर दिया कल्याण एक संबंध से;
ऐसे प्रभु मिल गए क्या और चाहिए।
प्रगट प्रभु की...।।

चेतना की प्रगति हो इसके लिए, प्रभु अनुभव तो कराते हैं
रम नहीं जाएं उसी में हम कहीं, समझें प्रभु क्या कराना चाहते हैं;
पकड़ कर अनुभव आगे बढ़ते ही जाइए।
प्रगट प्रभु की...।।

***

भजन - 9

सुहृद सभी का बनना है
मिल-जुल के आगे बढ़ना है,
'स्व' भुला के ब्रह्मरूप बनना है
काका के हम मतवाले
हा...हा...हा...हा...ऽ...ऽ...ऽ...

सुहृद्भाव से जीना तो ब्रह्मभाव से भी बढ़कर है
प्रभु मेरे मैं प्रभु का मान के जीना परम धरम है

सुहृद सभी का बनना है
मिल-जुल के आगे बढ़ना है,
'स्व' भुला के ब्रह्मरूप बनना है
काका के हम मतवाले -2

***

भजन - 10

(राग – स्वामिनारायण महामंत्र महिमा स्तवन...)

ओSSS... स्वामिनारायण मंत्र है जीवंत। जपो निरंतर संत की स्मृति संग॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... भाव कुभाव से नाम जो लेगा। कल्याण का अधिकारी बनेगा॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... आधि व्याधि उपाधि टाले। जीव से विषय वासना निकाले॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... भूत पिशाच इस मंत्र से भागें। निष्ठा हो दृढ़ सद्‌बुद्धि जागे॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... काले नाग का ज़हर उतारे। स्वामिनारायण मंत्र उच्चारे॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... सर्वोपरि मंत्र बलशाली। विघ्नहर्ता परम हितकारी॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... प्रकृति का परिवर्तन कर दे। प्रारब्ध से जीव निर्बन्ध कर दे॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... काल, कर्म, माया से बचाए। अंत में अक्षरधाम दिलाए॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... अंतकाल स्वामिनारायण बोले। ब्रह्ममहोल के द्वार वो खोले॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... अष्ट प्रहर, अखंड भजे जो। ब्रह्मरूप उसका जीव करे वो॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... नामी सहित नाम ये जपेंगे। भव-भव के सब पाप जलेंगे॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... काकाजी धुन के राजा तुम। आर्षदृष्टा प्रेरककर्ता तुम॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... स्वामिनारायण धुन सिखाई। योगी की पहचान कराई॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... प्रगट की महिमा समझाई। प्रत्यक्ष करने की करामात बताई॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

ओSSS... जपो निरंतर हर क्रिया में। स्वामिनारायण बसो हृदय में॥
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण - 2

✷✷✷

भजन - 11

(राग – जिंदगी की न टूटे लड़ी...)

स्वामिनारायण भज हर घड़ी, फिर मिलेगी न ये शुभ घड़ी-2
ओ... छोड़ दे मोह माया के बंधन-2
नाम जप की पिरो ले लड़ी, स्वामिनारायण भज...।।

भाग्यशाली थीं वो गोपियां, कृष्ण दर्शन जिन्होंने किया;
ऐसा जीवन जिया भी तो क्या, प्रभु दर्शन न जिसमें मिला,
ओ... आसरा न मिला भी तो क्या, मन में स्वामी की मूर्ति बसा
ओ... मन में मूर्ति बसा
लग जाएगी सुख की झड़ी, स्वामिनारायण भज...।।

एक धन ही तो सब कुछ नहीं, 'गर स्वामी को पाया न हो-2
रह जाएगी माया यहीं, संग जाना तेरे कुछ नहीं
ओ... संग जाना नहीं
रह जाएगी माया यहीं, स्वामिनारायण भज...।।

भज ले स्वामी नाम, स्वामी नाम भज ले
ओ... भज ले स्वामी नाम, स्वामी नाम भज ले...
स्वामिनारायण को जो भजे, काल माया करम से बचे-2
स्वामी नाम बिना कुछ नहीं, संतों ने कहा है यही
ओ... कहा है यही,
स्वामी नाम बिना कुछ नहीं, स्वामिनारायण भज...।।

भाग्यशाली तो हैं हम सभी, काकाजी की शरण है मिली-2
दिल से न हटे ये कभी, काकाजी की अलबेली छबि
ओ... काकाजी की छबि,
दिल से न हटे ये कभी, स्वामिनारायण भज...।।

आज से ये प्रतिज्ञा रही, स्वामी ध्यायेंगे हर पल तुझे-2
मन में विश्वास दृढ़ है यही, अक्षरधाम मिला है यहीं
ओ... मिला है यहीं
मन में विश्वास दृढ़ है यही, स्वामिनारायण भज...।।
स्वामिनारायण भज...

✸✸✸

भजन - 12

(राग – गल मुकी ना सजण नाल...)

स्वामिनारायण भज मन प्यारे
चौरासी तेरी कट जाएगी
दूर हो जायेंगे-2, दुःख तेरे सारे
किस्मत तेरी खुल जाएगी
स्वामिनारायण...

काकाजी की सब पर एक-सी नज़र है,
राजा हो या रंक उनको सब की फ़िकर है,
काकाजी की सब पर एक-सी नज़र है,
राधा हो या मीरा उनको सब की फ़िकर है,
यहां रहमत के-2, भरे हैं भंडारे...
तेरी भी झोली भर जाएगी
स्वामिनारायण...

काकाजी को सच्चे दिल से जिसने पुकारा है
प्रगट हो के काकाजी ने दिया सहारा है
रोम-रोम में तू-2, काका को बसा ले...
कि आत्मा भी सुख पाएगी
स्वामिनारायण...

त्यागी नहीं, ना साधु , ना वो गृही हैं
लाड़ले प्रभु के पुत्र काका परमयोगी हैं
चैतन्यशिल्पियों के सर्जक, सबके प्राणाधार हैं,
गुणातीत समाज के ये सर्जनहार हैं
अब भी स्वरूप हम-2, उनका पहचाने...

ब्रह्मरूप आत्मा हो जाएगी...
स्वामिनारायण...

एहसान काकाजी ने हम पर किये हैं } -2
गुरुजी जैसे संत हमें भेंट में दिये हैं
एहसान काकाजी ने हम पर किये हैं
गुरुजी जैसे संत हमें भेंट में दिये हैं
ताड़देव में हैं-2, जलवे और नज़ारे
ख़ुशी है ख़ुशी छाई रहेगी...
स्वामिनारायण...

***

भजन - 13

(राग – जब भी कोई लड़की देखूं...)

स्वामिनारायण जो भी सच्चे दिल से बोले
वो **कभी ना डोले-डोले-3**

प्रगट जो हमको मिले उसके संग जो मन को जोड़े
तो ना डोले-डोले, **कभी ना डोले डोले-3**
काका के बोलो रे जयकारे, कारज पूरे होंगे सारे
बन जाएगी रे तेरी बात बिगड़ी बनेगी चाहे
हौले-हौले-हौले-2
स्वामिनारायण...
प्रगट जो...

कोई माने या ना माने, हम भक्त तेरे दीवाने
तुम इस दुनिया के मालिक, प्रभु भरे हैं तेरे ख़जाने
सूरज चंदा और तारे, सब चलते तेरे इशारे
भक्तों की करो रखवाली, सब भक्त तुम्हें हैं प्यारे
जिसने भी तुमको है ध्याया, मन चाहा फल पाया
बन गई है उसकी बात बिगड़ी, बनी है चाहे
हौले-हौले-हौले-2
स्वामिनारायण...

प्रगति मेरी नहीं होती, विचार ये मन में आए
ऐसे चक्कर में पड़कर, मायूस नहीं हो जाएं

भगवदी से मिल के करें तो, सब कार्य सफल हो जाए
भजन का सहारा लेकर, फिर आगे कदम बढ़ाएं
संत से संबंध बढ़ाता जा, बल उसका ले चलता जा
चार्ट सभी का उसके हाथ चलाए, तेजी से या
हौले-हौले-हौले-2
स्वामिनारायण...

अनिच्छा या इच्छा से, संबंध में जो भी आए
संबंध से बस इतने ही, कल्याण को वो पा जाए
प्रगट की क्रियाओं में, मन-बुद्धि नहीं लगाए
सुरुचि यूं रखे तो, नित नए ख़जाने पाए
गुणातीत ज्ञान सबीज है, दिल में छुपी ऐसी चीज है
वक्त लगेगा लेकिन आएगा ये ज्ञान समझ में
हौले-हौले-हौले-2
स्वामिनारायण...
प्रगट जो...
काका...

✷✷✷

भजन-14

(राग-उच्चे मंदरा वाली)

स्वामिनारायण
स्वामिनारायण } -4
स्वामिनारायण
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये } -2
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण स्वामिनारायण...
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये } -2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण
स्वामिनारायण स्वामिनारायण

जय स्वामिनारायण जय, अक्षरपुरुषोत्तम गाईये
जय स्वामिनारायण जय, अक्षरपुरुषोत्तम गाईये } -2
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण स्वामिनारायण...
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये } -2

स्वामिनारायण स्वामिनारायण
स्वामिनारायण स्वामिनारायण
जय अक्षरपति पुरुषोत्तम जय श्री सहजानंद गाईये
जय अक्षरपति पुरुषोत्तम जय श्री सहजानंद गाईये } -2
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण स्वामिनारायण...
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये } -2

स्वामिनारायण स्वामिनारायण
स्वामिनारायण स्वामिनारायण
जय अक्षरब्रह्म, जय स्वामी, गुणातीतानंद गाईये
जय अक्षरब्रह्म, जय स्वामी, गुणातीतानंद गाईये } -2

जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण स्वामिनारायण...

स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये } -2
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण स्वामिनारायण...
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये } -2
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये

स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये }-2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये }-2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
जय स्वामिनारायण गाईये
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये }-2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण स्वामिनारायण गाईये

✹✹✹

भजन - 15

(भांगड़ा)

स्वामिनारायण स्वामिनारायण -2
स्वामिनारायण बोलो स्वामिनारायण -4
स्वामिनारायण जो ध्यावे, भगत ऊ, सदा सुखी हो जावे-2
उनू कष्ट कदे न आवे, मंत्र जो गावे-2, संत नूं ध्यावे-2
ओ बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले
स्वामिनारायण बोलो स्वामिनारायण-2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण-2
संत दी स्मृति नाल कर जाप, तेरे जल जाणगे पाप-2
अक्षरधाम दा सुख ऊ पावे, मंत्र जो गावे-2, संत नूं ध्यावे-2
ओ बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले
स्वामिनारायण बोलो स्वामिनारायण-2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण-2
काकाजी दे भगत प्यारे-रल मिल गज्ज के लाऊन जयकारे-2
मेहर कर दीती पंजाब च सारे-काकाजी महाराज ने
काकाजी महाराज ने
ओ बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले
स्वामिनारायण बोलो स्वामिनारायण-2
स्वामिनारायण स्वामिनारायण-2

मूर्ति दिल ते कर दी राज, चलाया रेत दे विच जहाज-2
गुरुहरि काकाजी महाराज दो हाथे कोटि कोटि धन्यवाद
भेंट विच दित्ते गुरुजी महाराज
काकाजी दी जय होवे - काकाजी दी जय होवे
ओ बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले बल्ले
स्वामिनारायण बोलो स्वामिनारायण-3

***

भजन - 16

(राग – तोहफा कबूल है हमें सरकार आपका...)

स्वर्गों से शानदार है, ताड़देव आपका-2
करता है अक्षरमुक्त ही-2, दीदार आपका...
स्वर्गों से शानदार है-2, ताड़देव आपका

अवतारों के अवतारी, श्री सहजानंद महाराज
सर्वोपरि सत्ता तेरी, सभी पे तेरा राज,
स्वीकारूं हर प्रसंग मैं-2, ज्यों तोहफा हो आपका,
करता है अक्षरमुक्त ही-...2
स्वर्गों से शानदार है-2

दिव्य तू और तेरे सभी, मानूं मैं यही सदा,
तेरी और तेरे भक्तों की, गाऊं मैं महिमा,
भक्तों का बनूं दास मैं-2, ज्यों हूँ दास आपका
करता है अक्षरमुक्त ही-...2
स्वर्गों से शानदार है-2

जब तक है मेरे दम में दम, और सांसों में है सांस,
मूर्ति ही एक तेरी रहे, मिटे मन का भी आभास
मिल गया आज है मुझे-2, यहीं धाम आपका
करता है अक्षरमुक्त-...2
स्वर्गों से शानदार-2

***

भजन - 17

(राग – 'महाभारत' – टाईटल गीत...)

स्वर्णजयंती... स्वर्णजयंती... स्वर्णजयंती
आ... आ... आ... आ... आ...
गाथा दादुकाका की-2
आ.. दादुकाका की,
दादुकाका की
अवनी के धूमकेतु की, नए युग के क्रांतिवीर की,
योगी के सपूत की, योगी के वारिसदार की,
योगी की पहचान कराई, काकाजी ने सत्संग में,
योगी की पहचान कराई...

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म, नैति मामेति सोऽर्जुन॥

रोम रोम से बहे तेरे, श्रीजी का रणकार;
देश-विदेश में योगी की, योजना करी साकार।
गढडा मेरा, मैं गढडा का, श्रीजी के उद्गार;
दिल्ली मेरी, मैं दिल्ली का, दिया तूने अभय वरदान।

काका - पप्पा - कांतिकाका की त्रिपुटी ने किया कमाल,
किया कमाल, किया कमाल, किया कमाल...।
भक्तों की पराभक्ति, मैत्रीभाव की शक्ति;
निर्दोषबुद्धि का नवनीत,
आ... आ...
निर्दोषबुद्धि का नवनीत,
योगी की ही आसक्ति।
आ... आ...
प्रगटस्वरूप की स्मृति, स्वामिनारायण मंत्रशक्ति,
जीतेजी धाम का सुख, ब्राह्मीस्थिति व मुक्ति।
जय काकाजी... जय काकाजी

ओ... जय काकाजी
अध्यात्म में नव युग का, काका ने दिया आगाज़;
गुणातीत समाज की स्थापना, की स्वर्णजयंती आज।

(राग: दिल वाले, दिल वाले तेरा नाम क्या है...)

ऋण तेरा... ऋण तेरा हे काकाजी कोई कैसे चुकाए,
ऋण तेरा हे काकाजी कोई कैसे चुकाए,
अनंत तेरे एहसान हैं हम पर क्या-क्या गिन पाएं।
जय काकाजी, जय काकाजी...-2

योगी वचन से जंग में कूदे, नंदाजी को विजयी बनाया,
योगीजी का अनुग्रह पाकर, ओ... असली नारायण को देखा,
योगीजी में...
योगीजी में प्रगट हैं शास्त्रीजी ने ये समझाया;
योगीजी श्रीजी का स्वरुप हैं, ये उद्घोष किया।
जय काकाजी... जय काकाजी...-2

योगी का अभिप्राय जान के तूने, शिक्षित युवकों को साधु बनाने;
बहनों को भी प्रभु भजवाने, ओ... तूने अपमान, बदनामी झेली,
जंग खेली...
जंग खेल के विजयी हुए माया को फटकारा,
अध्यात्म नूतन समाज का सर्जन तूने किया।
जय काकाजी... जय काकाजी...-2

हर क्षितिज में किला जीतने, ऊँट भांति कुर्बान हो गए,
अपना सब कुछ माना साझा तूने,
ओ... घोंसले हमने चाहे अलग बनाए,
घूंट विष का...
घूंट विष का पीकर तूने, हमें अमृत पिलाया,
नींव में समा जाकर, हमें सरताज बनाया।
जय काकाजी... जय काकाजी...-2

शास्त्रीजी और योगीजी का संबंध देख कर फनां हो गए,
चैतन्यों का प्रहरी बन कर, ओ...तूने अपने लहू से सींचा,
आहूति दी...
आहूति दी 'योगी यज्ञ' में, सर्वस्व लुटाया,

संप, सुहृद्भाव, एकता से जीकर बताया।
जय काकाजी... जय काकाजी... 4

✷✷✷

भजन - 18

(राग– वे सरदारा, शाहुकारा, सुन ले लंबरदारा, हुन जागो आईया...)

साक्षात्कार की, हीरक जयंती, गुरुजी के अमृतपर्व का है उत्सव आया,
अमृतमय ये कलश है आया,
बल्ले भई हो लख लख बधाईयाँ!
जीवन में अनमोल सुनहरा अवसर आया,
अमृतमय ये कलश है आया,
बल्ले भई हो लख लख बधाईयाँ!
ताड़देव के, प्रांगण में, इस मौके पे मुक्तों के दिलों में हर्ष है छाया,
सुहृद्भाव का कलश है लाया,
बल्ले भई हो लख लख बधाईयाँ!
अमृतमय ये कलश है आया,
बल्ले भई हो लख लख बधाईयाँ!

श्रीजी के चरणों में वंदन, करें स्वरूपों का अभिनंदन, -2
देवता भी नभ से जिन पर पुष्पों की वृष्टि करते हैं,
उनकी निश्रा पाकर आज धरा पर आनंद करते हैं, -2

सब स्वरूपों के आज दर्शन, करते कुटुंब के मुक्त ये सारे, -2
अब तो नज़र जहाँ भी देखे, वहाँ गुणातीत कुनबा है,
सबके दिल में प्रभु को राजी करने का ही जज़्बा है -2

साक्षात्कार की, हीरक जयंती, गुरुजी के अमृतपर्व का है उत्सव आया,
अमृतमय ये कलश है आया,
बल्ले भई हो लख लख बधाईयाँ!
जीवन में अनमोल सुनहरा अवसर आया,
अमृतमय ये कलश है आया,
बल्ले भई हो लख लख बधाईयाँ!
ताड़देव के, प्रांगण में, इस मौके पे मुक्तों के दिलों में हर्ष है छाया,
सुहृद्भाव का कलश है लाया,
बल्ले भई हो लख लख बधाईयाँ! -4

✷✷✷

भजन - 19

(राग– गोविंदा आला रे, आला...)

स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा-2
श्रीजी का प्यारा रे प्यारा, और ब्रह्मसमाज का दुलारा-2
नहीं एक, दो, तीन, चार, अरे! सभी भक्तों का तू प्यारा-2
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

हुआ गोंडल में एक चमत्कार-2
योगीजी ने कराया साक्षात्कार-2
शुभ बावन की साल और फरवरी मास-2
बना योगी का - 2, तू प्राणप्यारा प्यारा...
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

सुहृद्भाव और निर्दोषभाव-2
लिया आत्मबुद्धि का उठाव-2
अखंड दिव्यदृष्टि, सेये स्वामिश्रीजी-2
रखा योगीजी को -2, ही एक प्यारा-प्यारा...
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

धन, धाम, कुटुंब किया अर्पण-2
सत्संग में है अजोड़ समर्पण-2
पराभक्ति अद्भुत, काका तेरी अतुल्य-2
पिला दे सबको -2, ब्रह्मरस का प्याला-प्याला...
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

जिन्हां राजी कीत्ते 'इको' स्वामी-2
उनहां दे जीवन 'च' नहीं कोई खामी-2
हो के ब्रह्म नाल ब्रह्म, पावो अखंड परब्रह्म-2
बहान्दे ओ, बहान्दे ओ अमृतरस धारा धारा
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

साधु जेही नहीं उच्ची पदवी-2
इह तां अक्षरधाम दी है डिगरी-2
त्यागी न गृहस्थ, फिर वी परम एकांतिक-2
तुस्सी बणे हो -2, सब दे प्राण प्यारे प्यारे
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

तेरे मुखड़े दा अद्‌भुत आकर्षण-2
जादु भरीयाँ अदावाँ मनभावन-2
तेरे दिल दा 'ए' प्यार, मुख दा 'ए' खुमार-2
करे जगत दे -2, सुख नूँ खारा खारा
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

खैवेया योगी परिवार के तुम-2
धारे स्वामिश्रीजी तुमने अंगोअंग-2
फर्क तिलमात्र नहीं, है प्रतीति सबको सही-2
वारिसदार -2, हुआ तू तो न्यारा-न्यारा
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा

आप अक्षरधाम के निवासी-2
कर दो हमको भी वहाँ का वासी-2
गौलोक, वैकुंठ धाम, नहीं हमें कोई काम-2
जो नहीं तुमको -2, जो नहीं तुमको एक भी भाता-भाता
स्वामी का प्यारा रे प्यारा, और मुक्त समाज का दुलारा } -4
श्रीजी का प्यारा रे प्यारा, और ब्रह्मसमाज का दुलारा

***

भजन - 20

आलाप...
सबसे परे सर्वोपरि स्वामिनारायण का धाम है
कोटि कोटि सूर्य-चंद्र से अधिक प्रकाशमान हैं
श्वेत सच्चिदानंद स्वरूपा, शीतल अक्षरधाम है
अक्षरब्रह्म और दिव्य मुक्तों संग श्रीजी विराजमान हैं

अर्चिमार्ग की ओर... चलो रे अर्चिमार्ग की ओर... -2
अंतर में गुणातीतभाव की होती देखो भोर... -2
अर्चिमार्ग की ओर... चलो रे अर्चिमार्ग की ओर... -2

करुणानिधि के वरदानों ने निश्चिंत हमें बनाया,
देकर मंत्र स्वामिनारायण अभयदान बरसाया
काष्ठ से जुड़ के लोहा जैसे पानी में नहीं डूबता,

संत संबंध से कैसा भी जीव भवसागर तर जाता,
ब्रह्मस्वरूप संतों के द्वारा, अचिमार्ग दिखलाया,
ऐसे समर्थ गुणातीत संत से बांधो जीवनडोर,
अर्चिमार्ग की ओर... -2
अर्चिमार्ग की ओर... चलो रे अर्चिमार्ग की ओर... -2

योगीजी का संकल्प हो मंदिर दिल्ली में महान,
दिव्य ऐक्य से काकाजी ने ली उसकी ही ठान,
किए पसंद गुरुजी, जिन पर था विश्वास अपार,
अक्षरपुरुषोत्तम पधराए, योजना की साकार,
रिश्ता गुरुजी जैसा अनूठा कर लो संत के साथ,
अमोघ बल है संतकृपा में, होंगे नहीं कमजोर,
अर्चिमार्ग की ओर... -2
अर्चिमार्ग की ओर... चलो रे अर्चिमार्ग की ओर... -2

स्वामिनारायण मार्ग बना के, गुरुहरि की रटना ले के,
उनके नाम की लेन बना के, भक्ति अर्घ्य चढ़ाया,
भक्ति अर्घ्य चढ़ाया, -2
तीन फरवरी पार्क बना के, अभिप्राय की भक्ति करके,
कुटुंबभाव की अलख जगा के, काका को प्रगटाया,
काका को प्रगटाया, -2
'ताड़देव' में काकाजी और पप्पाजी पधराए,
स्टेम्प काकाजी की दर्शाए, गुरुभक्ति अनमोल!
अर्चिमार्ग की ओर...-2
निष्ठा, प्रीति, माहात्म्य से एक दिव्य समाज रचाया,
धन्य गुरुजी, काकाजी का नाच उठा मन मोर
अर्चिमार्ग की ओर... -2
अर्चिमार्ग की ओर... चलो रे अर्चिमार्ग की ओर... -2
अर्चिमार्ग की ओर...-14
आ..... आ......

✸✸✸

भजन - 1

(राग–दिल ही दिल में ले लिया दिल...)

हमको चरणों में शरण दी, मेहरबानी आपकी-2
हम तो इस काबिल न थे, प्रभु कदरदानी आपकी
हमको चरणों...

लख चौरासी घूमते आए हैं मानवरूप में-2
उसका सार्थक जन्म जिसने-2, महिमा जानी आपकी
हमको चरणों...

बस दया दृष्टि से ज्यादा और कुछ नहीं चाहिए-2
राह मुक्ति की दिखाती-2, दिव्य वाणी आपकी,
हमको चरणों...

हमने सब कुछ पा लिया है प्रभु तुम्हारे दर्श से-2
रूप मन में बस गया है-2, जैसे निशानी आपकी
हमको चरणों...

आपके चरणों में काकाजी हम समर्पित हो सकें-2
तन तुम्हारा मन तुम्हारा-2, हो जिन्दगानी आपकी
हमको चरणों...

हम सभी पर हे दयामय, इतनी करुणा कीजिए-2
हर घड़ी होठों पे सबके-2, महिमा ही हो आपकी
हमको चरणों...   हम तो इस...

***

भजन - 2

(राग–भोली सूरत दिल के खोटे...)

हम है बड़े किस्मत वाले, हमको मिले जो **गुरुजी निराले-2**
ओ... ओ... संबंध में इनके आता है जो
प्रतीति प्रभु की होती है उसको
कृष्णरूप किसी को तो विष्णुरूप किसी को
जैसा जिसका भाव दिखे वैसा उसको
कृष्णरूप किसी को तो विष्णुरूप किसी को
काकाजी रूप दिखने वाले, **हमको मिले जो गुरुजी निराले-2**
हम हैं बड़े...

पहले प्रीति का रंग चढ़ाएं, दिल में ऐसे जगह बनाएं
शुद्धिकरण की फिर क्रिया चलाएँ
अच्छे-अच्छे को हिलाएँ, तब हिलाएँ
शुद्धिकरण की फिर क्रिया चलाएँ
मान, ईर्ष्या, मोह सब निकालें,
हमको मिले जो गुरुजी निराले-2
हमको मिले जो...
हम हैं बड़े...

जीव के छोटे गुण भी उभारें, खींच ले डूबते को इसके सहारे
यश-अपयश की परवाह न करते
दे के सेवा, लीन अपने में रखते
यश-अपयश की परवाह न करते
प्रभु में अखंड रहने वाले, हमको मिले जो...
हम हैं बड़े...

काकाजी ने जो राह बताई जीवन बना है इनका वही
जग में रहे पर अलिप्त रहते
रसबस भक्तों में हो के रहते
हित सबका ही करने वाले, हमको मिले जो...
हम हैं बड़े...

प्रार्थना सुन लो ये हमारी, समझें क्रिया न मायिक तुम्हारी
कृपा की हमको जो अपनाया, आपने ही पात्र बनाया
ब्रह्मरस भी आप भरने वाले
हमको मिले जो **गुरुजी निराले-2**
हम हैं बड़े...

✷✷✷

भजन - 3

(राग–हर तरफ, हर जगह...)

आ... आ... आ...
हर तरफ, हर जगह, हर मुक्त में है हाँ प्रभु का नूर,-3
हाँ इसी का नूर,
रोशनी का कोई दरिया तो है, हाँ यहीं पे जरूर,-3

आ... आ...-2
ये आसमां, ये जमीं, चाँद और सूरज,
इसी के इशारे पर, चलती है कुदरत, -2
आश्रय इनका जो लेता है, होता नहीं लाचार, -2
हर तरफ, हर जगह, हर मुक्त में है हाँ इसी का नूर।
आ... आ...
इंसान जब कोई, है राह से भटका,
इसने दिखा दिया, उसको सही रस्ता, -2
ये ही तो है जो करता है रक्षा हमारी जरूर -2
हर तरफ, हर जगह, हर मुक्त में है हाँ प्रभु का नूर,
रोशनी का कोई दरिया तो है, हाँ यही पे जरूर,
आ... आ... आ...

***

भजन - 4

(राग–इशारों इशारों में दिल लेने वाले...)

हो... हो ओ... आ...
हाय... हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने,
दिव्य प्रेम जिनका जगत को छुड़ा दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने।।
आ... आ...-2

गुणातीत साधु बिना, ऐसा सत्संग कहाँ पर मिले,
देह छोड़ जिन्हें पाना, जीतेजी यहीं पर मिले
जीतेजी यहीं पर मिले
मेरे दुःख के साझी, भवसागर के माँझी,
दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने
हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने।

तर्क मन बुद्धि के, अमहिमा, वो ही अंतर का कुसंग है,
आत्मबुद्धि, प्रीति मुक्तों में, यही सच्चा सत्संग है,
यही सच्चा सत्संग है
कुटुंबभावना से, जो दृढ़ ये कराते,
दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने
हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने।

स्पंदन मन के हमें, अब छू ही नहीं पाएं,
सिर का ताज हम मानें, मुक्त सामने जो आए,
मुक्त सामने जो आए
मुक्तों के 'इश्की', चैतन्यों के प्रहरी,
दिए हमको ऐसे, गुरु काकाजी ने
हँसी खेल में जीव ब्रह्मरुप बना दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने
दिव्य प्रेम जिनका जगत को छुड़ा दे, दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने...
दिए हमको ऐसे गुरु काकाजी ने...-3

✸✸✸

भजन - 5

(राग–मारा कूबामां हाथी...)

हे...हे...हें...हें...
हांभळो रे डोहा रे हांभळो जवानिया,
हांभळो रे गामना छैया...
मारा कूबामां हाथी पेठो मारा भई, -2
हुँ तो नाचू थनक थन थई -2

आओ रे भाईयों, आओ रे भक्तों,
आओ अक्षर के मुक्तों,
संतरूप में पधारे स्वयं श्री हरि
गुरुजी रूप हमको मिले काकाश्री
नाचो मिलजुल थनक थन थई -2
गुरुजी रूप हमको मिले काकाश्री
नाचो मिलजुल थनक थन थई -2

मन-बुद्धि के, आवरण सारे, चीर के वो भीतर में बैठे -2
तीनों लोक के स्वामी आज हमरे जैसे बन प्रत्यक्ष बैठे
सारा जीवन पलट गया, भाग हमारे जागे
ओ... ओ...

सारा जीवन पलट गया, भाग हमारे जागे
हमरे प्रारब्ध सारे टले सुनो भई,
नाचो मिलजुल थनक थन थई -2
गुरुजी रूप हमको मिले काकाश्री
नाचो मिलजुल थनक थन थई -2

हे...हे...हे...हे...हे...हे...
पात्र-कुपात्र वो, देखे नहीं; गुण दोष भी नज़र में न लेते -2
संत स्वरूप से, आज स्वामिनारायण, मौज में संबंध देते,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण,
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण
संत स्वरूप से, आज स्वामिनारायण, मौज में संबंध देते
दिव्य मुक्त समाज दिया, आत्मीयता ऐसी पाई,
ओ...ओ...

दिव्य मुक्त समाज दिया, आत्मीयता ऐसी पाई,
इनमें रसबस हुए तो जगत खोटा हुआ भई,
नाचो मिलजुल थनक थन थई -2
गुरुजी रूप हमको मिले काकाश्री
नाचो मिलजुल थनक थन थई -2
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण,
राम कृष्ण गोविन्द, जय जय गोविन्द -2
हरे राम गोविन्द, जय जय गोविन्द -2

हे नारायण हरे, स्वामिनारायण हरे -2
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण -4

✹✹✹

भजन - 6

(राग– तुम आए तो आया मुझे याद गली में आज चाँद...)

हे भजनिक सुहृद् गुणातीत, तेरी मूर्ति धार के जीएं-2
हम सब के हो प्राणाधार-2, तेरी मूर्ति धार के जीएं- 3 } -2

वचनामृत प्रथम अट्ठावन, साधना का आधार बना कर
बने काकाजी की पहचान-2, तेरी मूर्ति धार के जीएं-2

तरह-तरह के लाड़ करा कर, खेल में ही स्वभाव छुड़ा कर
दिया मौज में अक्षरधाम-2, तेरी मूर्ति धार के जीएं-2

निराली निर्गुण मूर्ति तुम, अनिर्देश की विभूति तुम
फिर भी भक्तों के बनते दास-2, तेरी मूर्ति धार के जीएं-2

बौद्धिक गिनतियाँ होतीं हमारी, जीवलक्षी पर क्रिया तुम्हारी
रहो चौदह लोक में आप-2, तेरी मूर्ति धार के जीएं-2

आपसे जिसको राग हुआ है, उसको ही बैराग हुआ है
जीव सत्संगी कर दो आप-2, तेरी मूर्ति धार के जीएं–2
आज प्रभु मिले साक्षात्, तेरी मूर्ति धार के जीएं
मिले संत स्वरुप में आज-2, तेरी मूर्ति धार के जीएं-2
हे गुणातीत विभु साकार, गुरुजी जीयो सौ-सौ शरद
हम सब के हो प्राणाधार-2, गुरुजी जीयो सौ-सौ शरद-3

✸✸✸

भजन - 7

(राग–दिल है छोटा–सा, छोटी–सी आशा...)

हे प्यारे गुरुवर, हे प्यारे काका
जैसा भी हूँ मैं, मैं हूँ तुम्हारा
तुम स्वामी मेरे, मैं दास तेरा
माता-पिता तुम, बालक मैं तेरा
दुःख हो या सुख हो, गम या खुशी हो
धूप हो या छांव, जीवन में मेरे
आंखों में तेरी, मूरत बसी हो,
होठों पे मेरे नाम हो तुम्हारा
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण हे प्यारे गुरुवर...
तू ही है कर्ता, तू ही है हर्ता
सबका नियंता, तू ही है मानूं
हो डोर मेरी, हाथों में तेरे,
कुछ भी नहीं मैं, सब कुछ तू जानूं
पहचान पाऊँ, स्वरूप तुम्हारा हे प्यारे गुरुवर...
निर्दोषबुद्धि, निष्काम जीवन
करुणा से तेरी, बन जाए मेरा
दोष न देखूँ, मैं दूसरों के,
निंदा सुनूं ना, करूँ ना किसी की
मन-चित्त निर्मल, बन जाए मेरा
हे प्यारे गुरुवर... हे प्यारे गुरुवर, हे प्यारे काका!

✸✸✸

भजन - 8

(राग– डोला रे डोला...)

हे भीगा रे, भीगा रे, भीगा रे, भीगा...
हे भीगा रे...
हं-हं-हं-हा आ... हां-हां-हां हा आ...
ओ... स्वामी...
जय जय स्वामिनारायण-3
रे भीगा रे, भीगा रे, भीगा, जी भीगा,
दिल भीगा, चित्त भीगा, मन भीगा, अंग भीगा-2
काकाजी के रंग में, गुरुजी के संग में
रंगा सब, रंगा सब, काकाजी के रंग रंगा सब,
काकाजी के रंग में, गुरुजी के संग में,
पाई गुणातीत गोद, मिला संबंध अद्‌भुत-2
अब सारा ही गुरु के रंग में डुबो दें
भीगा रे, भीगा रे...-2
जय जय जय स्वामी जय नारायण हाँ...।
जय जय जय स्वामी जय नारायण हाँ...।

मूर्ति प्रभु की जिनके प्राण का आधार है,
आनंदोब्रह्म मिले प्रभु जो साकार हैं,
मुक्तों के जीवन का मिटाते अंधकार हैं
गुणातीत संत ये तो मोक्ष का द्वार हैं।
हां... हां... आय-आय-आय-आय
प्रत्यक्ष मेरे हो आतम तुम,
जय जय स्वामिनारायण
भव भव के जीवन साथी तुम,
जय जय स्वामिनारायण
मुक्तों के रास रचैया तुम,
जय जय स्वामिनारायण
हर प्रसंग के कर्ता-हर्ता तुम,

जय जय स्वामिनारायण
रहो वर्तन, वाणी, विचार में तुम,
तुम तुम तुम तुम तुम तुम तुम
बसो दिल की हर धड़कन में तुम,
धबक धबक तुम-तुम तुम तुम-2
रहो वर्तन, वाणी, विचार में तुम,
बसो दिल की हर धड़कन में तुम,
ले तेरा आधार, रहे तेरा आकार,-2
अब तेरे ही रंग में हम खुद को डूबो दें,
भीगा रे, भीगा रे, ... ।।
हे...हे...हे...हे...

तेरा संबंधी, ब्रह्म की मूर्ति,
गुण दोष से पर, मानूँ दिव्य सभी
गुरू कृपा से स्थिति पाएंगे जब,
दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य
सारा सत्संग दिव्य दिखेगा तब
दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य सब दिव्य
अपनी कसनी में, रखना तुम...
दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य...
राजी तुम्हें कर लें, एक हों हम...
दिव्य दिव्य सब दिव्य दिव्य...
ले तेरा आधार, रहे तेरा आकार, -2
अब सारा ही गुरु के रंग में डुबो दे
भीगा रे, भीगा रे... ... ...।।
भीगा रे, भीगा रे, भीगा रे, भीगा रे, भीगा जी भीगा,
दिल भीगा, चित्त भीगा, मन भीगा, अंग भीगा।
भीगा, भीगा, भीगा, भीगा, भीगा-4
जय जय स्वामिनारायण-6...
भीगा, भीगा...   हे भीगा रे...

✷✷✷

भजन - 9

(राग – हे मारुति सारी राम कथा ...)

हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले-2
संपर्क में तेरे जो आया...
संपर्क में तेरे जो आया, उसके जन्मों के फेरे टले, हे काकाजी...
हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले
जिसने तुमसे संबंध किया, उसका तो मूल अज्ञान टले, हे काकाजी..
हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले,
जय जय जय काकाजी, जय हो जय जय काकाजी -2

तुम ध्रुवतारक सम पथदर्शी, पथदर्शी -पथदर्शी
हो रवि समान तुम समदर्शी, समदर्शी -समदर्शी
सतयुग है तेरे सान्निध्य में -2
गुणातीत संत चैतन्यदर्शी, चैतन्यदर्शी - चैतन्यदर्शी
शूरवीर, निपुण, निडर योद्धा...
नारायणी सेना के सेनापति, हर प्रसंग पे सबकी ढाल बने, हे काकाजी
हे काकाजी गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले,
जय जय जय काकाजी, जय हो जय जय काकाजी

जपयज्ञ का मूर्तस्वरूप हो तुम, मूर्तस्वरूप हो तुम
संबंध से तेरे सनाथ हैं हम, सनाथ हैं हम
कुसंग जीव का टाल दे जो...
कुसंग जीव का टाल दे जो, **ऐसे अक्षर के राजहंस हो तुम-2**
तेरे संकल्प और भजन से ही...
तेरे संकल्प और भजन से ही, सुख धाम का हमको आज मिले, हे काकाजी
हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी...।।
हे काकाजी, धन्यवाद तुम्हें, हमको गुरुजी भेंट दिए;
जय जय जय काकाजी, जय हो जय जय काकाजी-2

(राग – दिल के टुकड़े–टुकड़े करके...)

स्वानुभव से, साधना के गुर, काकाजी ने अनेकों दिए,
साधकों को जाग्रत रखने, काकाजी ने प्रश्न किए,
दोहराए तो, जान ये पाएं, उनके कहे पर कितना चले,
साधकों को जाग्रत रखने, काकाजी ने प्रश्न किए।

(राग – क्यों मिथिला में शिवधनुष को तुमने...)

स्त्री-पुरुष भाव क्या अंतर से है टल गया? उत्तर दो, उत्तर दो
ब्रह्मरूप क्या हम हो गए, जीव भाव टल गया ? उत्तर दो, उत्तर दो
योगी बापा ने जिस हेतु हमें दूर किया,
क्या हमने उस निशान को है हासिल किया ?
क्या मन के राज्य को हमने सदंतर छोड़ दिया, उत्तर दो, उत्तर दो?
क्या सद्गुरु राज्य में हमने प्रवेश है किया? उत्तर दो, उत्तर दो?
भावात्मक एकता के लिए जो बलिदान दिया...
काकाजी ने... काकाजी ने...
काकाजी, हम कहीं तेरा निशान ना चूकें,
तेरा निशान कभी ना चूकें -2

✸✸✸

भजन - 10

(राग–हो लाल मेरी पत...)

हो... हो...
हो आज मेरी आतम ख़ुशियों में गावत भगवन् -2
आयो रे द्वार, चारों प्रकार, अति बरसायो आनंद
बोलो जय सहजानंदम्, करो अब ब्रह्मानंदम् -2
हो आज मेरी-2

आज आनंद भयो, निहारी रसिया -3
दिव्य हुए हैं नैन दर्शन से पावन परब्रह्म
हो दिव्य हुए हैं नैन...
दिव्य हुए हैं नैन दर्शन से पावन परब्रह्म
आयो रे द्वार...
बोलो जय सहजानंदम्...-2
हो आज मेरी-2

साज सजायो मैंने, बैठो परमातम -3
चरण कमल की पूजा, स्पर्शन से आनंद भगवन्
हो चरण कमल की पूजा...
चरण कमल की पूजा, स्पर्शन से आनंद भगवन्
आयो रे द्वार...

बोलो जय सहजानंदम्...-2
हो आज मेरी-2
हो...   हो...
लगन लगी है, छेड़ो राग छबीला-3
सुनके बानी तोरी, वचनों से जागत आतम
हो सुन के बानी तोरी
सुन के बानी तोरी, वचनों से जागत आतम
आयो रे द्वार...
बोलो जय सहजानंदम्...-2
हो आज मेरी-2

प्यास मिटा दी मोरी, आतम के मितवा-3
ले के मुरारी तोरी, प्रसादी से हुए पावन
हो ले के मुरारी तोरी
ले के मुरारी तोरी, प्रसादी से हुए पावन
आयो रे द्वार...
बोलो जय सहजानंदम्...-2
हो आज मेरी आतम... बोलो जय...-6

✸✸✸

भजन - 11

(राग–हो मस्तीभरी शाम है...)

हो योगीजी की कृपा से, सोणे काकाजी का साथ है
लुभावनी मूर्ति.. काकाजी की क्या बात है...
अब तेरी हाँ में हाँ रे, हाँ रे, हाँ रे,
तेरी ना में ना रे, ना रे, ना रे
होSS.. काकाजी नाल-2 रहोगे, तो ऐश करोगे...
जीतेजी मूर्ति का आनंद कॅश करोगे
प्रसंग कैसा भी हो, फिर भी फ्रैश रहोगे
तेरी हाँ में हाँ रे, हाँ रे
तेरी ना में ना रे, ना रे, ना

हे रहे मन के साथ जो, सड़ता रहता है वो,
रहे मन के साथ जो उबलता रहता है वो,

रहे मन के साथ जो डूबा रहता है वो
अधजली लकड़ी के जैसे, सुलगता रहता है वो
हम से ऐसा ना हो रे, ना हो रे, ना रे
हमें अपना झमूरा बना रे, बना रे, बना
काकाजी नाल... ओहो...
काकाजी नाल रहोगे तो ऐश करोगे
जीतेजी मूर्ति का आनंद कॅश करोगे
प्रसंग कैसा भी हो, फिर भी फ्रेश रहोगे
तेरी हाँ में हाँ रे, हाँ रे
तेरी ना में ना रे, ना रे, ना

हे काकाजी से जिसने भी, माँगा दिल से या चतुराई से
हे लुटा दिया भोले बन के, दिल की सच्चाई से
हे यहां नहीं ना रे, ना रे, ना रे
तू बुद्धू ना बना रे ना बना रे ना बना
काकाजी नाल... ओहो...
काकाजी नाल रहोगे तो ऐश करोगे...
जीतेजी मूर्ति का आनंद कॅश करोगे
प्रसंग कैसा भी हो फिर...
तेरी हाँ में हाँ रे, हाँ रे, हाँ रे
तेरी ना में ना रे, ना रे, ना

हे मन-बुद्धि को छोड़ के, तू जो कहे करना है
तेरे लिए जीना और तेरे लिए मरना है
अब तेरी हाँ में हाँ रे, हाँ रे, हाँ रे
तेरी ना में ना रे, ना रे, ना
काकाजी नाल... ओहो...
काकाजी नाल रहोगे तो ऐश करोगे...
जीतेजी मूर्ति का आनंद कॅश करोगे
प्रसंग कैसा भी हो फिर...
तेरी हाँ में हाँ रे, हाँ रे, हाँ रे
तेरी ना में ना रे, ना रे, ना

✸✸✸

प.पू. दीदी के भजन

भजन - 1

(राग – तेरे दिल का मेरे दिल से रिश्ता पुराना है...)

उद्यम तेरा जीव में मेरे, प्रभु प्रगटाना है,
काकाजी और गुरुजी की महिमा बसाना है,
महिमा बसाना है... पहचान कराना है।
प्रभु को मैं राजी कर सकूं, सूझ मुझे दे दो,
आँखे तेरी नाच उठें मेरा, वर्तन ऐसा हो
वर्तन ऐसा हो... वर्तन ऐसा हो...
प्रभु को मैं राजी कर सकूं, सूझ मुझे दे दो।

वृत्ति से, दृष्टि से, चैतन्य का मेरे, पोषण करते हो हरदम,
मन और बाहर के, आतंक से मेरी, रक्षा करते हो तुम,
ओ...
अब मुर्गी के बच्चों सा, मेरा समर्पण हो..
प्रभु को मैं राजी कर सकूं, सूझ मुझे दे दो।

संबंध दृढ़ करें, अंतरायरहित का, पाएं तुझसे तेरे हम गुण,
किसी के लिए कभी, गांठ नहीं बांधे हम, दिव्य तेरे हैं सभी, जैसे तुम,
ओ...
नैनों में तुम, बस जाओ, जहाँ देखूं तुम्हीं तुम हो...
प्रभु को मैं राजी कर सकूं, सूझ मुझे दे दो,
आँखे तेरी नाच उठें मेरा, वर्तन ऐसा हो... ओ...

***

भजन - 2

(राग – जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा...)

उत्तर की बहनों के लिए, काकाजी ने चुन लिया
काकाजी, गुरुजी के संग, अनुग्रह करके तूने, संबंध करा दिया...
उत्तर की बहनों के लिए, काकाजी ने चुन लिया...

प्रभु के जो हैं वो मेरे, ये तेरी इबादत,
मुक्तों के लिए मिटना, यही तेरी फितरत,

आ... आ...
परवरिश और सेवा, करने में उनकी तूने, तन मन भुला दिया,
उत्तर की बहनों के लिए, काकाजी ने चुन लिया...

दीदी तूने सदा श्रेय जीव का किया,
साक्षी भेद करके, प्रगट प्रभु की मूर्ति को, भीतर बिठा दिया,
दीदी तूने हमको अपनापन है दिया,
ममताभरे आँचल से, तूने हमारी सारी कमियों को दूर किया,
दीदी तूने हमको अपनापन है दिया...

व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ कोई, हो न हम पे हावी,
सोने की डोर सी हो, निष्ठा हमारी
आ... आ....
सार्थक है जीवन उतना, भक्तों की सेवा में जितना, हमने बिताया,
दीदी तूने हमको अपनापन है दिया...

सभी स्वरूपों से है, अरज ये हमारी,
निरामय रहे सदा, ये देह तुम्हारी,
आ... आ...
गुरुमुखी होकर रहें, इस हेतु तूने इतना, परिश्रम उठा लिया,
उत्तर की बहनों के लिए, काकाजी ने चुन लिया...
काकाजी ने चुन लिया...

✷✷✷

भजन - 3

(राग – तेरे नाम हमने किया है...)

काकाजी के नाम, ला... ला... गुरुजी के नाम,
अर्पण किया है, तूने अपना सारा जीवन... हो...
तूने अपना सारा जीवन।।
काकाजी, और गुरुजी का, देता एहसास तेरा वर्तन - हो...
देता एहसास तेरा वर्तन...
उनका वचन, मुक्तों की सेवा, दीदी तेरा, यही है जीवन - हो...
दीदी तेरा, यही है जीवन...
ला... ला... ला...
बहन, सखी, बेटी तो कभी माँ बनती है,

भक्तों की परवरिश तू हरदम करती है,
संत को राजी करने का गुर सिखाती है,
प्रगट को पहचानें, वो सूझ तू देती है,
तेरी संगत, तेSSरी संगत,
तेरी संगत, जोड़े प्रभु से, छुड़वाए तू मन का कुसंग - हो...
छुड़वाए तू मन का कुसंग...

सर्वोपरि सत्ता प्रभु की हम स्वीकारें,
मुक्तों में रसबस होकर ‘स्व’ को भुलाएं,
तेरी तरह हम कुटुंबभाव से जी पाएं,
प्रभुवासित, प्रेरित जीवन अब हो जाए,
मूर्ति बिना, मूर्ति बिना...
मूर्ति बिना, हम ना उठाएं, जीवन में कोई भी कदम - हो...
जीवन में कोई भी कदम...
काकाजी, और गुरुजी का, देता एहसास तेरा वर्तन - हो...
देता एहसास तेरा वर्तन...
उनका वचन, मुक्तों की सेवा, दीदी तेरा, यही है जीवन - हो...
दीदी तेरा, यही है जीवन...
काकाजी के नाम, गुरुजी के नाम...

✷✷✷

भजन - 4

(राग – कहुँ केम मुझने गमो छो तमे...)

काकाजी की अनुपम रचना हो तुम -2
परिचय हो उनका, उनका परिचय,
परिचय हो उनका, उनकी सौरभ हो तुम।
काकाजी की अनुपम रचना...-2

शमा की तरह जल कर उजाला किया-3
सहनशीलता की मूरत हो तुम-2
काकाजी की अनुपम रचना हो तुम...

दिल्ली में बहनों के कार्य के लिए-3
खेली जंग नींव में समाई हो तुम-2
काकाजी की अनुपम रचना हो तुम...

गुरुजी की मर्जी और मूर्ति की ही तान-3
पारस के संग बनी पारस तुम-2
काकाजी की अनुपम रचना हो तुम...

प्यारी दीदी जियो, शत्-शत् शरद-3
करें प्रार्थना, कर लो स्वीकार तुम-4

(राग–महफिलनी ज्यारे साची...)

मनमुखी तन्त्र छोड़ के, गुरुराज्य में चलें-2
लयलीन तुझ में हो जाएं, स्व-भाव तब टले
मनमुखी तन्त्र छोड़ के, गुरुराज्य में चलें...

देहभाव को गिने नहीं, तेरी तरह ही हम-2
रहें जागरुक अब हमें, मन बुद्धि न छले
मनमुखी तन्त्र छोड़ के, गुरुराज्य में चलें...

करती हो गरजु बन के तुम, चेतना का जतन-2
तेरी दिव्य योजनाओं में, निमित्त हम बनें
मनमुखी तन्त्र छोड़ के, गुरुराज्य में चलें...-3

***

भजन - 5

(राग – ये तो सच है कि भगवान है...)

काकाजी की तो तू है पसंद, दिल में भक्त और भगवान हैं,
राजी गुरुजी को करना वही, तेरे जीवन का पैग़ाम है, }-2
काकाजी की तो तू है पसंद...

तेरे सम्पर्क में, दीदी जो भी आया, माँ की ममता मिली, दिव्य संबंध पाया,
ओ... ओ...
मन-बुद्धि के दायरों से हटकर तूने, चैतन्यभाव में रह के, गुरुजी को देखा;
भक्तों की सेवा करके पाया, गुरुजी के दिल में स्थान है।
राजी गुरुजी को करना वही, तेरे जीवन का पैग़ाम है।
काकाजी की तो तू है पसंद...

मश्वरा करके ही, पांच मुक्तों से तुम,
सुहृद्भाव बढ़ाने, करती काम तुम,
सहज-सी बात में, ढूँढ लेती सदा,

जीव के मंगल की, गुरुजी की अदा।
तेरे वर्तन, तेरी वाणी से, बहती गुणातीत प्रीति है।
राजी गुरुजी को करना वही,
तेरे जीवन की ये रीति है।
काकाजी की तो तू है पसंद...

काकाजी, गुरुजी और तेरे कहलाए,
अपने मन-बुद्धि को पर ना छोड़ पाए,
ओ... ओ...
दिव्य तू और तेरे, सत्य स्वीकार लें,
स्वभाव और मान्यता अपनी भुलाएं,
सच में तेरे ही बन के जीएं, दिल में अब ये ही अरमान है।
तेरा बल ले के हम चल पड़ें, फिर ये मुश्किल भी आसान है।
गुरुजी का हम परिचय बनें, दिल में भक्त और भगवान हो,
राजी गुरुजी को करना वही, मेरे जीवन का निशान हो।-3

✸✸✸

भजन - 6

(राग – और दिल में क्या रखा है...)

जैसा तुमने जीवन जिया है,
काका का परिश्रम सफल कर दिया है;
खुद को मिटा कर दीदी तुमने,
काकाजी का नाम अमर कर दिया है। } -2

गुरुजी की हाँ से हाँ, गुरुजी की ना से ना,
जो भी कहा उन्होंने, खुशी से अपनाया,
क्रियाएं गुरुजी की, लगे दिव्य सबको,
महिमा समझ करके, सभी को समझाया,
अखंड आनंद में रहने वाली आनंदी माँ, प्यारी आनंदी माँ..
गुरुजी की लाड़ली तूने-2, गुरुजी का संकल्प पूरा किया है
जैसा तुमने जीवन जीया है...

शूरवीर पात्र हो तुम, सेवकभाव रखती हो,
सूचन किसी का भी, स्वीकार करती हो,

भक्तों के दुःख में हँस के साथ देती हो,
निःस्वार्थ सेवा तुम भक्तों की करती हो,
खुद को भुला कर भक्तों में रसबस आनंदी माँ,
अनुपम आनंदी माँ...
प्रागट्यदिन पर आशिष दो दीदी-2
जिएं हम भी ऐसा जैसा तुमने जिया है-3

✸✸✸

भजन - 7

(राग — मेहंदी है रचने वाली...)

तेरे तेजस्वी मुख पर, झलके मूर्ति की आभा
संबंध में, आए जो, उसे प्रगट प्रभु से जोड़ती हैं } -2
उन सब के, जीवन में, प्रभु की सौरभ भर देती हैं,
आनंदी दीदी...
संबंध का बल है तुझ में
महिमा प्रगटे वर्तन में,
हित करने भक्तों का तू , देहभाव विसराए, चंदन सी घिस जाए,
तेरे तेजस्वी मुख पर, झलके मूर्ति की आभा
संबंध में, आए जो, उसे प्रगट प्रभु से जोड़ती हैं
उन सब के, जीवन में, प्रभु की सौरभ भर देती हैं...

'स्व' का कोई भाव न आए, प्रभु प्रेरित ही हो पाए,
ये स्थिति पाकर भी, तुम करती रहती हर पल चॅकिंग;
भक्तों की क्रियाओं में, प्रेरक प्रभु को ही मानें,
यूं हम को सिखाती हो, जी के तुम, नो माईन्ड लेन्डिंग;
निरंतर अंतर्दृष्टि, प्रभु का आधार ही रखती,
मुक्तों के आगे, खुद को तुम, ज़ीरो ही गिनती।
तेरे तेजस्वी मुख पर, झलके मूर्ति की आभा
संबंध में, आए जो, उसे प्रगट प्रभु से जोड़ती हैं
उन सब के, जीवन में, प्रभु की सौरभ भर देती हैं...

काकाजी और गुरुजी, का परिचय बन कर जीती,
तू सबको कराती, स्वरूप की, महिमा का दर्शन;

डूबा हुआ जो कोई आए, उसे आनंद में ले आए,
तू प्रेम और ज्ञान से, उसके चैतन्य का, करती जतन;
रहती हम संग हम जैसी, पर हो तुम हम से न्यारी,
ये स्वरूप तेरा, पहचानें अब, तत्त्व से हम।
तेरे तेजस्वी मुख पर, झलके मूर्ति की आभा
संबंध में, आए जो, उसे प्रगट प्रभु से जोड़ती हैं
उन सब के, जीवन में, प्रभु की सौरभ भर देती हैं...

✸✸✸

भजन - 8

(राग – मार उड़ाडी...)

दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी -2
हो माँ से भी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी।
ओयSS ममता की तू मूर्ति
हो... ममता की तू मूर्ति
तेरी हर क्रिया परोपकारी।
दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी
हाँ... माँ से भी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी।

काकाजी को राजी करना, गुरुजी की मर्जी में मिटना -2
ये ही तेरी जिंदगानी
दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी
माँ से भी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी

गुण ग्राहक तेरी है दृष्टि
गुण ग्राहक तेरी है दृष्टि, भक्तों की करती तू भक्ति
वर्तन से जीना सिखाती
दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी
माँ से भी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी

हो... गुरुजी का अल्प वचन झेले, तेरे प्रसंग से स्व पिघले,
सर्वस्व याहोम करके, बहनों का सिंचन करने,
नींव में तुम तो समाई
दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी
माँ से भी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी

हो... काकाजी, गुरुजी से प्रीति, कारियाणी ग्यारह जैसी,
तुमसे हम ऐसे ही जुड़ जाएं, कसर हमारी टल जाए -2
सिद्ध हो मूर्ति प्रभु की
दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी
माँ से भी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी
हो... ममता की तू मूर्ति
हो... ममता की तू मूर्ति
तेरी हर क्रिया परोपकारी।
दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी
होय–होय ... माँ से भी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी।

✷✷✷

भजन - 9

(राग – दुल्हे का सेहरा सुहाना लगता है...)

दिया काकाजी ने ये मानव का चोला
मिला संत का योग भी साथ ही है
जगत से परे होकर, प्रभु प्रगटाने
हमारेSS जीवनSS में दीदी आ गई हैं।
आ... आ... आ...

गुरुजी की शान की जिसको तान है-2
अभिप्राय उनका ही जिसका निशान है;
गुरुजी की शान की जिसको तान है
अभिप्राय उनका ही जिसका निशान है;
प्रेम, भक्ति, गुणातीत ज्ञान की त्रिवेणी-2
दीदी तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है
गुरुजी की शान की जिसको तान है
अभिप्राय उनका ही जिसका निशान है

माँ की ममता को भुला दे तेरा अपनापन }-2
देह को गिने बिना करती सबका तू जतन }
काकाजी ही प्रेरक-कर्ता निष्ठा तेरी अटल
तुमको राजी करने ही बीते हर क्षण, हर पल
हर क्षण, हर पल, हर क्षण, हर पल-2

हर क्षण, मेरा हर पल, हर पल, मेरा हर क्षण-2
हर क्षण, हर पल, हर क्षण, हर पल
हर क्षण, मेरा हर पल, हर पल, मेरा हर क्षण
मेरा हर पल, मेरा हर क्षण
दर्शन तेरा प्रभु दर्पण के समान है-2
दीदी तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है
प्रेम, भक्ति, गुणातीत ज्ञान की त्रिवेणी-2
दीदी तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है
गुरुजी की शान की जिसको तान है
अभिप्राय उनका ही जिसका निशान है
गुरुजी का दे रहा परिचय तेरा वर्तन }-2
हाश देती काकाजी को तेरी ये लगन }
पक्ष भक्तों का रखे, माया से खेले जंग
जो संबंध में आए, भर दे उसमें प्रभु का रंग
संबंध...
संबंध से तेरे हो जाते निहाल हैं }-2
दीदी तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है }
प्रेम, भक्ति, गुणातीत ज्ञान की त्रिवेणी
दीदी तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है
गुरुजी की शान की जिसको तान है
अभिप्राय उनका ही जिसका निशान है
गुरुजी की शान की जिसको तान है }-4
दीदी तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है... }

***

भजन - 10

(राग – दीदी तेरा देवर दीवाना...)

दीदी तुमने छोड़ा ज़माना, एक लगन कि प्रभु को है पाना
गुरु के बल से चलते ही जाना, प्रभु को रोम-रोम में बसाना
है शूरवीरताभरी तेरी कुर्बानी, प्रीति एक संत से यही बात मानी
मर्जी में संत की, रह कर क्रिया करती,
मन-बुद्धि ठुकरा कर जीवन तू है जीती,

संत को ही प्रगट प्रभु माना, पा लिया आनंद का खजाना - 2
ओय होय-होय..., दीदी तुमने छोड़ा ज़माना...

ममतामयी माँ जैसा तू स्नेह बरसाए,
तो कभी नटखट बच्चे-सा मुँह तू बनाए,
चैतन्यों की प्रगति के लिए करती जतन,
निर्मल हास्य तेरा, निखालस है वर्तन,
महिमा प्रगट प्रभु की गाकर, उनसे संबंध दृढ़ कराना-2
ओय होय-होय..., दीदी तुमने छोड़ा ज़माना...

कठिन स्थितियों में भी प्रफुल्लित रहती तुम,
हरिभक्तों को सिर का मुकुट मानती तुम,
दिल्ली में बहनों के लिए जंग तूने खेली
प्रभु भजने का मार्ग उनके लिए तूने खोला
तेरी मर्जी में ही मिट जाना, तुमसे ही बहनों को प्रभु पाना
दीदी तुमने छोड़ा ज़माना... गुरु के बल से...

***

भजन - 11

(राग – आवाज दो हमको...)

दीदी से जिसका भी संबंध हुआ, अमृतमय फिर उसका जीवन हुआ,
गुरुजी के, स्वरूप का, सहज ही दर्शन हुआ
दीदी से जिसका भी संबंध हुआ, अमृतमय फिर उसका जीवन हुआ,
गुरुजी के, स्वरूप का, सहज ही दर्शन हुआ
दीदी से जिसका भी संबंध हुआ...

प्रभु को चुना तुमने, अपना सब छोड़ा,
तेरे पास जो आया, स्वरूप से जोड़ा,
काकाजी की, इस बुलबुल से, ये चमन रोशन हुआ
दीदी से जिसका भी संबंध हुआ...

करके अनुग्रह तूने, हमें अपना लिया,
संबंध ने तेरे, हमें निश्चिंत किया,
ममताभरे, तेरे स्पर्श से, ये जगत खारा हुआ
दीदी से जिसका भी संबंध हुआ...

स्वरूपनिष्ठा, तेरे बल से दृढ़ करें,
मूर्ति प्रभु की सबसे, पहले सिद्ध करें,
भूलें नहीं हम कभी, तूने जो परिश्रम किया
दीदी से जिसका भी संबंध हुआ, अमृतमय फिर उसका जीवन हुआ,
गुरुजी के, स्वरूप का, सहज ही दर्शन हुआ
दीदी से जिसका भी संबंध हुआ...

***

भजन - 12

(राग – ले के पहला-पहला प्यार...)

हो...निःस्वार्थ तेरा प्यार, करती रहती परोपकार
'स्वीट, सरल, टची' है, तेरा ये दीदार
हो... निःस्वार्थ तेरा प्यार...

वर्तन से अपने तू काकाजी प्रगटाए,
अपनापन सब के दिल को तेरा छू जाए;
हो...शूरवीरता अपार, पर भक्तों से जाती हार,
'स्वीट, सरल, टची' है, तेरा ये दीदार
हो...निःस्वार्थ तेरा प्यार...

हर वचन गुरुजी का दिल से स्वीकारे,
राजी गुरुजी को करने, सब कुछ वारे;
हो...सहती कसनी अपार, ले के प्रभु का आधार,
'स्वीट, सरल, टची' है, तेरा ये दीदार
हो...निःस्वार्थ तेरा प्यार...

घुलमिल बातें कई भक्तों से करती,
नज़र मगर तेरी गुरुजी ओर रहती;
हो... प्रसंग पर लेती संभाल, बन जाती भक्तों की ढाल,
'स्वीट, सरल, टची' है, तेरा ये दीदार
हो... निःस्वार्थ तेरा प्यार, करती रहती परोपकार
'स्वीट, सरल, टची' है, तेरा ये दीदार
हो... निःस्वार्थ तेरा प्यार...

***

भजन - 13

(राग – तुझे भूलना तो चाहा...)

माँ की तरह हमें तू, रखे सीने से लगाए-2
रहे तेरे साथ पर तेरे, दिल को ना जान पाएSS...
माँ की तरह हमें तू, रखे सीने से लगाए-2
रहे तेरे साथ पर तेरे, दिल को ना जान पाएSS...

वाणी शहद से मीठी, बहे महिमा की ही धारा-2
गुरुजी का अल्प संबंधी, जान से भी ज्यादा प्यारा
साथियों की गल्तियां भी तू-2, हँस कर गले लगाएSS
माँ की तरह...

गुरुजी की मर्जी के सिवा, और कुछ ना प्रिय जाना-2
जीवन के हर प्रसंग को, प्रभु का प्रसाद माना
काकाजी का ही आधार ले-2, मूर्ति में मन रमाएSS
माँ की तरह...

निर्दोषबुद्धि दृढ़ करें, दिव्य तू और तेरे जन-2
तेरी मर्जी में ही मिट कर, करें तेरा सच्चा पूजन
काकाजी का है संबंध मिला-2, परिचय हम बन पाएंSS
माँ की तरह हमें तू, रखे सीने से लगाए-2
रहे तेरे साथ पर तेरे दिल को ना जान पाए...
माँ की तरह...

***

भजन - 14

(राग – सूरज कब दूर गगन से...)

सरल स्वभाव है जिनका, जीवन भी सहज है जिनका }-2
गुरुजी के हृदय में सबसे, पहला स्थान है जिनका
वो दीदी तो प्रेम की मूरत है, दिव्य माँ हमारी है

काकाजी के भरोसे पर, घर छोड़ छलांग लगाई-2
प्रभु भजने उत्तर भारत में, बहनों की राह बनाई
रहने को नहीं था ठिकाना, भक्तों के घर में रही तुम
एक गुलाब बने मेरा उपवन, आशीर्वाद की पात्र बनी तुम
हे दीदी तुम तो प्रेम की मूरत हो }-2
दिव्य माँ हमारी हो...-2

आनंदी नाम इन्होंने सार्थक किया है -2
खुद आनंद में रहती हैं, सबको आनंद दिया है,
संबंध में जो भी आए, निरपेक्ष प्रेम ले जाए,
एक बार मिले जो तुमसे, वो दिल से भुला ना पाए
ये दीदी तो प्रेम की मूरत है
दिव्य माँ हमारी है... }-2

गुरुजी ने हम सबको जगमग दीपक ये दिया है-2
खुद जल कर भी जिसने, प्रकाश सबको दिया है
तेरा संबंध पारस जैसा, भर दे महिमा से ऐसा
वृत्ति स्वभाव पिघला दे, निर्दोष हास्य है ऐसा
ये दीदी तो प्रेम की मूरत है
दिव्य माँ हमारी है... }-2

नो माईन्ड लेडिंग सूत्र जो, काकाजी ने दिया है-2
इसी सूत्र को लेकर, जीवन तुम जीती हो
साधन बन कर गुरुजी का, निर्दोषबुद्धि रख ऐसी
आज्ञा में तुम रहती हो, कबीर की मुन्नी जैसी
ये दीदी तो प्रेम की मूरत है
दिव्य माँ हमारी है... }-2

पल-पल आगे रख कर तुमको, हम जीवन अपना बिताएँ-2
उसी राह पर हम चलें, जैसा आप सुझाएं
महिमा मुक्तों की समझ कर, सेवा उनकी कर लें हम
बस मस्ती मूर्ति की हो, सिद्ध तेरे बल से कर लें हम
आप साक्षात् प्रेम की मूरत हो...
दिव्य माँ हमारी हो... }-2

***

भजन - 15

(राग – तुझे देखा तो ये जाना सनम...)

सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति, जन्मोंजन्म की पूर्णाहुति
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति...
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति, जन्मोंजन्म की पूर्णाहुति -2

ऐसी प्रीति हम तुमसे करें, कि हमारी हो पूर्णाहुति
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति...

सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति, जन्मोंजन्म की पूर्णाहुति
ऐसी प्रीति हम तुमसे करें, कि हमारी हो पूर्णाहुति
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति...

ल... ल... ल... ल... ला ल ला...
गल्तियां हम से हो जाती हैं, एक बार नहीं बार-बार
कैसे दयालु हमको मिले, मौका दे यू टर्न का
तेरी ये ही अदा दिल को छू जाती है, आगे बढ़ने का देती है बल...
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति, जन्मोंजन्म की पूर्णाहुति
ऐसी प्रीति हम तुमसे करें, कि हमारी हो पूर्णाहुति
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति

आ... आ...
मन को हमारे छेड़ो जो तुम, तुमको दिव्य मान लें
हाँ, मनबुद्धि तो सहज में, आड़े यूं आएंगे ही
मन के राज्य को छोड़ गुरुराज्य में, एन्टर अब हो ही जाएं हम...
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति, जन्मोंजन्म की पूर्णाहुति
ऐसी प्रीति हम तुमसे करें, कि हमारी हो पूर्णाहुति
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति

ल... ल... ल... ल... ला ल ला...
अपयश भी जो तुमको मिले, तो भी राजी रहती हो
सिखाने हमें खुद वर्त कर, जीवन तुम जीती हो
प्रीति तुमने गुरुजी से ऐसी करी, बिना मोल मिटती रही
सत्पुरुष से जो दृढ़ प्रीति, जन्मोंजन्म की पूर्णाहुति -2
ऐसी प्रीति हम तुमसे करें, कि हमारी हो पूर्णाहुति
आ... आ...
कि हमारी हो पूर्णाहुति... आ... आ...

✸✸✸

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली - 110 052 (भारत)
दूरभाष : 2730 1327, 4709 1281 फॅक्स : 4709 1280 ई मेईल : taaddev@ydsd.org